राष्ट्रीय दैनिक

# प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran



11 आईपीएल 2024 में भागनही ले पाएंगे गौतम गंभीर.....

भारत की अनाहत सिंह को एशियाई जूनियर स्क्वाश में स्वर्ण पदक..... 11



वर्ष : 14 | अंक : 101 | नई दिल्ली, सोमवार, 21 अगस्त, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com


# दरभंगा एम्स निर्माण को लेकर तेजस्वी ने फिर लिखी केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री को चिट्ठी

- राज्य सरकार द्वारा प्रस्तावित जमीन पर सकारात्मक निर्णय ले केन्द्र : तेजस्वी

प्रात : किरण

पटना। दरभंगा में एम्स निर्माण को लेकर केंद्र और बिहार सरकार के बीच चल रहे खींचतान के बीच रविवार को उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया को पत्र लिखा है। पत्र में तेजस्वी ने साफ किया है कि राज्य सरकार ने दरभंगा में जहां जगह चिन्हित की है । वहीं, एम्स का निर्माण कराए। साथ ही डीएमसीएच में अब जगह शेष नहीं रहने की बातें भी की गई हैं। तेजस्वी ने पत्र में लिखा है कि अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान दरभंगा हेतु राज्य सरकार द्वारा दरभंगा जिले के बहादुरपुर अंचल अंतर्गत एकमी शोभन-बाईपास पर अवस्थित भूमि संबंधी द्वितीय वैकल्पिक प्रस्ताव पर पुनर्विचार का अनुरोध किया गया था। उन्होंने कहा कि एम्स के लिए उपर्युक्त चिन्हित स्थल इस्ट-वेस्ट कोरिडोर से मात्र 3 किमी पर एवं आमस-दरभंगा चार लेन सड़क से महज 5 किमी की दूरी पर और दरभंगा एयरपोर्ट से मात्र 10 किमी की दूरी पर अवस्थित है, जिससे मरीजों को यहां पहुंचने में काफी कम समय लगेगा। साथ ही एम्स की स्थापना शहर के बाहर होने की स्थिति में दरभंगा शहर

के विस्तारीकरण के साथ नये इलाके के विकास का भी रास्ता सुगम होगा। वहीं, उत्तर बिहार, मिथिलांचल और नेपाल के लोगों को उच्चस्तरीय इलाज की सुविधा प्राप्त हो सकेगी। दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल और एम्स दोनों संस्थान के अलग-अलग बनने की स्थिति में दोनों अस्पताल विशेषज्ञ अस्पताल के रूप में विकसित हो सकेंगे। तेजस्वी ने कहा है कि दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल में अब भूमि भी उपलब्ध नहीं है, क्योंकि राज्य सरकार द्वारा दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल को 2500 शय्या के अस्पताल के रूप में पुनर्विकसित करने हेतु 3115 करोड़ रुपये की योजना स्वीकृत की जा चुकी है एवं निविदा की कार्रवाई प्रक्रियाधीन है। विदित हो कि राज्य सरकार द्वारा एम्स निर्माण हेतु प्रस्तावित भूमि कुल रकबा 151.17 एकड़ में से 113.86 एकड़ भूमि एम्स, दरभंगा को निःशुल्क हस्तान्तरित की जा चुकी है और चिन्हित भूखण्ड पर मिट्टी भराई के लिए राज्य योजना से 309 करोड़ रुपये की योजना भी स्वीकृत की जा चुकी है। उन्होंने केंद्रीय मंत्री से अनुरोध किया कि उत्तर बिहार की जनता के व्यापक हित, राज्य में चिकित्सा सुविधा के सुदृढ़ीकरण हेतु अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान दरभंगा की स्थापना राज्य सरकार द्वारा प्रस्तावित उपर्युक्त भूखण्ड के प्रस्ताव को स्वीकृत करने पर शीघ्र ही सकारात्मक निर्णय लेने की कृपा की जाए।

**मौसम**

अधिकतम तापमान 35.6°C

न्यूनतम तापमान 26.9°C

राजधानी दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों में आज भी बारिश के आसार

| | |
|---|---|
| हां | 30% |
| नहीं | 50% |
| कह नहीं सकते | 10% |

**बाजार**

| | |
|---|---|
| सोना | 61,080 |
| चांदी | 75,100 |
| संसेक्स | 65,953 |
| निफ्टी | 19,597 |

**संक्षिप्त खबरें**

### धनखड़, मोदी ने लद्दाख हादसे पर दुख जताया

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लद्दाख में सड़क दुर्घटना में सेना के नौ जवानों की मौत की घटना पर गहन दुख जताया है। श्री धनखड़ ने अपने शोक संदेश में कहा, लद्दाख में सड़क दुर्घटना में हमारे बहादुर सेना के जवानों की जान जाने से बहुत दुख हुआ। मैं घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं। शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदनाएँ। जो लोग घायल हैं वे जल्द से जल्द ठीक होने की कामना। हादसा शनिवार को लद्दाख में लेह जिले के क्यारी शहर से सात किलोमीटर दूर उस समय हुआ, जब सेना के तीन वाहनों का एक छोटा काफिला इलाके में जा रहा था और इसी दौरान एक वाहन गहरी खाई में गिर गया। हादसे में नौ सैनिकों की मौत हो गयी। दुर्घटना के तुरंत बाद राहत एवं बचाव अभियान शुरू किया गया। मृत जवानों की तात्कालिक रूप से पहचान नहीं हो सकी है।

### प्रधानमंत्री ने राजीव गांधी को जयंती पर दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को पूर्व प्रधानमंत्री और भारत रत्न राजीव गांधी को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि दी। प्रधानमंत्री ने एक्स (पूर्व ट्विटर) पर लिखा, पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी की जन्म-जयंती पर मैं उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। इसके अलावा संसद भवन के सेंट्रल हॉल में भी दिवंगत नेता राजीव गांधी को श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और अन्य नेता मौजूद रहे।

# चुनावी मोड : कांग्रेस कार्यसमिति का ऐलान

## वर्किंग कमिटी में खडगे, सोनिया, राहुल व अधीर रंजन शामिल, शशि थरूर को भी मिली जगह

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने पार्टी की बहुप्रतीक्षित सर्वोच्च नीति निर्धारक संस्था कांग्रेस कार्य समिति का गठन कर दिया है। कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने रविवार को बताया कि समिति में 39 सदस्यों के साथ ही 18 स्थायी आमंत्रित सदस्य, 14 प्रभारी, नौ विशेष आमंत्रित सदस्य तथा चार पार्टी की विभिन्न संगठनों की अध्यक्ष शामिल हैं जिन्हें पदेन सदस्य के रूप में कार्यसमिति में जगह दी गई है। उन्होंने बताया कि समिति में 39 प्रमुख सदस्य हैं जिनमें श्री खड़गे के अलावा पार्टी की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, एके एंटोनी, आधीर रंजन चौधरी शामिल हैं। बिहार से मीरा कुमार व तारिक अनवर को समिति में शामिल किया गया है।

**कांग्रेस वर्किंग कमिटी**

सीडब्ल्यूसी सदस्य- मल्लिकार्जुन खरगे, सोनिया गांधी, राहुल गांधी, अधीर रंजन चौधरी, एके एंटनी,

- बिहार से मीरा कुमार व तारिक अनवर को मिली जगह
- समिति में 39 सदस्यों के साथ ही 18 स्थायी आमंत्रित सदस्य होंगे
- पल्लम राजू, पवन खेड़ा, गणेश गोदियाल बने विशेष आमंत्रित सदस्य
- 14 प्रभारी, नौ विशेष आमंत्रित सदस्य की घोषणा

अंबिका सोनी, मीरा कुमार, दिग्विजय सिंह, पी चिदंबरम, तारिक अनवर, ललथनहावला, मुकुल वासनिक, आनंद शर्मा, अशोक चव्हाण, अजय माकन, चरणजीत सिंह चन्नी, प्रियंका गांधी वाद्रा, कुमारी सैलजा, गैखनगम, एन रघुवीर रेड्डी, शशि थरूर, ताम्रध्वज साहू, अभिषेक मनु सिंघवी, सलमान खुर्शीद, जयराम रमेश, जितेंद्र सिंह, रणदीप सुरजेवाला, सचिन पायलट, दीपक बाबरिया, जगदीश ठाकोर, गुलाम अहमद मीर, अविनाश पांडे, दीपा दासमुंशी, महेंद्रजीत सिंह मालवीय, गौरव गोगोई, सैयद नासिर हुसैन, कमलेश्वर पटेल और केसी वेणुगोपाल।

स्थायी आमंत्रित सदस्य- वीरप्पा मोइली, हरीश रावत, पवन कुमार बंसल, मोहन प्रकाश, रमेश चेन्निथला, बीके हरिप्रसाद, प्रतिभा सिंह, मनीष तिवारी, तारिक अहमद कर्रा, दीपेंद्र हुड्डा, गिरीश चोडानकर, टी सुब्बारामी रेड्डी, के. राजू, चंद्रकांत हंडोरे, मीनाक्षी नटराजन, फूलो देवी नेताम, दामोदर राजा नरसिम्हा, सुदीप रॉय बर्मन, ए चेल्लाकुमार, भक्त चरण दास, अजय कुमार, हरीश चौधरी, राजीव शुक्ला, मणिकम टैगोर, सुखजिंदर रंधावा, माणिकराव ठाकरे, रजनी पटेल, कन्हैया कुमार, गुरदीप सप्पल, सचिन राव, देवेंद्र यादव और मनीष चतरथ।

**विशेष आमंत्रित सदस्य-**

पल्लम राजू, पवन खेड़ा, गणेश गोदियाल, कोडिकुनिल सुरेश, यशोमती ठाकुर, सुप्रिया श्रीनेत, परिनीति शिंदे, अलका लांबा और वीसी रेड्डी।

**पदेन सदस्य-**

श्रीनिवास बी.वी (युवा कांग्रेस) नीरज कुंदन (एनएसयूआई) नेटा डिसूजा (महिला कांग्रेस) और लालजी देसाई (सेवा दल)।

# चंद्रयान-3 की सॉफ्ट लैंडिंग का 23 अगस्त को कई मंच पर होगा सीधा प्रसारण : इसरो

प्रात : किरण

बेंगलुरु/एजेंसी। अंतरिक्ष अन्वेषण में भारत के प्रयास को 23 अगस्त को तब उल्लेखनीय सफलता मिल जाएगी जब इसका चंद्रयान-3 मिशन चंद्रमा की सतह पर साफ्ट लैंडिंग करेगा और इसका कई मंचों पर सीधा प्रसारण किया जाएगा। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने रविवार को कहा कि यह उपलब्धि भारतीय विज्ञान, इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी और उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर होगी, जो अंतरिक्ष अन्वेषण में भारत की प्रगति का प्रतीक होगी। पूरा देश चंद्रयान-3 को सॉफ्ट लैंडिंग में सफल होते देखना चाहता है। इस महत्वपूर्ण घटनाक्रम का सीधा प्रसारण 23 अगस्त, 2023 को भारतीय समयानुसार शाम 17:27 बजे शुरू किया जाएगा। सॉफ्ट-लैंडिंग का सीधा प्रसारण इसरो की वेबसाइट, इसके

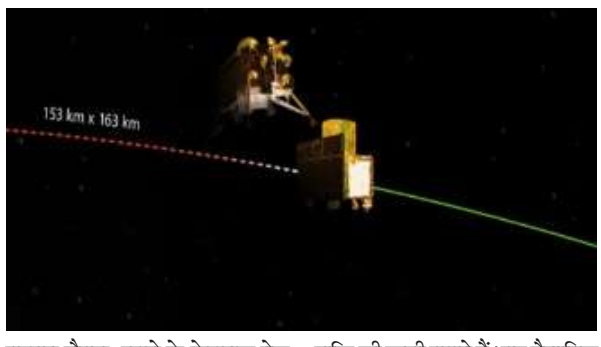


यूट्यूब चैनल, इसरो के फेसबुक पेज और डीडी नेशनल टीवी चैनल सहित कई मंचों पर उपलब्ध होगा। इसरो ने कहा, चंद्रयान-3 की सॉफ्ट लैंडिंग एक यादगार क्षण होगी जो न केवल जिज्ञासा को बढ़ाती है, बल्कि हमारे युवाओं के मन में अन्वेषण के लिए जुनून भी जगाती है। इसने कहा, यह गर्व और एकता की गहरी भावना पैदा करता है क्योंकि हम सामूहिक रूप से भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शक्ति की खुशी मनाते हैं। यह वैज्ञानिक जांच और नवाचार के माहौल को बढ़ावा देने में योगदान देगा। इसरो ने कहा कि इसके आलोक में, देशभर के सभी विद्यालय और शैक्षणिक संस्थानों को छात्रों और शिक्षकों के बीच इस कार्यक्रम को सक्रिय रूप से प्रचारित करने और अपने परिसरों में चंद्रयान-3 की ह्यसॉफ्ट लैंडिंगह्न का सीधा प्रसारण करने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

# खडगे, सोनिया व प्रियंका ने राजीव गांधी को दी श्रद्धांजलि

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे, पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी तथा प्रियंका गांधी वाड्रा ने पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की जयंती पर रविवार को उनके समाधि स्थल वीरभूमि जाकर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कांग्रेसी नेता एवं पूर्व प्रधानमंत्री के पुत्र राहुल गांधी इन दिनों लेह में हैं और उन्होंने वहां श्री गांधी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। श्री गांधी ने ट्वीट किया पापा, आपकी आंखों में भारत के लिए जो सपने थे, इन अनमोल यादों से छलकते हैं। आपके निशान मेरा रास्ता हैं - हर हिंदुस्तानी के संघर्षों और सपनों को समझ रहा हूं, भारत मां की आवाज सुन रहा हूं। श्रीमती वाड्रा ने कहा, किसी की मुस्कुराहटों

पे हो निसार, किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार। किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार, जीना इसी का नाम है जिन्दा है हमीं से नाम प्यार का कि मर के भी किसी को याद आएंगे किसी के आँसुओं में मुस्कुराएंगे, कहेगा फूल हर कली से बार बार जीना इसी का नाम है। ये लाइनें हमेशा आपकी याद दिलाती हैं और आज तक जब भी ये गाना सुनती हूँ, मेरी आँखों में आँसू उभर आते हैं। श्री खडगे ने कहा आज जब हम सद्भावना दिवस मना रहे हैं, तो उनके विशाल योगदान को याद करना प्रासंगिक है, जिसने भारत को 21वीं सदी में आगे बढ़ाया। उनके कई हस्तक्षेप जैसे कि मतदान की आयु 18 वर्ष तक कम करना, पंचायती राज को मजबूत करना, दूरसंचार और आईटी क्रांति, कंप्यूटरीकरण कार्यक्रम, निरंतर शांति समझौते, सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम और समावेशी शिक्षा पर जोर देने वाली एक नई शिक्षा नीति ने देश में परिवर्तनकारी बदलाव लाए। हम राजीव गांधी जी को उनकी जयंती पर हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

# जाली नोट मामला : मुख्य आरोपी को पांच साल कारावास की सजा

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। बिहार की एक विशेष एनआईए अदालत ने पूर्वी चंपारण जाली नोट मामले के एक मुख्य आरोपी को पांच साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई है। एक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी। पश्चिम बंगाल के मालदा जिले के मोहनपुर गांव निवासी रईसुद्दीन पर पांच हजार रुपये का जुमार्ना भी लगाया गया। राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) के एक प्रवक्ता ने कहा कि अदालत ने 18 अगस्त को 2015 के (पूर्वी चंपारण जाली मुद्रा) मामले में उसे दोषी करार दिया था और उसे शनिवार को सजा सुनाई गई। अधिकारी ने कहा कि उसे भारतीय दंड संहिता और गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत पांच साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई जबकि पांच हजार रुपये का जुमार्ना भी लगाया गया। रईसुद्दीन पूर्वी चंपारण जाली भारतीय नोट (एफआईसीएन) से संबंधित मामले में दोषी ठहराए जाने और सजा सुनाए जाने वाला पांचवां अपराधी है। राजस्व खुफिया निदेशालय पटना ने एक अन्य आरोपी अफरोज अंसारी के पास से 5.94 लाख रुपये के जाली नोट बरामद किये थे। इसके बाद निदेशालय ने 19 सितंबर 2015 को इस संबंध में मामला दर्ज किया था। अंसारी फर्जी नोट की खेप लेकर नेपाल

में डिलीवरी के लिए भारत-नेपाल सीमा के निकट रक्सौल (पूर्वी चंपारण) लेकर जा रहा था। राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) ने बाद में मामले को अपने हाथ में ले लिया और 23 दिसंबर, 2015 को इस मामले को दोबारा दर्ज किया। अधिकारी ने कहा, एनआईए की गहन जांच से पिछले आठ वर्षों में आठ आरोपियों की गिरफ्तारी हुई और आरोप पत्र दायर किया गया। उन्होंने बताया कि इनमें से चार आरोपियों झ्र अफरोज अंसारी, सनी कुमार उर्फ सनी शॉ उर्फ सुजीत कुमार उर्फ कबीर खान, अशरफुल आलम उर्फ इशराफुल आलम और आलमगीर शेख उर्फ राजू को विशेष एनआईए अदालत ने 11 अक्टूबर, 2018 को दोषी ठहराया था। अधिकारी ने बताया कि इन दोषियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई और प्रत्येक पर 30,000 रुपये का जुमार्ना भी लगाया गया। उन्होंने बताया कि शेष तीन आरोपियों के खिलाफ मुकदमे की कार्यवाही जारी है।

# डीआरडीओ का तापस यूएवी चित्रदुर्ग टेस्ट रेंज में दुर्घटनाग्रस्त, जांच के आदेश

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) का स्वदेशी तापस यूएवी रविवार को बेंगलुरु के चित्रदुर्ग टेस्ट रेंज में उड़ान परीक्षण के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। तेज आवाज के साथ यूएवी के दुर्घटनाग्रस्त होते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर जमा हो गए और स्थानीय पुलिस को इसकी सूचना दी। इस घटना की जांच के आदेश दे दिए गए हैं। तापस का पूरा नाम टेक्टिकल एयरबॉर्न प्लेटफॉर्म फॉर एरियल सर्विलांस बेयॉन्ड होराइजन (टीएपीएएस) है। यह एक मीडियम एल्टीट्यूट लॉन्ग-इंड्यूरेंस ड्रोन है, जो अमेरिका के एमक्यू-1 प्रीडेटर ड्रोन जैसा ही है। तापस अपने आप ही टेक ऑफ और लैंड करने की क्षमता रखने वाला ड्रोन है। इसे पहले रुस्तम-2 के नाम से पुकारा जाता था, जिसकी अधिकतम रफ्तार 224 किलोमीटर प्रति घंटा थी। 20.6 मीटर के विंग स्पैन वाला ड्रोन लगातार 1000 किलोमीटर तक उड़ान भर सकता है। यह 28 हजार फीट की ऊंचाई पर 18 घंटे से ज्यादा की उड़ान भर सकता है। डीआरडीओ के तापस मीडियम-एल्टीट्यूड लॉन्ग-एंड्योरेंस मानव रहित हवाई वाहन को एयरोनॉटिकल डेवलपमेंट एस्टेब्लिशमेंट (एडीए) ने विकसित किया है। एडीए डीआरडीओ का प्रमुख एयरोनॉटिकल सिस्टम डिजाइन हाउस है, जो भारतीय सशस्त्र बलों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अत्याधुनिक मानव रहित हवाई वाहनों और वैमानिकी पद्धतियों का विकास करता है। डीआरडीओ का तापस यूएवी आज सुबह उड़ान परीक्षण के दौरान चित्रदुर्ग परीक्षण रेंज में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। ग्रामीणों ने कृषि क्षेत्रों में तापस के दुर्घटनाग्रस्त होकर गिरने की सूचना पुलिस को दी। चित्रदुर्ग के एसपी के.परशुराम ने चल्लाकेरे के पास कुदापुरा में तापस 07ए-14 मानव रहित विमान के कृषि क्षेत्र में दुर्घटनाग्रस्त होने की पुष्टि की है। इसके बाद पुलिस और डीआरडीओ की टीम मौके पर पहुंची। पुलिस के मुताबिक इस घटना में कोई घायल नहीं हुआ है, क्योंकि जब यह यूएवी दुर्घटनाग्रस्त हुआ, उस समय मैदान पर कोई नहीं था। डीआरडीओ के अधिकारियों ने इस घटना की जांच के आदेश दे दिए हैं।

# ऑस्ट्रेलिया के फ्रेमेंटल में तैनात की गई भारतीय पनडुब्बी आईएनएस वागिर

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। हमेशा से चीन की आंखों की किरकिरी बने क्वाड देशों के मालाबार अभ्यास के बीच भारतीय पनडुब्बी आईएनएस वागिर को ऑस्ट्रेलिया के फ्रेमेंटल में तैनात किया गया है। ऑस्ट्रेलिया पहली बार क्वाड देशों की नौसेनाओं के मालाबार अभ्यास की मेजबानी कर रहा है। चीन ने क्वाड के मालाबार नौसैनिक अभ्यास की निगरानी के लिए सैकड़ों उपग्रह तैनात किए हैं। ऑस्ट्रेलिया पहुंची भारतीय पनडुब्बी रॉयल ऑस्ट्रेलियाई नौसेना (आरएएन) इकाइयों के साथ विभिन्न अभ्यासों में भाग लेगी। क्वाड्रीलेटरल सिक्योरिटी डायलॉग (क्यूयूएडी-क्वाड) में भारत-प्रशांत क्षेत्र की चार प्रमुख नौसेनाएं भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया भी शामिल हैं। इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में होने वाली मालाबार एक्सरसाइज एक साल जापान में होती है तो एक साल भारत में और एक साल प्रशांत महासागर में किसी अमेरिकी नौसैनिक बेस के करीब। चीन को परेशान करने वाला क्वाड देशों के बीच मालाबार नौसैन्य अभ्यास का पिछला संस्करण जापान की मेजबानी में हुआ था। 2020 में क्वाड देशों के क्लब में शामिल हुआ ऑस्ट्रेलिया पहली बार क्वाड देशों की नौसेनाओं के मालाबार अभ्यास की मेजबानी कर रहा है। इस हाई वोल्टेज समुद्री अभ्यास के बीच भारतीय नौसेना की पनडुब्बी आईएनएस वागिर को ऑस्ट्रेलिया के फ्रेमेंटल में तैनात किया गया है। इसकी विस्तारित रेंज पर तैनाती जून 2023 में हुई और 20 अगस्त को ऑस्ट्रेलिया के फ्रेमेंटल पहुंच गई है।

**रिपोर्ट कार्ड** अमित शाह पहुंचे भोपाल, मप्र सरकार का रिपोर्ट कार्ड किया जारी.....

# बीमारू राज्य को 20 साल में विकसित राज्य के रूप में आगे ले जाने काम किया : शाह

प्रात : किरण

भोपाल/एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह रविवार को एक दिवसीय प्रवास पर भोपाल पहुंचे हैं। उन्होंने यहां कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में मध्य प्रदेश की शिवराज सिंह चौहान सरकार के 20 साल (2003-2023) का रिपोर्ट कार्ड जारी किया। कार्यक्रम में उन्होंने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को बेहद मेहनती बताते हुए अपने संबोधन की शुरूआत की। उन्होंने कहा कि हमने एक बीमारू राज्य को देश के सबसे विकसित राज्य में पहुंचाने का प्रयास किया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह रविवार को दोपहर करीब सवा 12 बजे वायुसेना के विशेष विमान से भोपाल के राजाभोज विमानतल पहुंचे। यहां मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा और प्रदेश के गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा ने

उनकी अगवानी की। अमित शाह विमानतल से सीधे कुशाभाऊ ठाकरे सभागार पहुंचे, जहां उन्होंने गरीब कल्याण महाअभियान कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के मिशन को लेकर मध्य प्रदेश में भाजपा सरकार के 20 साल का रिपोर्ट कार्ड जारी किया। केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हमने एक बीमारू राज्य को 20 साल में विकसित राज्य के रूप में आगे ले जाने काम किया है। आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश की नींव इन वर्षों में रखी गई। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश का गठन 1956 में हुआ, तब से 2003 तक कांग्रेस का शासन रहा। मध्य प्रदेश को 53 साल में बीमारू राज्य बनाया। आने वाले अमृतकाल का समय मध्य प्रदेश के लिए बेमिसाल साबित होगा। हर क्षेत्र में मप्र आगे बढ़ रहा है। मप्र के सभी अंचलों तक विकास पहुंचाया है। इससे पहले मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कार्यक्रम में कहा कि एक समय था, जब मप्र को बीमारू राज्य कहा जाता था। डबल इंजन की सरकार ने विकास के कीर्तिमान गढ़े हैं। प्रधानमंत्री मोदी के मार्गदर्शन में 2014 से मध्य प्रदेश के विकास को गति मिली है। आजादी के अमृत काल में 2047 तक देश को गौरवशाली वैभवशाली बनाने का संकल्प प्रधानमंत्री ने लिया है उसे पूरा करने में मध्य प्रदेश महत्वपूर्ण योगदान करेगा। सिंचाई के क्षेत्र में मध्य प्रदेश में चमत्कार हुआ है। दोगुनी गति से एमपी प्रगति कर रहा है। प्रधानमंत्री ने सहयोग में कोई कसर नहीं छोड़ी। महिला सशक्तिकरण में अभूतपूर्व काम हुआ। कांग्रेस ने मध्य प्रदेश को बीमारू राज्य का तमगा दिया था। यह शब्द राजीव गांधी ने दिया था। वहीं, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा ने गरीब कल्याण महाअभियान के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। गरीब कल्याण महाअभियान के शुभारंभ कार्यक्रम में 20 वर्षों की उपलब्धियों की लघु फिल्म दिखाई गई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में मध्य प्रदेश में किए गए विकास कार्यों की जानकारी फिल्म के माध्यम से दी गई। भोपाल में कार्यक्रम के बाद शाह भाजपा प्रदेश कार्यसमिति बैठक के लिए ग्वालियर जाएंगे। यहां से मप्र के मन में मोदी नाम से सदस्यता अभियान शुरू करेंगे। इसमें चुनाव से पहले प्रदेश में 40 लाख नए कार्यकर्ता जोड़ने का लक्ष्य देंगे। नए मतदाता और लाड़ली बहना पर फोकस होगा।

# आरटीआई अधिनियम के प्रावधानों का उचित क्रियान्वयन सुनिश्चित करें : उच्चतम न्यायालय

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने केंद्रीय सूचना आयोग और राज्य सूचना आयोगों को सार्वजनिक प्राधिकरणों द्वारा सक्रियता से सूचना प्रदान करने सहित सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के प्रावधानों का उचित कार्यान्वयन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है। प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति पी एस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला की पीठ ने कहा कि सार्वजनिक जवाबदेही एक महत्वपूर्ण विशेषता है जो कर्तव्य धारकों और अधिकार धारकों के बीच संबंधों को नियंत्रित करती है। शीर्ष अदालत ने कहा कि शक्ति एवं जवाबदेही साथ-साथ चलती हैं और कहा कि सभी नागरिकों को अधिनियम की धारा-3 के तहत सूचना पाने का अधिकार है। इसी तरह, आरटीआई अधिनियम की धारा-4 में सार्वजनिक प्राधिकरणों के दायित्व के रूप में कर्तव्य का प्रावधान किया गया है। पीठ ने कहा, हम निर्देश देते हैं कि केंद्रीय सूचना आयोग और राज्य सूचना आयोग अधिनियम की धारा-4 के क्रियान्वयन की निरंतर निगरानी करेंगे। सूचना का अधिकार अधिनियम की धारा-4 सार्वजनिक प्राधिकरणों के दायित्वों से संबंधित है।

## राजनीति में हर नेता अपने बेटे को बढ़ाता है आगे : बेहड़

**रुद्रपुर, एजेंसी।** किच्छा विधायक तिलकराज बेहड़ ने पूर्व विधायक राजेश शुक्ला के आरोपों पर पलटवार किया है। उन्होंने पुत्र मोह के आरोप पर कहा कि भाजपा, कांग्रेस सहित तमाम पार्टियों में नेताओं ने बेटे को आगे बढ़ाने का काम किया है। उनके बेटे के खिलाफ एक आरोप लेकर आएं, वे सामना करने के लिए तैयार हैं। आरोप लगाया कि शुक्ला ने अपने भतीजे को राजनीति में स्थापित करने के लिए नगला नगर पालिका बनाई। शुक्ला के दस साल के कार्यकाल में उनके भतीजों के आतंक से किच्छा की जनता भलीभांति वाकिफ है। उन्होंने कहा कि अगर शुक्ला राज्य आंदोलन के दौरान गठित रक्षा समिति के चंदे का सार्वजनिक हिसाब दें तो वह राजनीति से सन्यास ले लेंगे। शुक्ला उनकी नहीं अपनी चिंता करें। श्थुक्रवार को अपने आवास पर पत्रकार वार्ता में बेहड़ ने कहा कि भाजपा के दरवाजे पर उनके घूमने का आरोप का शुक्ला प्रमाण तो दें। शायद शुक्ला बेहड़ का कद भूल चुके हैं। तीन बार हार का सामना करने के बाद शुक्ला अगले चुनाव में भी हार के लिए तैयार रहें। कहा कि मुख्यमंत्री धामी के पास उनका जाना शुक्ला को अखरा है। लेकिन भूल गए हैं कि कांग्रेस सरकार में शुक्ला एनडी तिवारी, हरीश रावत, यशपाल आर्य, इंदिरा हृदयेश के पास क्यों जाते थे। उन्होंने मेडिकल कॉलेज को अपने पिता के नाम कराने के लिए प्रियंका गांधी के पास माथा रगड़ा था और मेडिकल कॉलेज के नाम को लेकर कांग्रेस से सौदा किया था। कहा कि वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का सम्मान करते हैं लेकिन शुक्ला अपने पिता को तराई का संस्थापक बताकर लोगों को बेवकूफ बनाते हैं। उनके पिता तराई के संस्थापक नहीं बल्कि तराई को बसाने के लिए गठित कमेटी के सदस्य थे। उन्होंने नसीहत दी कि शुक्ला व्यक्तिगत नहीं बल्कि राजनीतिक भाषा बोलें। व्यक्तिगत आरोप लगाना बंद करें। यह भी चेताया कि बेहड़ के खिलाफ व्यक्तिगत बोलने वालों का राजनीतिक हश्र अच्छा नहीं होगा। विधायक बेहड़ ने शुक्ला पर आरोपों की झड़ी के साथ ही कई गंभीर बातें भी इशारों में कह दी। उन्होंने कहा कि अभी दूसरी पार्टी में जाने का सवाल ही नहीं है लेकिन अगर राजनीतिक घटनाक्रम बदलता है तो शुक्ला को चुनाव लड़ने का मौका मिलेगा।

## अभाविप ने गढ़वाल विवि की कुलपति का फूंका पुतला, स्नातक प्रथम वर्ष में मेरिट के आधार पर प्रवेश देने की मांग

**देहरादून, एजेंसी।** दून के चार बड़े कालेज डीएवी, डीबीएस, एमकेपी और श्री गुरु राम राय पीजी कालेज में छात्रों को स्नातक प्रथम वर्ष में मेरिट के आधार पर प्रवेश देने की मांग को लेकर अभाविप (अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद) का प्रदर्शन दूसरे दिन भी जारी रहा। 19 अगस्त को अभाविप ने एचएनबी गढ़वाल विवि की कुलपति प्रो. अन्नपूर्णा नौटियाल का पुतला दहन किया।

डीएवी कालेज में अभाविप के कार्यकर्ताओं ने जमकर हंगामा किया। अभाविप डीएवी कालेज इकाई अध्यक्ष अमन जोशी ने कहा कि प्रवेश नहीं मिलने से हजारों छात्रों का भविष्य अधर में है। गढ़वाल विवि को छात्रों के भविष्य को देखते हुए उचित फैसला लेना चाहिए। वहीं, छात्रसंघ अध्यक्ष दयाल बिष्ट ने कहा कि कई छात्र जानकारी के अभाव में सीयूईटी-यूजी (कामन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट) नहीं दे पाए, जिससे 50 प्रतिशत सीटें अभी भी रिक्त हैं।

विरोध प्रदर्शन के दौरान अभाविप से राहुल चौहान, किरन, सुमित कुमार, हनी सिसोदिया, यशवंत सिंह, ऋतिक नौटियाल आदि उपस्थित रहे। इसी तरह अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद एसजीआरआर इकाई ने प्रांत संयोजक एग्रीविजन प्रिंस भट्ट के नेतृत्व में गढ़वाल विवि की कुलपति का पुतला दहन किया। उन्होंने कहा कि अगर गढ़वाल विवि छात्रों की समस्या को नहीं सुनता है तो आंदोलन को तेज किया जाएगा।

इस मौके पर छात्रसंघ अध्यक्ष पार्थ जुयाल, प्रदेश सह मंत्री ऋषभ रावत, महानगर सहमंत्री राहुल जुयाल आदि उपस्थित थे। उधर, अभाविप डीबीएस पीजी कालेज इकाई ने सीयूईटी के विरोध में दूसरे दिन भी कालेज परिसर में तालाबंदी कर धरना-प्रदर्शन किया।

अभाविप छात्रा विभाग प्रमुख काजल पायल के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने गढ़वाल विवि प्रशासन का पुतला फूंक विरोध जताया। इस मौके पर कालेज इकाई अध्यक्ष पीयूष देव, मंत्री वेदांत चौहान, अमन शाह, आंचल, अंशुमन, शालू राणा आदि उपस्थित रहे।

## देहात क्षेत्रों में ई-रिक्शा और ऑटो सुविधा नहीं, लोग परेशान

**ऋषिकेश, एजेंसी।** देहात क्षेत्रों में नई कॉलोनियां अस्तित्व में आने के साथ उनमें आबादी तेजी से बढ़ रही है। लेकिन वहां रहने वालों को ई-रिक्शा और ऑटो-विक्रम का लाभ नहीं मिल पा रहा है। ई-रिक्शा और ऑटो विक्रम कॉलोनियों के आंतरिक मार्गों पर नहीं चलते हैं। जिससे लोगों को वाहन बुकिंग पर ले जाने को मजबूर होना पड़ रहा है।

ऋषिकेश शहर के आईडीपीएल से सटे गुमानीवाला, भट्टोंवाला, रानीपोखरी, झीलवाला, डांडी, डोईवाला क्षेत्र में जौली, सैन चौकी, थानो, रामनगर डांडा, कुड़ियाल गांव क्षेत्रों में आबादी बढ़ रही है। लेकिन इन क्षेत्रों में सार्वजनिक ट्रांसपोर्ट की सुविधा नहीं है। लोगों को ई-रिक्शा, विक्रम बुक करके ही आना-जाना पड़ता है। लोग स्थानीय स्तर पर बनीं ऑटो व्रिकम और ई-रिक्शा यूनियनों के पदाधिकारियों से उनके क्षेत्रों में नई बसावट वाले क्षेत्र में वाहनों का समय से संचालन करने की मांग करते हैं, लेकिन यूनियन के पदाधिकारी हाईवे और मुख्य मार्गों पर वाहनों का संचालन करते हैं। इससे नई कॉलोनी वाले क्षेत्र में वाहनों का संचालन नहीं करते।

परिवहन विभाग ने डोईवाला सेंटर में शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के विक्रमों के लिए अलग-अलग परमिट जारी किए हैं। ग्रामीण क्षेत्र के विक्रमों का रंग हरा है, जबकि शहर में चलने वाले विक्रमों का रंगा नीला। विक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में चलने की बजाय हाईवे पर दौड़ रहे हैं। इससे देहात क्षेत्र के लोगों को लाभ नहीं मिल पा रहा है।

परिवहन विभाग की यूरो-6 की योजना थानो, रामनगर डांडा, कुड़ियाल के लोगों पर भारी पड़ गई। इस साल जनवरी से डोईवाला और थानो के मध्य से विक्रमों का संचालन बंद है। यह रूट छह किलोमीटर लंबा है। परिवहन विभाग की ओर से इस मार्ग के लिए छह परमिट जारी किए थे। ई-रिक्शा और विक्रमों का संचालन न होने से लोगों को वाहनों को बुक करके आजा-जाना पड़ रहा है।

## सड़क पर आ धमका हाथियों का झुंड, एक घंटे लगाया जाम, पटाखे छोड़ और हवाई फायर कर जंगल में खदेड़ा

**कोटद्वार, एजेंसी।** हाथियों के झुंड ने पुलिंडा रोड पर जाम लगा दिया। कड़ी मशक्कत के बाद वन विभाग की टीम ने हाथियों के झुंड को जंगल की ओर खदेड़ा। कोटद्वार के पुलिंडा रोड पर हाथियों का झुंड आ धमका। करीब एक घंटे तक हाथियों ने जाम लगाए रखा। आखिर में वन विभाग ने पटाखे छोड़कर और हवाई फायर कर किसी तरह हाथियों को जंगल की ओर खदेड़ा। रेंजर अजय कुमार ध्यानी ने बताया कि हाथियों के झुंड सड़क पर आने से जाम लगने की सूचना मिली थी, जिसके बाद टीम को मौके पर भेजा गया। पटाखे छोड़कर और हवाई फायर कर हाथियों को जंगल की ओर भेजा गया। किसी तरह का कोई नुकसान नहीं हुआ है। हाथियों के सड़क पर आ धमकने की ये कोई पहली घटना नहीं है। अक्सर हाथियों के झुंड जंगल से सड़क पर आ जाते हैं। जिस कारण यहां कई बार ट्रैफिक रुक जाता है।

## सौंग नदी के उफान ने निगली एक किशोर समेत दो जिंदगी, नहाने के दौरान तेज बहाव की चपेट में आया युवक

**रायवाला, एजेंसी।** सौंग नदी में गिरने से साहबनगर निवासी एक व्यक्ति की मौत हो गई। यह व्यक्ति वर्षा से उफना रही सौंग नदी से हुए भू-कटाव को देखने आया हुआ था। वहीं गौहरीमाफी क्षेत्र में सौंग नदी में नहाने के दौरान तेज बहाव की चपेट में आने से किशोर की मौत हो गई। दोनों घटना बीते शनिवार की है। साहबनगर के ग्राम प्रधान ध्यान सिंह असवाल ने बताया कि आजकल सौंग नदी में बहाव काफी तेज है। जिससे काफी भू-कटाव हो गया है। जिसे देखने के लिए साहबनगर निवासी 53 वर्ष तुलाराम शर्मा अन्य लोग के साथ सौंग नदी किनारे खड़ा था। तुलाराम का एक हाथ नहीं है। नदी किनारे खोखली हो चुकी जमीन का धंसाव भी हो रहा है। इस दौरान एक झुके हुए सीसी ब्लाक पर खड़ा तुलाराम नियंत्रण खो बैठा और नदी में गिर गया। देखते ही देखते वह नदी की तेज धार में बहने लगा। वहां मौजूद कुछ युवकों ने बचाने के लिए नदी में छलांग लगाई। कुछ देर बाद युवक उन्हें निकाल लाए मगर तक तक उसकी मौत हो चुकी थी। घटना की सूचना रायवाला पुलिस को दी गई।

शव को पोस्टमार्टम के लिए एम्स ऋषिकेश भेजा है। वहीं, अपने दो साथियों के साथ गौहरीमाफी के समीप सौंग नदी में उतरा 16 वर्षीय यश राणा पुत्र अर्जुन राणा तेज बहाव की चपेट में आ गया।

## विश्व फोटोग्राफी दिवस पर उत्तरांचल प्रेस क्लब में फोटो प्रदर्शनी का आयोजन

**देहरादून, एजेंसी।** 19 अगस्त विश्व फोटोग्राफी दिवस के रूप में मनाया जाता है। कहते हैं एक फोटो हजार शब्द के बराबर होती है। फोटो की भाषा हर किसी के लिए एक ही होती है, चाहे वह दुनिया के किसी भी कोने में रहता हो।

विश्व फोटोग्राफी दिवस पर उत्तराखंड न्यूज कैमरामैन एसोसिएशन की ओर से फोटो प्रदर्शनी व प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी व महापौर सुनील उनियाल गामा ने बतौर मुख्य अतिथि प्रदर्शनी का अवलोकन किया और प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने अगले वर्ष से फोटो प्रदर्शनी का आयोजन किसी प्राकृतिक स्थल पर करने की सलाह दी। फोटोग्राफी प्रतियोगिता में रंजना बड़थ्वाल प्रथम, दीपक बहुगुणा द्वितीय, अनूप बिष्ट तृतीय, आदेश जैन चौथे और शिवम प्रजापति पांचवे स्थान पर रहे। 19 अगस्त को उत्तरांचल प्रेस क्लब में आयोजित फोटो प्रदर्शनी में कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने कहा कि फोटो का अपना ही मूल्य होता है। महापौर सुनील उनियाल गामा ने फोटोग्राफी की चुनौतियों पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ पत्रकार निशीथ जोशी ने फोटो पत्रकारिता में समय के साथ आए बदलाव और बढ़ती चुनौतियों पर विचार रखे। उत्तराखंड राज्य एड्स नियंत्रण समिति के मीडिया प्रभारी अनिल सती की ओर से एड्स जनजागरूकता संबंधी स्टाल लगाया गया।

## ससुराल आए युवक ने ज्वलनशील पदार्थ डालकर लगाई आग

**हरिद्वार, एजेंसी।** थाना क्षेत्र में अपनी ससुराल आए एक युवक ने गृह क्लेश के चलते अपने ऊपर ज्वलनशील पदार्थ डालकर आग लगा ली। जिससे शरीर का कुछ हिस्सा झुलस गया। पुलिस ने झुलसे युवक को जिला अस्पताल में भर्ती कराया। जहां उसका उपचार किया जा रहा है। पुलिस के अनुसार, मांगा पुत्र मामचंद निवासी बहादरपुर जट की शादी कुछ महीने पहले मनीषा पुत्री कर्ण सिंह निवासी एकड़ कला से हुई थी। शादी के बाद ही पति-पत्नी में कुछ अनबन हो गई। जिसके बाद पत्नी मायके आ गई थी। बृहस्पतिवार को मांगा ससुराल आया और पत्नी से बातचीत की। बताया गया कि पत्नी के न मानने पर उसने खुद को कमरे में बंद कर लिया। कमरे के अंदर उसने अपने ऊपर ज्वलनशील पदार्थ छिड़क लिया। आग लगते ही उसने शोर मचा दिया। आनन-फानन में दरवाजा तोड़कर किसी तरह पानी डालकर आग को बुझाया गया। लेकिन तब तक उसका शरीर काफी झुलस चुका था। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची। उसे अस्पताल में भिजवाया। थाना प्रभारी रमेश सिंह तनवार ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। प्रथम दृष्ट्या गृह क्लेश की बात निकलकर सामने आई है।

## जाखन गांव में लगातार हो रहा भूधंसाव, 10 मकान मलबे के ढेर में हुए तब्दील

**विकासनगर, एजेंसी।** विकासनगर तहसील के जाखन गांव में लगातार भूधंसाव हो रहा है। इसके अलावा गांव के ऊपर लांघा-मटोगी मोटर मार्ग के धंसने का क्रम भी जारी है। इससे बिन्हार क्षेत्र के ग्रामीणों का संपर्क अन्य जगह से कट गया है।

सबसे ज्यादा समस्या उन ग्रामीणों को आ रही है, जिन्होंने दरार आए मकानों से सामान तो निकाल लिया, लेकिन अब वे इस सामान को कहां रखें। हालांकि, प्रशासन ने पष्ठा कैंप व लांघा इंटर कालेज में सामान रखवाने की वैकल्पिक व्यवस्था बनाई है, लेकिन दो स्कूलों में इससे बच्चों की पढ़ाई भी प्रभावित हो रही है। बच्चों की पढ़ाई के लिए शिक्षा विभाग वैकल्पिक व्यवस्था बनाने को कवायद कर रहा है। प्रभावितों ने कहीं पर जानकारों के यहां पर सामान रखा है, कुछ किराये के कमरे तलाश रहे हैं। जाखन गांव के ग्रामीणों का जनजीवन पूरी तरह से पटरी से उतरा हुआ है। लांघा-मटोगी मोटर मार्ग से भूस्खलन हुआ। सड़क में चौड़ी दरारें पड़ गईं, जिससे सड़क धंसनी शुरू हो गई। दरार बढ़कर गांव तक पहुंच गई। भूधंसाव से कुछ पल के भीतर ही 10 मकान मलबे के ढेर में बदल गए, जबकि 10 मकान क्षतिग्रस्त हो गए। इस पर प्रशासन ने प्रभावित 28 परिवारों के करीब 150 व्यक्तियों को पष्ठा गांव के जूनियर हाईस्कूल में ठहराया है। इनमें से कुछ परिवार अपने रिश्तेदार के यहां रुके हैं। प्रभावित चतर सिंह, जगत सिंह, प्रदीप, धीरज, संसार सिंह, आदेश, लीला देवी आदि ने परिवारिक सदस्यों के साथ सामान मकानों से निकालकर मुख्य मार्ग तक ढोया।

## 17 लाख के गबन की जांच पूरी, कड़ियों पर आ सकती हैं आंच

**ऋषिकेश, एजेंसी।** विद्युत वितरण खंड ऋषिकेश में 17 लाख रुपये के गबन संबंधी मामले में प्रथम चरण की विभागीय जांच पूरी हो गई है। जल्द ही मामले में विभागीय कई कर्मचारियों पर कार्रवाई हो सकती है। हालांकि, विभाग ने आउटसोर्सिंग एजेंसी के माध्यम से लिपिक के पद पर तैनात आरोपी महिला कर्मी को नौकरी से निकाल दिया है।

विद्युत वितरण खंड में 17 लाख रुपये की धनराशि के गबन का मामला सामने आया था। गबन प्रकरण में विभागीय कई कर्मी और अधिकारी संदेह के घेरे में हैं। गबन की मुख्य आरोपी महिला को पदमुक्त करते हुए प्रकरण की विभागीय जांच कराई गई है। अधिशासी अभियंता शक्ति सिंह ने बताया कि प्रकरण में प्राथमिक स्तर की जांच पूरी हो गई है। महिला ने गबन की धनराशि भी वापस लौटाई है।

## रुद्रप्रयाग और चमोली की टैक्सियों में सवारियां भरने पर हंगामा

**ऋषिकेश, एजेंसी।** आईएसबीटी परिसर में टैक्सियों को पार्क करने के बाद वहां से सवारियां बैठाना चमोली और रुद्रप्रयाग के टैक्सी चालकों को भारी पड़ गया। स्थानीय टैक्सी और बस चालकों ने जमकर विरोध प्रदर्शन करते हुए हंगामा किया। हंगामे की सूचना पर एआरटीओ ने चार टैक्सियों को सीज कर दिया। एआरटीओ के सोमवार से आईएसबीटी में बाहरी टैक्सियों की नियमित चेकिंग करने का आश्वासन पर स्थानीय टैक्सी चालक शांत हुए। शनिवार सुबह 11 बजे चमोली, रुदप्रयाग, टिहरी के टैक्सी चालक आईएसबीटी परिसर से सवारी भर रहे थे। जिसका स्थानीय टैक्सी चालकों और बस ऑपरेटरों ने विरोध किया। हंगामा होते देख कई टैक्सी चालक इधर-उधर चले गए। गुस्साए टैक्सी चालकों ने पार्किंग में खड़ी टैक्सियों के टायरों की हवा निकाल दी। सूचना पर परिवहन विभाग की बाइक स्क्वॉड टीम मौके पर पहुंची और बाहरी टैक्सी चालकों को एआरटीओ कार्यालय लेकर पहुंची। स्थानीय टैक्सी चालक और बस ऑपरेटरों ने एआरटीओ प्रवर्तन मोहित कोठारी के साथ बैठक की। एआरटीओ ने आश्वासन दिया कि आईएसबीटी स्थित रोडवेज परिसर से बाहरी टैक्सियों में सवारी नहीं भरी जाएंगी। सोमवार से चेकिंग अभियान शुरू किया जाएगा। एआरटीओ ने चार टैक्सियों को सीज भी किया। यातायात एवं पर्यटन विकास सहकारी संघ के मनोज और एकल मार्ग यूनियन के अध्यक्ष योगेश उनियाल ने कहा कि बाहरी जिलों की टैक्सियां डग्गामारी कर रही हैं। कहा कि परिवहन विभाग दूसरे जिलों की डग्गामारी करने वाली टैक्सियों पर अंकुश नहीं लगाता है तो बस ऑपरेटर आईएसबीटी स्थित ट्रैवल एजेंटों के कार्यालय के आगे से अपने वाहनों में सवारी भरेंगे। इस अवसर पर प्यार सिंह गुनसोला, सुरेश कुकरेती, मदन काला, वेदप्रकाश जोशी, जग विजय पंवार आदि उपस्थित रहे।

## विशेष विवाह अधिनियम के तहत कराई शादी

**ऋषिकेश, एजेंसी।** तहसील में विशेष विवाह अधिनियम डोईवाला के न्यायालय में गगनदीप सिंह सैनी और किरनप्रीत कौर का विवाह संपन्न हुआ। विशेष विवाह अधिनियम में लोग विवाह समारोह में होने वाले अनावश्यक खर्च से बच जाते है। नवदंपति ने तहसील परिसर में पौधरोपण किया। उपजिलाधिकारी शैलेंद्र सिंह नेगी ने बताया कि शुक्रवार को पांवटा साहिब हिमाचल प्रदेश के गगनदीप सिंह सैनी और शेरगढ़ डोईवाला की किरनप्रीत कौर का विवाह तहसील में विशेष विवाह अधिनियम के तहत संपन्न हुआ। उन्हें कोर्ट मैरिज करना उचित लगा। अधिवक्ता मनोहर सिंह सैनी ने बताया कि यह विवाह विशेष विवाह अधिनियम के तहत कराया गया है, जो एक अच्छी पहल है। उपजिलाधिकारी ने बताया कि विवाह संपन्न होने के बाद नवदंपति ने मैती आंदोलन के तहत तहसील परिसर में आंवले का पौधा लगाया। इस दौरान अधिवक्ता संदीप जोशी, साहब सिंह, सुखविंदर कौर, रणजीत सिंह आदि मौजूद रहे।

## पिता को पीट रहे युवक को रोकने पर विवाद, दो समुदायों में बवाल, पुलिस ने लाठी भांजकर किया तितर-बितर

**देहरादून, एजेंसी।** एक समुदाय का युवक अपने पिता को पीट रहा था। मौके पर मौजूद दूसरे समुदाय के लोगों ने बीच-बचाव का प्रयास किया। आरोप है कि इससे गुस्साया युवक अपने घर से चाकू लेकर आया और हवा में लहराना शुरू कर दिया। दूसरे समुदाय का आरोप है कि इस दौरान एक युवक को चाकू लग गया।

पिता को पीट रहे युवक को रोकने पर विवाद हो गया। दो समुदाय के लोग आमने-सामने आ गए और जमकर हंगामा हुआ। बवाल में एक युवक घायल हो गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने लाठियां भांजकर भीड़ को तितर बितर किया। घायल युवक को अस्पताल में भर्ती कराया गया। आसपास के थानों-चौकियों से पुलिस बल बुलाकर अस्पताल और घटना स्थल पर तैनात किया गया है।

शनिवार देर रात मुख्य बाजार में एक समुदाय का युवक अपने पिता को पीट रहा था। मौके पर मौजूद दूसरे समुदाय के लोगों ने बीच-बचाव का प्रयास किया। आरोप है कि इससे गुस्साया युवक अपने घर से चाकू लेकर आया और हवा में लहराना शुरू कर दिया। दूसरे समुदाय का आरोप है कि इस दौरान एक युवक को चाकू लग गया।

आरोप है कि इसके बाद दूसरे समुदाय के लोगों ने दुकान पर खड़े एक अन्य युवक पर लाठी डंडों से हमला कर दिया, जिसमें वह लहूलुहान हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने लाठियां फटकार कर किसी तरह युवक को बचाया।पुलिस घायल युवक को उपचार के लिए अस्पताल लेकर पहुंची। यहां दूसरे समुदाय के लोगों की भारी भीड़ जुट गई। लोग चाकू लहराने वाले युवक पर कार्रवाई की मांग करने लगे। देर रात तक बड़ी संख्या में लोग मौके पर जुटे रहे। कोतवाली प्रभारी संजय कुमार ने बताया कि समीर निवासी मुस्लिम बस्ती घायल हुआ है। मामले में तहरीर मिलने के बाद कार्रवाई की जाएगी। शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए मौके पर पुलिस बल तैनात किया गया है। पुलिस पूरे मामले पर नजर बनाए हुए है। तहरीर मिलने के बाद आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

## प्रशासन की टीम ने कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच जेसीबी से ध्वस्त की दो मजारें, भारी पुलिस फोर्स तैनात

**हरिद्वार, एजेंसी।** कड़ी सुरक्षा के बीच हरिद्वार में पुलिस प्रशासन की टीम ने मजारों को ध्वस्त किया। क्षेत्र में भारी संख्या में पुलिस बल तैनात है। कनखल थाना क्षेत्र के अलग-अलग इलाकों से दो मजारों को प्रशासन की टीम ने कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच जेसीबी से ध्वस्त कर दिया। कार्रवाई स्थल के आसपास किसी को भी जाने की अनुमति नहीं दी गई है। पुलिस और प्रशासन की टीम ने पहले जमालपुर कला स्थिति स्कूल परिसर में बनी मजार को हटवाया। इसके बाद जगजीतपुर क्षेत्र में आंबेडकर पार्क के सामने कॉलोनी में बनी मजार को ढहाया गया।मौके पर एडीएम पीएल शाह, लोनिवि, नगर के अधिकारियों के साथ ही भारी पुलिस फोर्स तैनात है।

## मेटलैब प्रोग्रामिंग लैंग्वेज गणित के छात्र-छात्राओं के लिए उपयोगी

**ऋषिकेश, एजेंसी।** श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय, पंडित ललित मोहन शर्मा परिसर में गणित विभाग की ओर से मेटलैब और इसके अनुप्रयोग विषय पर गोष्ठी आयोजित की गई। कुलपति प्रो. एनके जोशी ने कहा कि मेटलैब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग में अत्यंत उपयोगी है। मेटलैब का उपयोग करके विभिन्न डिजाइन तैयार किए जा सकते हैं। मेटलैब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग में अत्यंत उपयोगी है। शनिवार को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान सूरत के प्रो. सुशील कुमार ने छात्र-छात्राओं को मेटलैब प्रोग्रामिंग लैंग्वेज और गणित के क्षेत्र में विभिन्न प्रयोगों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने मेटलैब को इनस्टॉल करने और इसके कंप्यूटर कोड बनाना सिखाया। कहा मेटलैब प्रोग्रामिंग लैंग्वेज गणित विषय के छात्र-छात्राओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसके गणितीय विश्लेषण में अनेक अनुप्रयोग हैं। मेटलैब के माध्यम से अनेक गणितीय समस्याओं को आसानी से हल किया जा सकता है, साथ की आलेखन एवं विश्लेषण में यह कंप्यूटर प्रोग्रामिंग लैंग्वेज अत्यंत उपयोगी है।

## 340 हेरिटेज टूरिस्ट गाइड तैयार, प्रशिक्षित युवा पर्यटकों को सेवा देने के लिए होंगे अधिकृत

**देहरादून, एजेंसी।** पौराणिक स्थलों के महत्व को जानने के लिए पर्यटक हेरिटेज टूरिस्ट गाइड की सहायता ले सकते हैं। पहले चरण में ऋषिकेश, गंगोलीहाट, धारचूला, बड़कोट, लोहाघाट, मुक्तेश्वर, रामनगर, कोटद्वार, काशीपुर, टिहरी, पौड़ी आदि जगहों में प्रशिक्षण देकर 340 हेरिटेज टूरिस्ट गाइड तैयार किए हैं।

पर्यटन क्षेत्र में प्रदेश के युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए प्रदेश में पहली बार 340 हेरिटेज टूरिस्ट गाइड तैयार किए गए हैं। विभाग ने अब इस साल के एक हजार गाइड तैयार करने का लक्ष्य रख दिया है। वर्तमान गाइड को पुलिस सत्यापन के बाद पंजीकरण कर सर्टिफिकेट दिया जाएगा। ये गाइड बाहरी राज्यों से आने वाले पर्यटकों को सेवाएं देने के लिए अधिकृत होंगे।

दर्शनीय स्थल हैं जिनके बारे देश दुनिया से आने वाले पर्यटकों को जानकारी नहीं होती है। ऐसे स्थलों के महत्व को जानने के लिए पर्यटक हेरिटेज टूरिस्ट गाइड की सहायता ले सकते हैं। पहले चरण में ऋषिकेश, गंगोलीहाट, धारचूला, बड़कोट,

लोहाघाट, मुक्तेश्वर, रामनगर, कोटद्वार, काशीपुर, टिहरी, पौड़ी, उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग, अल्मोड़ा में प्रशिक्षण देकर 340 हेरिटेज टूरिस्ट गाइड तैयार किए हैं। अपर निदेशक पर्यटन पूनम चंद ने बताया कि प्रदेशभर में हेरिटेज टूरिस्ट गाइड प्रशिक्षण कैंप लगाए जा रहे हैं। अब तक 340 युवाओं को प्रशिक्षण दिया गया है। बाहरी क्षेत्रों से आने वाले पर्यटकों को प्रशिक्षित गाइड अपनी सेवाएं देंगे। इन टूरिस्ट गाइड के संपर्क की जानकारी विभाग की वेबसाइट पर पर्यटकों के लिए उपलब्ध रहेगी।

## तीज के गीतों पर झूमीं महिलाएं

**रूड़की, एजेंसी।** नगर से लेकर देहात तक महिलाओं ने तीज के गीतों पर जमकर डांस किया। महिलाओं ने कैटवॉक कर और प्रतियोगिता में हिस्सा लेकर इस दिन को खास बनाया। देहरादून रोड स्थित एक होटल में सामाजिक कार्यकर्ता चेतना सेमवाल की ओर से तीज सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि मनीषा बत्रा ने तीज क्वीन प्रतियोगिता की विजेता को पुरस्कृत किया। प्रतिभा चौहान ने कहा कि तीज पर्व को झूला झूलकर, नाच गाने के साथ, एक-दूसरे को घेवर खिलाकर मनाना चाहिए। संयोजक चेतना सेमवाल कौशिक ने कहा कि इस तरह के सम्मेलन हम सबको हमारी भारतीय संस्कृति के निकट रखता है। इस अवसर पर रश्मि चौधरी, योगिता कौशिक, सुमन कौशिक, मनीषा आनंद, प्रियंका सैनी, सीमा अग्रवाल, बबिता गुप्ता, शशि शर्मा, नीना मित्तल, अपर्णा शर्मा, इति गुप्ता आदि मौजूद रहे। वहीं दूसरी ओर श्री सत्यनारायण मंदिर इंटर कॉलेज मखदूमपुर में तीज त्योहार पर मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में अंशिका पंवार प्रथम, खुशबू द्वितीय एवं सुहानी तृतीय स्थान पर रही।

# इंडिया गठबंधन से केन्द्र में बैठे लोगों को आ रहा पसीना : ललन

## जदयू व्यावसायिक व अन्य प्रकोष्ठ के संयुक्त प्रमंडलीय प्रशिक्षण सह संवाद कार्यक्रम का समापन

- आज देश में लोकतंत्र की आत्मा कराह रही : उमेश
- बिहार में तरक्की की रफ्तार अन्य राज्यों से ज्यादा: विजय

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राजगीर इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में जदयू व्यावसायिक एवं उद्योग प्रकोष्ठ तथा जदयू शिक्षा प्रकोष्ठ के संयुक्त प्रमंडलीय प्रशिक्षण सह संवाद कार्यक्रम का भव्य समापन हुआ। इस मौके पर जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह ने कहा कि आज देश में आपातकाल से भी आगे की स्थति है। इतिहास को बदलने की, पूरे लोकतंत्र को एक व्यक्ति के नाम पर करने की कोशिश हो रही है। स्वतंत्रता दिवस पर अपने संबोधन में प्रधानमंत्री भ्रष्टाचार, परिवारवाद और तुष्टिकरण से लड़ने की बात करते हैं. ऐसा बोलने से पहले उन्हें अपने गिरेबान में झांककर देखना चाहिए। 70 हजार करोड़ का घोटाला करने वाला उनकी वाशिंग मशीन में जाकर बेदाग हो जाता है। तुष्टिकरण की राजनीति सबसे अधिक कोई करता है, तो वे स्वयं प्रधानमंत्री हैं और जहाँ तक परिवारवाद की बात है, तो उसके खिलाफ बोलने का हक इस देश में केवल हमारे नेता श्री नीतीश कुमार को है, जिनके परिवार के किसी सदस्य को लोग नहीं जानते। उन्होंने आगे कहा कि इंडिया गठबंधन से आज केन्द्र में बैठे लोगों को पसीना आ रहा है और इसका श्रेय हमारे नेता को जाता है। प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि नीतीश कुमार ने जैसे बिहार का कायाकल्प किया, वैसे ही अब पूरे देश का करने की जरूरत है, जिसकी सूरत को केन्द्र की तानाशाह सरकार ने बिगाड़ कर रख दिया है। संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग चरम पर है और लोकतंत्र की आत्मा कराह रही है। 2024 में हमें हर हाल में मोदी-शाह और उनकी टोली को सत्ता से बेदखल करना है। वित्त सह संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी ने कहा कि नीतीश कुमार की उपलब्धि और उनकी सोच का नतीजा है कि बिहार में तरक्की की रफ्तार अन्य राज्यों से ज्यादा है। बहुआयामी गरीबी सूचकांक के हाल में जारी आंकड़े के अनुसार देश में गरीबी घटने की दर 9.98 प्रतिशत है, जबकि बिहार में यह दर 18.13 प्रतिशत है। यानि बिहार में गरीबी घटने की दर देश से दोगुनी है। विधानपार्षद सह कोषाध्यक्ष ललन सर्राफ ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जिस भाजपा-मुक्त भारत का संकल्प लिया है, उसे 2024 में पूरा करके दिखाना है। ये सरकार बार-बार नोट बदलती है, इस बार हमलोग नोट के साथ अपना वोट भी बदल कर इन्हें सबक सिखाएंगे। विधानपार्षद एवं जदयू के मुख्य प्रवक्ता नीरज कुमार ने कहा कि भाजपावालों का राष्ट्रवाद हो, हिंदुत्व हो या उनका छप्पन इंच का सीना हो, सब फर्जी है। लोकसभा में हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष की दहाड़ का उनके पास कोई जवाब नहीं था। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री केवल घोषणापत्र जारी करना जानते हैं, लेकिन उनकी कोई घोषणा पूरी नहीं होती। सांसद कौशलेन्द्र कुमार ने कहा कि 2024 के चुनाव में देश की जनता जुमलेबाजों को सबक सिखाएगी। जदयू शिक्षा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष डॉ अमरदीप ने कहा कि जदयू की विचारधारा ही हमारी ताकत है, जो हमारे विरोधियों के पास नहीं है। जदयू व्यावसायिक एवं उद्योग प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष धनजी प्रसाद ने कहा कि व्यवसायियों को एकजुट होकर 2024 की लड़ाई लड़नी होगी और अपने नेता का संदेश हर हाट, हर बाजार तक पहुँचाना होगा। गौर हो आज ही श्री ललन सर्राफ के नेतृत्व में राजगीर के मुख्य बाजार में हाटे बाजार-नीतीशे कुमार जनसम्पर्क अभियान भी चलाया गया। इस अभियान में पार्टी के कई वरिष्ठ नेता और सैकड़ों कार्यकर्ता शामिल हुए। इस दौरान एक-एक दूकान-प्रतिष्ठान में जाकर पार्टी का पर्चा बांटा गया और साथ ही नुक्कड़ सभा भी हुई।

# लहू से देश को सींचने वाले परिवार को देशद्रोही कहना दुर्भाग्यपूर्ण : अखिलेश

- सदाकत आश्रम में मनाई गई पूर्व पीएम राजीव गांधी की 79 वीं जयंती

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष डा अखिलेश प्रसाद सिंह ने भाजपा व केन्द्र सरकार पर हमकर हमला बोला है। श्री सिंह ने रविवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम में आयोजित पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्व राजीव गांधी की 79 वीं जयंती के अवसर पर कहा कि स्व राजीव गांधी जैसे स्वच्छ, शालीन, सज्जन और दूरदर्शी प्रधानमंत्री इस देश को मिलना अब मुशकिल है। दूरसंचार के क्षेत्र में एवं कम्प्यूटर क्रांति के द्वारा काम काज की संस्कृति में क्रांतिकारी बदलाव लाकर राष्ट्रीय जीवन की पूरी सूरत बदलने वाले व्यक्ति थे। टेकनॉजिकल क्रांति का उनका विजन बेजोड़ था। उन्होंने आगे कहा कि देश का दुर्भाग्य है कि स्व राजीव गांधी जैसे भारत रत्न के परिवार पर नरेन्द्र मोदी और पूरा संघ कुनबा तरह-तरह का लांछन लगा रहा है और हर तरह से अपमानित करने की कोशिश कर रहा है। जबकि सच्चाई यह है कि जब भाजपा के संस्थापक अटल बिहारी वाजपेयी एक गंभीर बिमारी से जुझ रहे थे और उनके पास इलाज के लिए पैसे नहीं थे तब तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने संयुक्त राष्ट्र महासंघ के शिष्ट मंडल में वाजपेयी जी को शामिल कर सरकारी खर्चे पर उन्हें अमेरिका भेजा, ताकि उनका इलाज हो सके। शिष्ट मंडल भारत लौट आया था मगर वाजपेयी जी अपना पूरा इलाज सरकारी खर्चे पर करवाने के बाद भारत लौटे थे। डा सिंह ने कहा कि हैरानी होती है कि ऐसे व्यक्ति के परिवार के खिलाफ अटल जी के शिष्य होने का दावा करने वाले प्रधानमंत्री मोदी कैसे आग उगलते हैं। किस तरह उस परिवार को प्रताड़ित करने का षडयंत्र मोदी के इशारे पर चल रहा है। जिस आदमी ने इस देश की भूमि को अपने लहू से सींचकर आबाद किया हो उसके परिवार को देशद्रोही कहना कैसा राष्ट्रवाद है। वास्तव में यही असली देशद्रोह है। जयंती समारोह की अध्यक्षता अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के पूर्व महासचिव एव प्रदेश कांग्रेस कमिटी के पूर्व अध्यक्ष डा शकील अहमद द्वारा की गयी। इस मौके पर वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं ने स्व गांधी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजिल दी। इस अवसर पर पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डा शकील अहमद, कांग्रेस विधान परिषद दल के नेता डा मदन मोहन झा, विधान पार्षद डा समीर कुमार सिंह, प्रेमचन्द्र मिश्रा, विधायक राजेश कुमार, प्रतिमा कुमारी दास,अजय कुमार सिंह, श्याम सुन्दर सिंह धीरज, नरेन्द्र कुमार, श्रीमती ज्योति, ब्रजेश प्रसाद मुनन, प्रमोद कुमार सिंह, आनन्द माधव, लाल बाबू लाल, मुन्ना शाही, आलोक हर्ष, राजेश कुमार सिन्हा, कपिलदेव प्रसाद यादव, असितनाथ तिवारी, डा संजय यादव, कुमार आशीष, राज किशोर सिंह, शिव प्रकाश गरीब दास,चुन्नू सिंह, डा अजय कुमार सिंह, मधुरेन्द्र कुमार सिंह, मिन्नत रहमानी, सिद्धार्थ क्षत्रिय, मृणाल अनामय, निधि पांडे सहित सैकड़ो की संख्या में कांग्रेसजन मौजूद थे।

# हरि सहनी बने बिहार विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष, सम्राट ने कि घोषणा

- बिहार में कानून का राज खत्म, अपराधी बैखौफ : सम्राट

पटना। भाजपा ने हरि सहनी को बिहार विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष बनाया है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने रविवार को इसकी औपचारिक घोषणा की। भाजपा के अध्यक्ष श्री चौधरी ने प्रदेश कार्यालय में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में इसकी घोषणा करते हुए कहा कि विधान पार्षद हरि सहनी जी अब विधान परिषद में भाजपा के नेता होंगे। इस घोषणा के बाद श्री चौधरी ने श्री सहनी को बधाई दी। इस मौके पर उपस्थित बिहार विधान मंडल दल के नेता प्रतिपक्ष विजय कुमार सिन्हा, केंद्रीय मंत्री नित्यानंद राय और दरभंगा के सांसद गोपाल जी ठाकुर ने भी श्री सहनी को नेता प्रतिपक्ष बनने पर उन्हें माला पहनाकर बधाई और शुभकामनाएं दी। पत्रकारों द्वारा पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में श्री चौधरी ने कहा कि बिहार में अपराध बढ़े हैं। लगातार गवाह की हत्या हो रही है। उन्होंने कहा कि पत्रकार की हत्या के बाद बेगूसराय में सेवानिवृत शिक्षक की अपराधियों ने हत्या कर दी। ये दोनों हत्या के मामले में गवाह थे। उन्होंने सष्ट कहा कि बिहार में कानून का राज समाप्त हो गया है। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि गवाहों की हत्या हो रही, इसी का तो भाजपा जवाब मांग रही है और जदयू के नेता कहते हैं कि हत्या हुई तो करवाई भी हो रही है। उउन्होंने कहा कि सरकार का इकबाल ही खत्म हो गया। आज जरूरत है कानून का राज और डर स्थापित करना। श्री चौधरी ने कहा कि डर इसलिए समाप्त हो गया कि बालू, शराब और जमीन माफिया सरकारी तंत्र पर कब्जा कर लिया। पत्रकारों के एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि भाजपा कमजोर पार्टी नहीं है और ऐसे भी नरेंद्र मोदी की सरकार है। अगर कोई हमले होते हैं तो हम पाकिस्तान में घुसकर मारते हैं। उन्होंने कहा कि मोदी जी 56 इंच वाले हैं और 56 इंच का सीना दिखाने का भी काम करते हैं। प्रेस वार्ता में मुख्य रूप से भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष सिद्धार्थ शंभू, प्रदेश मीडिया प्रभारी राकेश कुमार सिंह, अशोक भट्ट उपस्थित थे ।

# भूमिहीनों को पांच डिसमल जमीन दे सरकार: अतुल

- 02 नवम्बर पटना भाकपा रैली की तैयारी में जुट जाँय

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार राज्य खेत मजदूर यूनियन बिहार राज्य परिषद की बैठक रविवार को जनशक्ति भवन में हुई। बैठक की अध्यक्षता यूनियन के उपाध्यक्ष राम नरेश पाण्डेय ने की जबकि संचालन रामलाला सिंह ने किया। बैठक में 02 से 05 नवम्बर तक पटना में आयोजित भारतीय खेत मजदूर यूनियन (बीकेएमयू) के 15 वें राष्ट्रीय सम्मेलन और भाकपा द्वारा आयोजित 02 नवम्बर को आयोजित भाजपा हटाओ देश बचाओ रैली की तैयारी की चर्चा की गई। बैठक को संबोधित करते हुए अखिल भारतीय किसान सभा के राष्ट्रीय महासचिव व भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय सचिव अतुल कुमार अनजान ने कहा कि सरकार सभी भूमिहीनों को पांच डिसमल जमीन दे। अगर गांव में सरकारी जमीन नहीं है तो खरीद कर दें। छह लेन सड़क निर्माण के लिए सरकार जमीन ऊंची कीमत पर खरीद सकती है तो भूमिहीनों के लिए क्यो नहीं? उन्होंने बिहार सरकार से भूमि सुधार के लिए गठित डी बंदोपाध्याय आयोग की सिफारिशों को लागू करने की मांग की। सीपीआई राष्ट्रीय सचिव ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा संसद में पेश बजट में खेत मजदूरों के लिए कोई प्रवधान नहीं किया गया है। मोदी सरकार ने सबसे ज्यादा उपेक्षा खेत मजदूरों की है। मनरेगा के बजट में भारी कटौती की गई है। सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े व महिला ही खेत मजदूर हैं। यह तबका उपेक्षित हैं। मोदी सरकार की विनाशकारी आर्थिक नीतियों से खेत मजदूर तबाह हैं। मंहगाई आसमान छू रही है ।गरीबों को दो जून की रोटी नहीं मिल रही है। भाकपा राष्ट्रीय सचिव अतुल कुमार अनजान ने 02 नवम्बर को पटना में भाकपा द्वारा आयोजित रैली की तैयारी में जुट जाने एवं अधिक से अधिक खेत मजदूरों को भाग लेने का आह्वान किया। 02 नवम्बर को लाल झंडे से पटना को पाट देना है। सीपीआई के राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि केंद्र सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ, महगांई, बेरोजगारी, बिहार को सुखाग्रस्त राज्य घोषित करने, भूमिहीनों को पांच डिसमल जमीन देने के सवालों को लेकर 12, 13 और 14 सितम्बर को बिहार के सभी प्रखण्ड मुख्यालयों पर धरना दिया जाएगा। गरीबों को उजाड़ा जा रहा है। वैकल्पिक व्यवस्था किये बिना किसी को नहीं उजाड़ा जाये। 02 नवम्बर की रैली की तैयारी को लेकर गांव गांव खेत मजदूरों की बैठक की दौर शुरू की जाये। बैठक को कार्यकारी महासचिव पुनित मुखिया, सत्येंद्र सिंह, रामाकान्त अकेला, अर्जुन राम, रामपुकार मुखिया आदि ने संबोधित किया।

# आइलाज की राज्यस्तरीय संयोजन समिति का गठन

- न्यायपालिका पर राज्य का नियंत्रण स्थापित करने की फिराक में भाजपा : रोजारियो
- पटना उच्च न्यायालय की एडवोकेट मंजू शर्मा बनीं संयोजक

पटना। माले विधायक दल के नेता महबूब आलम के आवास, छज्जु बाग में आइलाज के सदस्यों की एक राज्यस्तरीय बैठक हुई, जिसमें राज्य के दर्जनों जिलों के अधिवक्ताओं की भागीदारी हुई। बैठक में आइलाज के राष्ट्रीय महासचिव क्लिफ्टन डी रोजारियो भी उपस्थित रहे। बैठक में क्लिफ्टन डी रोजारियो ने कहा कि विगत 3 वर्षों में आइलाज देश भर में वकीलों की प्रमुख आवाज बनकर उभरा है, जो वकीलों और कानूनी बिरादरी के अन्य लोगों के सामाजिक और आर्थिक न्याय के लिए लड़ रहा है। साथ ही संविधान की हिफाजत के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने आगे कहा कि गृह मंत्री अमित शाह यह दावा कर रहे हैं कि भाजपा सरकार ने इस बिल के जरिये देशद्रोह कानून को खत्म कर दिया है, पर हकीकत में अब उससे भी खतरनाक प्रावधान जोड़कर सरकार की नीतियों की आलोचना व विरोध करने पर भी आतंकवादी होने का दायरा बढ़ा दिया गया है जो उपनिवेशवादी कानून से भी खराब है। बैठक में भाकपा-माले पोलित ब्यूरो सदस्य का अमर ने भी अपनी बात रखते हुए कहा कि आज हम देख रहे हैं कि मोदी सरकार द्वारा देश के संविधान, सामाजिक न्याय, नागरिक स्वतंत्रता और मानवाधिकार पर एक साथ हमला किया जा रहा है, तो आइलाज द्वारा कानूनी बिरादरी की विभिन धाराओं के सभी प्रगतिशील और लोकतांत्रिक मूल्यों में यकीन करने वाले वकिलों की राज्य स्तरीय बैठक स्वागत योग्य कदम है। इस अवसर पर समापन वक्तव्य भाकपा-माले विधायक दल के नेता का. महबूब आलम ने देते हुए कहा कि आज सभी के हक की आवाज उठाने वाले आइलाज जैसे वकिलों के संगठन की जरूरत है। बैठक में 37 सदस्यीय राज्य संयोजन समिति बनाई गई। संयोजन समिति ने मंजू शर्मा को राज्य संयोजन समिति का संयोजक चुना गया।

# नि:शुल्क चिकित्सा शिविर में 125 लोगों की हुई जांच

पटना। अग्रसेन सेवा न्यास एवं अग्रवाल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा शक्तिधाम बैंक रोड पटना में निःशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। मौके पर ट्रस्ट के सचिव अमर अग्रवाल ने बताया कि न्यास द्वारा प्रत्येक माह के तीसरे रविवार को यह चिकित्सा शिविर आयोजित होता है। इस चिकित्सा शिविर में कुल 110 मरीजों ने अपनी जांच करवाई। अग्रवाल ने बताया कि सभी मरीजों को निःशुल्क चाय बिस्कुट दिया गया। शिविर में डॉ बी के अग्रवाल द्वारा हेपेटाइटिस की जांच की गई। शिविर में इसके अतिरिक्त हेपेटाइटिस इ की जांच के लिए 23 मरीजों का खून लिया गया। 10 मरीजों को हेपेटाइटिस बी का इंजेक्शन लगाया गया। मौके पर शिविर में 80 मरीजों के आँखों की जांच श्री बालाजी नेत्रालय के प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक डा शशि मोहनका द्वारा किया गया। इनमे 11 मरीजों का मोतियाबिंद काफी बढ़ा हुआ था. डा मोहनका ने बताया की इनका निःशुल्क फेको विधि द्वारा आपरेशन श्याम मंदिर, न्यूबहादुरपुर के पास स्थित श्री बालाजी नेत्रालय में किया जाएगा। सभी मरीजो को आंख की दवा सीओन हेल्थ केयर के अरुण कुमार द्वारा दिया गया। 14 मरीजों को निःशुल्क चश्मा भी उपलब्ध कराया गया। आँखों के अतिरिक्त मधुमेह की जांच सुप्रसिद्ध मधुमेह रोग विशेषज्ञ डॉ सुभाष कुमार द्वारा की गयी जिसमे 25 लोगों में मधुमेह पाया गया। सभी मरीजों को मधुमेह की दवा निःशुल्क दी गयी। डा कुमार ने बताया कि मधुमेह रोगियों की संख्या काफी तेजी से बढ़ रही है। मौके पर शिविर में 25 लोगों के दांतों की जांच प्रसिद्ध दंत चिकित्सक डॉ नितिन मैतिन द्वारा की गयी जिसमे 21 लोगों के दांत में बीमारी पाई गयी। मौके पर होमियोपैथिक विशेषज्ञ डॉ कन्हैया अग्रवाल द्वारा भी 18 मरीजों को विभिन्न बीमारियों की दवा दी गयी7 मौके पर मरीजों के ब्लड प्रेशर की जांच जितेंद्र के द्वारा की गई।

# प्रदेश में अपराधियों के हौसले बुलंद, पुलिस असहाय : विजय

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजय कुमार सिन्हा ने कहा है कि राज्य में अपराध को रोकना अब महागठबंधन सरकार के वश की बात नहीं है। सिन्हा ने कहा कि राज्य में अपराधी बेलगाम हो गए हैं। पुलिस कर्मी, पत्रकार, किसान, मजदूर, व्यापारी, नौकरीपेशा, आम नागरिक सभी तबको के लोगों की हत्या हो रही है। पुलिस असहाय है। सिन्हा ने कहा कि प्रतिपक्ष नेता के रूप में वे मारे गए लोगों के परिजनों से भेंट कर उन्हें ढाढ़स और सम्वेदना प्रकट करने राज्य का भ्रमण कर रहे है। लेकिन मृतकों की संख्या लगातार बढ़ रही है। सरकार का कोई मंत्री इनकी खोज खबर लेने नहीं जा रहा है ।सिन्हा ने कहा कि अपराधियों का चारागाह बने बिहार में सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोगों का आशीर्वाद इन्हें प्राप्त है। राज्य में आम या खास कोई सुरक्षित महसूस नहीं कर रहा है। अपराधियों के हौसले बुलंद हो गये है। कहते हैं कि बिहार में अपराध बहुत कम है डाटा देखिये। जब लोग हजारों अपराध की घटना रोज देख रहे हैं वे डाटा क्या देखेंगे। पुलिस ने थानों में अपराध की घटनाओं पर आधारित एफ आईआर लिखवाने आ रहे लोगों को प्रताड़ित करना शुरू कर दिया है। सिन्हा ने कहा कि अपराधियों ने बिहार में हाहाकार मचा दिया है। राज्य के मुखिया अब लाचार हो चुके हैं।

# राजीव गांधी ने राजनीति में युवाओं को स्थान दिया : मदन

पटना। प्रदेश युवा कांग्रेस के सचिव मुकुल यादव की अध्यक्षता में पटना के करबिगहिय स्थित शकुंतला उत्सव हॉल में राजीव गांधी की उन्यास्वी जयंती समारोह का आयोजन किया गया। सभा को संबोधित करते हुए औरंगाबाद विधायक आनंद शंकर ने कहा कि भाजपा और आरएसएस आज कांग्रेस के नेताओं के प्रमुख योगदान को भुला देने का प्रयास कर रही है। इस अवसर पर बिहार प्रदेश युवा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष शिव प्रकाश गरीबदास ने बताया कि पंचायती राज एवं कंप्यूटर क्रांति जैसे कार्यों को राजीव गांधी ने बढ़ावा दिया। कार्यक्रम में युवा कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राजकुमार राजन, पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष दौलत इमाम, पूर्व उपाध्यक्ष मनजीत आनंद साहू, पूर्व महासचिव रूपम झा, वरिष्ठ नेत्री कुमारी अनीता, उपाध्यक्ष ईशा यादव, लीगल सेल के चेयरमैन विकास झा, विशाल यादव, करुण पासवान, निशांत सिंह, अशोक , अमितेश, अक्षत मौजूद रहें।

# मुकुंद राम ताती के जीवन से प्रेरणा लेने की जरूरत : नित्यानंद

पटना। स्वतंत्रता सेनानी पूर्व विधायक स्वर्गीय मुकुंद राम ताती के पुण्यतिथि पर आयोजित पखवाड़ा समारोह को संबोधित करते हुए केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने कहा की मुकुंद राम का देश की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि मुकुंद राम ताती जी के जीवन से समाज को प्रेरणा लेने की जरूरत है कठिन परिस्थितियों में रहकर देश की आजादी में सक्रिय भूमिका निभाना प्रेरणादायक है। वह हमेशा समाज के अंतिम पायदान पर रहने वाले लोगों की चिंता करते थे। इस समाज के लोग काफी मेहनती होते हैं अपनी मेहनत के बदौलत समाज में अपनी अलग पहचान बनाने में कामयाब रहते हैं इस समाज का इतिहास काफी गौरवशाली रहा है। केंद्रीय मंत्री कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पिछड़ा अति पिछड़ा समाज के अंतिम पायदान पर रहने वाले लोगों की चिंता में लगे रहते हैं उनका उत्थान उनका विकास उनके सामाजिक स्तर में बदलाव शैक्षणिक सुधार इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए अपनी सरकार में महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। मंत्री ने कहा कि इस समाज के मांगों को प्रमुखता से विचार किया जाएगा। भारतीय जनता पार्टी के प्रति समाज का रुझान काफी रहता है। भाजपा के प्रदेश संगठन मंत्री भीखू भाई दलसानिया ने कहा कि आप सभी अपने पूर्वज से प्रेरणा लेकर नरेंद्र मोदी के हाथों को मजबूत करें। नरेंद्र मोदी हमेशा आप सभी की चिंता में लगे रहते हैं। केंद्र सरकार के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने में आपकी भूमिका अहम होगी। केंद्र सरकार लगातार समाज के निचले पायदान पर रहने वाले लोगों के विकास के लिए योजना बनाती हैं इसका लाभ समाज को कैसे मिले इस पर आप सभी को चिंता करने की जरूरत है।

पान समाज के अध्यक्ष प्रवीण दास प्रवीण दास ताती ने कहा कहा कि ताती तत्व, खत्वे को ओबीसी सूची 48 से विलोपित किया जाए। उन्होंने कहा कि इस समाज को सत्ता में उचित भागीदारी मिलनी चाहिए। पुण्यतिथि समारोह में सैकड़ो ने उपस्थित होकर पूर्व विधायक को श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

# भाजपा शासित प्रदेशों में रामराज है क्या : शिवानंद

पटना। राज्य में बढ़ते अपराध को लेकर विपक्ष के हमले पर राजद के वरिष्ठ नेता शिवानंद तिवारी ने पलटवार किया है। कहा है कि देश में या दुनिया में कही भी रामराज नहीं है। रामराज में अपराध विहीन जिस समाज की कल्पना की गई है वैसा कहीं नहीं है। उन्होंने आगे कहा कि बिहार के हत्याएं हुई हैं तो उसके बाद जिन लोगों ने हत्या की उन्हें गिरफ्तार किया गया है। यही सरकार का दायित्व है। उन्होंने राज्य में बढ़ते अपराध के कारणों को गिनाते हुए कहा कि आज बेरोजगारी चरम पर है। गैर बराबरी है। लोगों के मन में विज्ञापन के जरिए लालच पैदा किया जाता है। उसको हासिल करने का कोई जरिया नहीं है। उन्होंने कहा कि देश में बेरोजगारी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि हर साल हम दो करोड़ लोगों को नौकरी देंगे, किसानों की आमदनी दोगुनी करेंगे लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। प्रतिद्वंद्वी दल भाजपा को निशाने पर लेते हुए श्री तिवारी ने कहा कि विरोधी दल के लोग कुछ भी बोल देते हैं। बिहार में जंगलराज की बातें करते हैं लेकिन भाजपा से हमारा सवाल है कि जहां उनके दल का शासन है क्या वहां रामराज है? शिवानंद ने कहा कि नौजवानों में जो असंतोष है। जो उनके मन में गुस्सा है। उनका जो सपना पूरा नहीं होता है। सामाजिक गैर बराबरी है उसे कैसे मिटाया जाए इसे पर ध्यान देते की जरूरत है। अपराध की घटनाओं के पीछे इस प्रकार के कई कारण हैं जिसे दूर करने की जरुरत है।

# गंगा स्नान के दौरान डूबा युवक, तलाश जारी

पटना। गंगा स्नान के दौरान रविवार को पटना में एक 19 वर्षीय युवक डूब गया। युवक की पहचान रवि कुमार के रूप में हुई है। वह गंगा में बढ़े जलस्तर में नहाने के दौरान तेज बहाव में डूब गया है। रवि कुमार पिता आनंद चौधरी नुनुपट्टी जिला सुपौल का रहने वाला बताया जा रहा है। मिली जानकारी के अनुसार गंगा में स्नान करने आया रवि पटना के कंकड़बाग अशोक नगर के लोहियानगर में रहने वाली अपनी मौसी के यहां आया था। रविवार को अकेले रवि कुमार पटना के पीरबहोर थाना क्षेत्र के अशोक राज पथ स्थित कृष्णा घाट पहुंचा। यहां स्नान करते करते गंगा में तेज बहाव में वह बह गया। स्थानीय लोग कुछ कर पाते उससे पहले तेज बहाव में रवि लापता हो गया। घटना की सूचना मिलते ही पीरबहोर थाने की पुलिस और एसडीआरएफ की टीम ने घंटो लापता रवि की खोजबीन करती रही। पुलिस की माने तो तेज बहाव के कारण काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। फिलहाल पुलिस की तलाश जारी है।

# इस्सयोग के तत्त्वावधान में आयोजित हुआ शक्तिपात-दीक्षा समारोह

- सदगुरुमाता माँ विजया जी ने नव-जिज्ञासुओं को दी शक्ति-दीक्षा

पटना। अन्तर्राष्ट्रीय इस्सयोग समाज के तत्त्वावधान में रविवार को गोलारोड स्थित एमएसएमबी इस्सयोग भवन में शक्तिपात-दीक्षा समारोह का आयोजन किया गया। संस्था की अध्यक्ष एवं ब्रह्मनिष्ठ सदगुरुमाता माँ विजया जी ने, भारत के विभिन्न स्थानों तथा नेपाल से आए दो सौ से अधिक स्त्री-पुरुषों को, इस्सयोग की सूक्ष्म आंतरिक साधना आरंभ करने के लिए आवश्यक शक्ति-दीक्षा प्रदान की। यह जानकारी देते हुए संस्था के संयुक्त सचिव डा अनिल सुलभ ने बताया है कि कार्यक्रम का आरंभ इस्सयोग की विशिष्ट शैली में होने वाले अखंड भजन-संकीर्तन से हुआ। माताजी के शुभ-पदार्पण के पश्चात भजन की पूणार्हुति हुई और दीक्षा प्रक्रिया आरंभ हुई। माताजी ने दीक्षा के अभिलाषी व्यक्तियों को ह्यइस्सयोग की साधना प्रक्रिया से अवगत कराकर साधना आरंभ करायी और शक्ति प्रदान की। दीक्षा के पश्चात अपने आशीर्वचन में माताजी ने सूक्ष्म-साधना की उपलब्धियों के विषय में बताया और कहा कि नियमित सधना से आध्यात्मिक-शक्तियां बढ़ती हैं और अनेक चमत्कारिक लाभ जीवन में होते है। यश एक आडंबर रहित अत्यंत सरल और हर किसी मनुष्य के द्वारा अपने घर में अपने बिस्तर पर की जाने वाली साधना-पढ़ती है, जिसके लिए किसी पूर्व तैयारी की भी आवश्यकता नहीं पड़ती है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक साधक को सदा सकारात्मक सोचना चाहिए। नियमित साधना कारने वाले साधकों के मन में जो भी विचार और संकल्प आते हैं, वो पूरे होते हैं। यदि नकारात्मक विचार आएँगे तो वे भी पूरे हो सकते हैं। अस्तु नकारात्मक विचारों से बचना चाहिए। यदि ऐसे विचार आए तो उसे तुरत काटना चाहिए। इस अवसर पर संस्था के संयुक्त सचिव उमेश कुमार, श्रीमती सरोज गुटगुटिया, संजय कुमार, कपिलेश्वर मंडल, अवधेश प्रसाद, ममता जमुआर, प्रदीप गायत्री, प्रभात झा, रजनी राजेश, मीरा चौरसिया, किरण प्रसाद, मंजू झा, वीरेंद्र राय, कुमार पीयूष, समेत सैकड़ों की संख्या में संस्था के अधिकारी, स्वयंसेवक तथा साधक-गण उपस्थित थे। प्रसाद वितरण के साथ दीक्षा-समारोह संपन्न हुआ।

# बिहार में अगली बार भाजपा सरकार : हरि

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

प्रदेश में कानून व्यवस्था पूरी तरह चैपट हो गई है। लोगों की जान सुरक्षित नहीं है। कभी निषाद, मछुआरा, मछुआ समिति के मंत्री/अध्यक्ष, व्यापारी, पुलिस अधिकारी और यहां तक कि पत्रकार भी दिनदहाड़े मारे जा रहे हैं। ऐसे में किसी की जान सुरक्षित नहीं हैं। जब राज्य में लोगों की जान ही सुरक्षित नहीं रहेगी तब विकास क्या होगा। ऐसे में जरुरी है कि लोग भाजपा को वोट देकर राज्य में सरकार बनायें। जब केन्द्र और राज्य में सरकार रहेगी तो प्रदेश का विकास तेजी से होगा। ये बातें रविवार को बिहार राज्य मत्स्यजीवी सहकारी संघ के तत्वाधान में आयोजित अभिनंदन समारोह में बिहार विघान परिषद में नेता प्रतिपक्ष हरि सहनी ने कही। उन्होंने कहा कि भाजपा जल्द ही राज्य में सरकार बनाएगी। अभिनंदन समारोह में आये अतिथियों का स्वागत बिहार राज्य मत्स्यजीवी सहकारी संघ के प्रबंध निदेशक ऋषिकेश कश्यप ने किया। मौके पर श्री कश्यप ने कहा कि राज्य सरकार से कई बार मछुआरों को शोषण से बचाने के लिए आग्रह किया गया। परंतु राज्य सरकार मछुआरों के शोषण से बचाने के बजाए उन्हे लूटने में जुटी है। मछुआरों एवं निषादों के जान-माल पर हमला किया जा रहा है। उनकी जीविका छीनी जा रही है। मछुआरों के तालाब को खुली डाक किया जा रहा है। यह मछुआरा बर्दास्त नही करेगा। मछुआ समाज संगठित होकर अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ेगा। मौके पर निदेशक, कॉफ्फेड, मदन सहनी, पटना सदर प्रखंड अध्यक्ष अजय निषाद सहित कई लोगों ने भाग लिया।

# स्वच्छता जागरूकता के लिए मरीन ड्राइव पर चलाया गया अभियान

## गंगा हमारी मां, इसे प्रदूषण मुक्त रखना हमारी जिम्मेदारी : नवगीत

- सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग बंद करें : सचिन

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना नगर निगम स्वच्छता जागरूकता टीम द्वारा लोक गायिका एवं अभियान की ब्रांड एंबेसडर डॉ नीतू कुमारी नवगीत के नेतृत्व में दीघा के गंगा ड्राइव वे एरिया मरीन ड्राइव पर स्वच्छता जागरूकता अभिय

## संक्षिप्त खबरें

### गिद्धौर के गांधी आश्रम में दो घरों में अज्ञात चोरों ने की चोरी

गिद्धौर : थाना क्षेत्र के गंगरा पंचायत के गांधी आश्रम गांव में शनिवार की देर रात्रि दो घरों में अज्ञात चोरों ने नगदी, जेवर जेवरात सहित बेसकीमती सामानों की चोरी कर ली। जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के गंगरा पंचायत के गांधी आश्रम गांव में शनिवार की देर रात्रि दुःखी रावत व राजीव रावत के घर के कमरे के खिड़की को तोड़कर सेंधमारी करते अज्ञात चोरों ने घर में रखे नगदी सोना,चांदी जेवरात सहित एक लाख रुपए के सामान की चोरी कर ली।चोरी की घटना की जानकारी पीड़ित परिवार के सदस्यों ने बताया कि रविवार की सुबह जब सोकर उठे तो देखा कि घर के कमरे में बने खिड़की को अज्ञात चोरों द्वारा तोड़कर कमरे अटैची में रखे सोने चांदी के जेवरात व नगदी की चोरी कर ली व सारा सामान बिखरा पड़ा है। वहीं पीड़ित परिजनों द्वारा घटना की सूचना गिद्धौर थाना पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही गिद्धौर थाना पुलिस मामले की छानबीन में जुट गई।

### कांग्रेस कार्यालय में मनाई गई पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की जयंती

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर प्रखंड कांग्रेस कार्यालय कल्याणपुर में कांग्रेस के प्रखंड अध्यक्ष कपिलेश्वर कुंवर की अध्यक्षता में पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न से सम्मानित स्वर्गीय राजीव गांधी की जयंती मनाई गई। उपस्थित कार्यकताओं ने उनके चित्र पर पुष्पमाला अर्पित करते हुए उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। साथ ही संगठन की विस्तार एवं मजबूती पर चर्चा की गई। मौके पर संजीव कुमार ठाकुर, कमल किशोर, भोला प्रसाद अरुण, चंद्रभूषण प्रसाद सिंह, रविकांत मालाकार, अजीत कुमार झा, रणधीर ईश्वर, प्रोफेसर रमेश कुंवर, जयशंकर ईश्वर, भोला पासवान, मोहम्मद सद्दाम, विनोद कुमार साह, अजीत कुमार सिंह, मणि शंकर चौधरी, मीना कुंवर आदि उपस्थित थे।

### 22 अगस्त को मुखिया संघ अधिकार के कटौती के विरूद्ध देगा धरना

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत विभूतिपुर उत्तर पंचायत भवन के सभागार में मुखिया संघ की बैठक आयोजित की गई। अध्यक्षता संघ के अध्यक्ष रणधीर कुमार महतो कर रहे थे। बैठक में केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार के द्वारा मुखिया के अधिकार के कटौती के विरुद्ध 22 अगस्त को प्रखंड स्तर पर एक दिवसीय धरना प्रदर्शन करने का निर्णय लिया गया।

### मारपीट की प्राथमिकी दर्ज

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर थाना क्षेत्र के पतैलिया वार्ड 03 निवासी रामसेवक महतो की पुत्री विनीता कुमारी ने मारपीट की प्राथमिक की दर्ज कराई है। जिसमें गांव के ही 7 लोगों को नामजद की है। दर्ज प्राथमिकी के माध्यम से पीड़िता ने बताई कि 13 अगस्त को मेरे पिता दरवाजे पर बैठे थे। तभी वे लोग आए और बोले मेरे खिलाफ विभूतिपुर थाना कांड संख्या216/21 दर्ज मुकदमा वापस लो। मना करने पर मारपीट किया।

### सीपीआईएम मानाराय टोल शाखा की बैठक हुई

विभूतिपुर, समस्तीपुर। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी शाखा मानाराय टोल की बैठक कामरेड राम जी महतो की अध्यक्षता में निजी शिक्षण संस्थान बासोपोल में संपन्न हुई बैठक में कई फैसले लिए लिए गए। जिसमें 26 अगस्त को तमाम पार्टी सदस्यों की जीबी मीटिंग राहुल विवाह भवन समस्तीपुर में होगी। जिसे पार्टी पोलितब्यूरो के सदस्य अशोक धावले संबोधित करेंगे। उसमें पार्टी के तमाम साथियों को उपस्थित होने का निर्णय हुआ। विभूतिपुर प्रखंड में बढ़ते अपराध और भ्रष्टाचार के सवाल पर होने वाले पांच सितंबर के प्रदर्शन को सफल बनाने के लिए जीबी मीटिंग करने का निर्णय हुआ। बैठक में जिला कमेटी के सदस्य अरविंद कुमार दास कृष्णमूर्ति क्रांति कुमार मुनेश्वर दास सकलदेव दास रामचंद्र दास चंदन कुमार आदि लोगों ने अपने विचार व्यक्त किया।

### जन्माष्टमी पर झांकी निकालने को लेकर बैठक किया गया

आरा कृष्ण चेतना समिति सभागार में कृष्ण चेतना समिति का बैठक संस्था के अध्यक्ष नन्द किशोर यादव के अध्यक्षता में हुआ।बैठक में6सितम्बर2023को कृष्ण जन्माष्टमी कृष्ण चेतना समिति सभागार में मनाने के निर्णय लिया गया।संस्था के कार्यकारणी के सदस्य पप्पू यादव ने जन्माष्टमी पर झांकी निकालने का प्रस्ताव लाया प्रस्ताव में समय में संसोधन करके2024से झांकी निकालने का सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया बैठक के अंत में . कृष्ण चेतना समिति के संस्थापक सदस्य लसाडी निवासी भुनेश्वर यादव की मृत्यु पर शोकसभा किया गया।अपने शोकसन्देश मे संस्था के लोगो ने कहा कि भुनेश्वर बाबू के कृष्ण चेतना समिति के गठन में महती भूमिका थी उन्होंने कृष्ण चेतना समिति के विकाश में उन्होंने बहुत कड़ी मेहनत कर विकसित किये थे उनके मृत्यु से कृष्ण चेतना समिति को अपूरणीय क्षतिहुई है।

# सिन्हा की आदमकद प्रतिमा लगाने को लेकर विधान परिषद में उठाने के लिए एमएलसी को दी बधाई

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। बिहार निमार्ता डॉ सचिदानन्द सिन्हा रचना -चक्र, बिहार,, विनय कुमार श्रीवास्तव, बिहार प्रभारी शिष्टमंडल ने एमएलसी राधा चरण साह से मुलाकात कर बिहार निमार्ता डॉ सचिदानंद सिन्हा की आदमकद प्रतिमा लगाने की मांग विधान परिषद में उठाने के लिए मिला।

बिहार विधान परिषद सदस्य राधा चरण साह (अध्यक्ष जिला पार्षद एवं पंचायती राज प्रतिनिधि) से आरा स्थित उनके आवास पर मिला और उन्हें बिहार निमार्ता डॉ० सच्चिदानंद सिन्हा की पटना में आदमकद प्रतिया लगाने की मांग विधान परिषद में उठाने के लिए बधाई दिया।

पाँच सदस्सीय मंडल में शामिल सचिदानंद रचना चक्र के बिहार प्रभारी विनय कुमार श्रीवास्तव, वकील सिंह यादव, रचना चक्र के जिला संयोजक संतोष श्रीवास्तव, अधिवक्ता आशुतोष पाण्डेय, सचिन सिन्हा (जिला उपाध्यक्ष अ.भा. का.म.स. एवं समाजसेवी), प्रेम राम समाजसेवी सुधीर श्रीवास्तव समाजसेवी ने एमएलसी राधा चरण साह से मुलाकात कर उन्हें बधाई देने के साथ-साथ संविधान सभा के प्रथम अध्यक्ष सह विहार निमार्ता डॉ सच्चिदानन्द सिन्ह से संबंधित जीवन चक्र का प्रपत्र उन्हें सौपा साथ ही शिष्टमंडल ने उन्हें डॉ सिन्हा के काम से अवगत कराते हुए कहा कि डॉ. सिन्हा के अथक प्रयास और अनवरत संघर्ष के परिणामस्वरूप ही 22 मार्च 1912 को बंगाल से अलग होकर बिहार का निर्माण एक राज्य के रूप में हुआ। जबकि आज बिहार सरकार 22 मार्च को तो बिहार दिवस धूम-धाम से मनाती है परन्तु विहार के निर्मात डॉ. सिन्हा को याद करना भी मुनासिब नही समझती जो समझ से परे है सिन्हा ने न केवल बिहार का निर्माण किया बल्कि बिहार विधान परिषद और पटना एमापोर्ट को अपनी नीजि 72 एकड जमीन दान में दे दी, फिर भी आज पूरे बिहार में उनकी एक आदमक प्रतिमा नहीं होना संविधान सभा के प्रथम एवं बिहार निमार्ता के साथ ही पूरे बिहार का अपमान है। इन सब बातों को लेकर शिष्टमंडल ने भी साह जी को हार्दिक अभिनंदन करते हुए डॉ सिन्हा के आदमकश प्रतिभा लगाने के लिए साह जी के हर संघर्ष मे शिष्टमंडल ने जोरदार आवाज बुलंद करने की बात कही।

## देश के पूर्व पीएम स्व राजीव गांधी की अलीगंज मे मनाई गई जयंती

प्रात : किरण संवाददाता

अलीगंज बाजार स्थित युवा शक्ति कार्यालय मे युवा नेता महेश सिंह राणा की अध्यक्षता मे देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्व राजीव गांधी की 79 वी जयंती मनाई गई। सबसे पहले लोगो ने उनके तैलीय चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया और उनके बताये रास्ते पर चलने का संकल्प लिया। युवा शक्ति के प्रान्तीय नेता सह अधिवक्ता शशिशेखर सिंह मुन्ना ने कहा कि देश के पूर्व स्व राजीव गांधी संचार क्रान्ति के जनक थे। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता महेश सिंह राणा ने कहा कि पूर्व पीएम स्व राजीव गांधी ने देश के विकास के लिए कई ऐतिहासिक कार्य किया है।जिससे देश के तकदीर व तस्वीर दोनो बदल गई थी। काग्रेस के वरिष्ठ नेता समाजसेवी धर्मेन्द्र पासवान उर्फ गुरूजी ने कहा कि पूर्व पीएम की जंतयी आज पुरे देश मे सद्भावना दिवस के रूप मे मनाया जा रहा है।उन्होने देश के लिए सब कुछ समर्पित कर दिया। और कहा कि सारा लहू बदन का हमने जमी को पिला दिया,वतन का जो कर्जा था हमने चूका दिया । राहुल प्रियंका गांधी कांग्रेस सेना के जमुई जिलाध्यक्ष चंद्रशेखर आजाद ने कहा कि पूर्व पीएम राजीव गांधी सूचना प्रोधोगिकी के जनक थे। विकास कार्य के लिए उन्हे भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। उनके उल्लेखनीय कार्यो को कभी भुलाया नही जा सकता। मौके पर विक्रम कुमार,अर्जुन सिंह,शरण सिंह,महेश राम चंद्रवंशी,भुटाली साह,अजय पाण्डेय,मंटु सिंह,राजेश पासवान,मकेश्वर यादव,शंभु शरण यादव ,अवधेश यादव के अलावे कई गणमान्य लोग व कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित थे।

## जिले के अलग-अलग थाना क्षेत्रों में विषैले सांप के डसने से बुजुर्ग समेत तीन की हालत बिगड़ी

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिले के अलग-अलग थाना क्षेत्रों में विषैले सांप के डसने से बुजुर्ग समेत तीन की हालत गंभीर हो गई। जिसके बाद तीनों लोगों को इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया। इसमें पहली घटना बिहिया थाना क्षेत्र के अमराई नवादा गांव की है। जहां रविवार की की सुबह खेत में कम कर रहे अधेड़ को विषैले साँप ने डस लिया। जिससे उनकी हालत काफी बिगड़ गई। इसके बाद परिजन द्वारा उन्हें इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया जहां उनका इलाज कराया जा रहा है। जानकारी के अनुसार उक्त अधेड़ बिहिया थाना क्षेत्र के अमराई नवादा गांव निवासी 50 वर्षीय रवि शंकर महतो है। घटना के संबंध में बताया जाता है की रविवार की सुबह वह खेत में काम कर रहे थे। उसी दौरान विषैले सांप ने डस लिया। जिससे उनकी हालत काफी बिगड़ गई। इसके बाद परिजन द्वारा उन्हें इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया। वह दूसरी घटना मुफस्सिल थाना क्षेत्र के रामपुर मिल्की गांव की है। जहां रविवार की दोपहर खेत में काम कर रहे एक बुजुर्ग को विषैले सांप ने डस लिया। जिससे उनकी हालत काफी गंभीर हो गई। इसके बाद परिजन द्वारा उन्हें इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया। जहां उनका इलाज कराया जा रहा है। जानकारी के अनुसार उक्त बुजुर्ग मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के रामपुर मिल्की गांव निवासी मो.असलम है। वहीं उक्त बुजुर्ग के परिजन ने बताया कि रविवार की दोपहर वह खेत रोपनी कर रहे थे। उसी दौरान विषैले सांप ने उन्हें डस लिया। जिससे उनकी हालत काफी गंभीर हो गई। इसके बाद परिजन द्वारा उन्हें इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया। जबकि तीसरी घटना टाउन थाना क्षेत्र के आनंद नगर मोती झील की है। जहां लेबर का काम कर रहे एक मजदूर को विषैले सांप ने डस लिया। जिससे उसकी हालत बिगड़ गई। इसके बाद वहां मौजूद साथी मजदूरों के द्वारा उसे इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया जहां उसका इलाज कराया जा रहा है। जानकारी के अनुसार उक्त मजदूर चांदी थाना क्षेत्र के बिशनपुरा गांव निवासी स्व.जगसरन साह का 40 वर्षीय पुत्र बिगन साह है। वही उक्त मजदूर ने बताया कि रविवार की दोपहर आनंद नगर मोती झील के पास नवनिर्मित मकान का काम चल रहा है जहां पर वह ईट साफ करने का काम कर रहा था। उसी दौरान विषैले सांप ने उसे डस लिया। जिससे उसकी हालत बिगड़ गई। इसके बाद उसे इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल ले गया।

## स्वतंत्रता सेनानी के आँगन से मिट्टी एकत्रित कर परिजनों को किया गया सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भारतीय जनता पार्टी के द्वारा चल रहे राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम मेरी माटी मेरा देश के तहत बड़हरा प्रखंड के त्रिभुवाणी गांव में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सलेमपुर मंडल संयोजक करोड़पति सिंह और संचालन कार्यक्रम के जिला सहसंयोजक के दीपक सिंह ने किया।कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बड़हरा विधायक राघवेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले स्वतंत्रता सेनानी सहित वीर जवानों को सम्मान देने का काम कर रही है। उनके गांव की माटी को संग्रहित कर अमृत वाटिका मे स्थापित कर वीर सपूतों के नामों को स्मारक में लिखाएगा। भोजपुर जिला के विभिन्न जगहो से राम दिनेश यादव के नेतृत्व मे मिट्टी एकत्रित और सम्मान कार्यक्रम चलाया जा रहा है।आज त्रिभुआनी मे बाबु बिहारी सिंह जो 1942 आंदोलन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाए और अंग्रेजो द्वारा प्रताड़ित कर ढाई साल के कारावास की सजा काटे थे। आज उनके पुत्र लब्धप्रतिष्ठित शिक्षाविद श्री सीताराम सिंह और पौत्र इन्द्रभान सिंह को सम्मानित कर मुझे गर्व महसुस हो रहा है। मुझे जानकर खुशी हुई कि मेरे पिताजी स्व. अम्बिका शरण सिंह के प्रेरणा से बिहारी सिंह और त्रिभुआनी के लोगो ने अंग्रेजो को नाको चने चबवा दिए थे। वही बिहारी सिंह के पुत्र राष्ट्रपति पुरस्कृत प्राचार्य सीताराम सिंह ने कहा कि जीवन मे पहली बार नरेन्द्र मोदी जैसे प्रधानमंत्री को देखा जिसने देश के स्वतंत्रता सेनानी और शहीद जवानो को मान-सम्मान दे रहे है। उन्होने आरा सांसद आर के सिंह और विधायक राघवेन्द्र प्रताप सहि की प्रशंसा करते हुए कहा कि दोनो सांसद और विधायक बड़े भाग्य से मिले है जो जिला और बड़हरा का लगातार विकास कर रहे है। पूरे गाने-बाजे के साथ स्वतंत्रता सेनानी बिहारी सिंह के आँगन से मिट्टी उनके पुत्र सीताराम सिंह,पौत्र इन्द्रभान सिंह द्वारा विधायक राघवेन्द्र प्रताप सिंह को सौंपा गया,जिसे कलश मे संग्रहित किया गया और परिजनो को अंगवस्त्र से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को जिला उपाध्यक्ष ई. धीरेन्द्र सिंह,सूर्यकांत पांडेय,राम अवतार सिंह,अमरेन्द्र शक्रवार ने भी संबोधित किया। धन्यवाद ज्ञापन भाजपा नेता इन्द्रभान सिंह ने किया। कार्यक्रम मे जिला मीडिया प्रमुख संजय कुमार सिंह,प्रवक्ता धीरज सिंह,विवेक सिंह आदि सैकड़ो कार्यकर्ता और ग्रामीण थे।

## मां आरण्य देवी मंदिर विकास ट्रस्ट की बैठक मंदिर में हुई

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। शहर के मां आरण्य देवी मंदिर परिसर में रविवार को मां आरण्य देवी मंदिर विकास ट्रस्ट की बैठक हुई, जिसकी अध्यक्षता ट्रस्ट के संरक्षक सह पूर्व एमएलसी लालदास राय ने की। बैठक में मंदिर निर्माण के लिए धन संग्रह समेत अन्य बिन्दूओ पर विस्तार से चर्चा की गई। इस मौके पर वक्ताओं ने ट्रस्ट के सभी सदस्यों को जिम्मेवारी देने, प्रति सदस्य को धन संग्रह के लिए टारगेट देने तथा अगामी 31 अक्टूबर 2023 तक अबतक दोनो बैंक में जमा सहित एक करोड़ राशि एकत्रित करने का लक्ष्य रखा गया। इस दौरान शारदीय नवरात्र को लेकर बिशेष तैयारी एवं निर्माण कार्य में तेजी लाने पर चर्चा की गई। बैठक में ट्रस्टी समेत दो दर्जन श्रद्धालूओं ने मां आरण्य देवी के मंदिर निर्माण से निमित्त प्रतिमाह निश्चित सहयोग राशि दान स्वरूप देने की घोषणा की। पांडेय, संजय मिश्र, अभिषेक मिश्र उर्फ गोलू बाबा, मिथलेश कुशवाहा, गजेन्द्र सिंह, संतोष कुमार सिंह, डॉ. विजय गुप्ता, डॉ. कृष्ण कुमार, अभिषेक कुमार उर्फ बब्लू, जीतू चंद्रवंशी, राजीव रंजन, मालिक यादव, ई.जितेन्द्र कुमार सिंह, अधिवक्ता सुरेश कुमार सिंह, राजू मेहता, रुपेश कुमार, नवीन प्रकाश, जीतू चंद्रवंशी, जय शंकर तिवारी, रितेश कुमार, नरेश कुमार, रवि राज, बब्लू मिश्र, भीम पांडेय, कन्हैया प्रसाद, जय प्रकाश यादव, अवधेश कुमार, सोनू कुमार, राजू गुप्ता, अभय सोनी, बंटी कुमार समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

## व्यवसायी संघ भोजपुर का जिला कमेटी की विस्तारित बैठक सम्पन्न

प्रात : किरण संवाददाता

आरा 26 नवंबर को नागरी प्रचारिणी सभा आरा में होने वाले व्यावसायी संघ भोजपुर का दूसरा सम्मेलन की तैयारी को लेकर जिला कमेटी के विस्तारित बैठक होटल पार्क भ्यू में आयोजित की गई।बैठक की अध्यक्षता श्री सुरेंद्र प्रसाद सिंह,श्री उमाशंकर यादव,श्री रामेश्वर प्रसाद,श्री संजय महाराज सेठ,श्रीनिवास सिंह,निसार अहमद,सुनील नैयर ने संयुक्त रूप से की।बैठक का संचालन कार्यालय सचिव कृष्णरंजन गुप्ता ने की।बैठक में जिला सम्मेलन की तैयारी को लेकर विस्तृत कार्यक्रम पर बातचीत किया गया।जिसमें पूरे जिले भर में व्यवसायियों के बीच सदस्यता अभियान चलाने,बाजार आधारित व्यवसायी संघ गठित कर संगठन का विस्तार करने की योजना बनाई गई।इसके साथ ही जिले के व्यवसायियों के मुद्दे पर आंदोलन की भी रूपरेखा तय की गई।जिलेभर से आए व्यवसायियों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किया जिसमें आमतौर पर यह बात सामने आई की पूरे जिले के बाजारों में पेयजल,रोशनी,सफाई तथा शौचालय का घोर अभाव है जिससे व्यावसायी सहित आम ग्राहकों का इन कठिनाइयों से सामना करना पड़ता है! अधिकांश बाजार में या सीसीटी कैमरा नहीं है या कहीं है तो वह ठीक से काम नहीं कर रहा है जिसके चलते अपराध की घटनाएं बढ़ रही है।दुकानों में चोरी,दुकानदारों की हत्या,लूट आम बात हो गई है।अधिकांश बाजारों में टेम्पू एवं बस स्टैंड नहीं रहने से जाम की स्थिति बनी रहती है।बाजारों में नाला के अभाव के चलते सड़कों पर पानी लगा रहता है! बैठक को संबोधित करते हुए व्यवसायी संघ भोजपुर के जिला सचिव व तरारी विधायक श्री प्रसाद ने कहा कि धर्म से ऊपर उठकर सभी तरह के छोटे-बड़े व्यवसायियों का संगठन है जब से इस संघ का जिले में निर्माण हुआ है यह हम मजबूत हौसला के साथ व्यवसायियों के सवालों को उठाता रहा है अपराधी से लड़ता रहा है? उन्होंने आगे कहा कि गुंडे जेल और हथियारों से नहीं डरते बल्कि यह व्यवसायी हो आम जनता के एकजुटता से डरते हैं आज व्यवसायियों के सामने अनेकों समस्याएं हैं जिसे एक मजबूत संगठन ही लड़ सकता है! बैठक में राजेंद्र यादव,विशाल कुमार,परमेश्वर गुप्ता, उमाशंकर सिंह,त्रिलोकी रजक,राहुल चौरसिया,संजय गुप्ता, विजय भैया,हॉट परमेश्वर गुप्ता,प्रवीण कुमार सिंह, राजेश प्रसाद,मोहम्मद समीर,संतोष जी,आशुतोष कुमार, धीरज कुमार गुप्तेश्वर,हरिहर प्रसाद,राजेश प्रसाद,अब्दुल वहाब,अवध कुमार,गोपाल प्रसाद गुप्ता आदि कई लोग शामिल थे!

## छात्र जदयू "आजाद" वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय के अध्यक्ष पद पर हुए मनोनीत

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। छात्र जनता दल युनाइटेड के प्रदेश अध्यक्ष श्री आनंद मोहन जी ने अपने संगठन का विस्तार करते हुए बिहार के सभी विश्वविद्यालयों में अध्यक्ष पद पर छात्र जदयू के समर्पित कार्यकर्ताओ को मनोनीत कियोइस दौरान आनंद मोहन जी ने वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय के अध्यक्ष पद पर निवर्तमान अध्यक्ष आजाद सिंह पर भरोसा जताते हुए पुनः मनोनीत कियो छात्रों के समस्यायो के निदान के लिए हरदम तत्पर रहने वाले आजाद सिंह ने छात्र जदयू के विश्वविद्यालय अध्यक्ष पद पर रहते हुए अपने कार्यकुशलता से सबको प्रभावित किया है साथ छात्र जदयू को वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय में काफी मजबूत किया है और नई उचाईयों पर ले जाने का काम किया है अध्यक्ष पद पर पुनः मनोनीत किये जाने पर आजाद सिंह ने प्रदेश अध्यक्ष को धन्यवाद देते हुए कहा कि मैं आगे भी छात्रों के हर समस्या के निदान के लिए हरसम्भव प्रयास करेंगे और विश्वविद्यालय में आवाज उठाने का काम करते रहेंगे' साथ ही माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी के नीतियों एवम सिद्धांतों पर चलते हुए छात्र जदयू को मजबूत करने का काम करता रहूँगा और छात्र- छात्राओं के हर योजना को उन तक पहुँचाने का काम करेंगे आजाद सिंह ने अध्यक्ष बनाए जाने पर बधाई देने वाले पूर्व मंत्री श्री भगवान सिंह कुशवाहा, टछउ राधाचरण साह, पूर्व विधायक प्रभुनाथ राम, जिला अध्यक्ष संजय सिंह, प्रदेश महासचिव प्रिंस बजरंगी, पप्पू चौबे, कामेश्वर कुशवाहा, विकास सिंह, रविकांत तिवारी, ऋषिकेश आनंद, सदाशंकर राय, सनी सिंह, सुमित कुमार, भोला सिंह, पवन साह, सूरज सिंह, ब्रजेश सिंह, प्रीतम कुशवाहा, ब्रजेश ठाकुर, मोनू कुशवाहा, आकाश कुशवाहा, शुभम पटेल, उज्जवल सिंह, राहुल, श्याम जी , राजीव ओझा,रोहित ओझा,इमरान आहमद ज़िला सोसल मीडिया, छोटू सिंह, तथा सभी लोगों ने धन्यवाद आभार प्रकट कियो

## फायरिंग करने का लगाया आरोप

प्रात : किरण संवाददाता

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र के बखरी डेढ़ गांव के प्रमोद यादव की पत्नी मंजू देवी ने थाना में आवेदन देकर फायरिंग करने के मामले में प्रार्थमिक दर्ज. की गुहार लगाई है। आपसी विवाद में हुई मारपीट की घटना में एक पक्ष के लोगों ने मेरे दरवाजे पर आकर हवाई फायरिंग कर दहशत का माहोल कर दिया। जिसकी सूचना पुलिस को दी गई। पुलिस सूचना पर पहुंचकर मेरे दरवाजे से एक पीलेट बरामद किया है। वहीं पुलिस ने एक आरोपी को भी गिरफ्तार कर लिया है । गिरफ्तार आरोपी की पहचान राजू यादव के पुत्र चंदन कुमार के रूप में हुई है। वहीं थानाध्यक्ष गौतम कुमार ने बताया कि मामले में एक को गिरफ्तार किया गया है। वहीं दिए आवेदन के आधार पर आगे की करवाई की जा रही है।

## भगवान के साथ जिवंत प्रेम का प्रतीक है झुला : डॉ शंभू

प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर जिला विभूतिपुर प्रखंड क्षेत्र के साख मोहन बड़ी ठाकुरबारी में पूर्व की भांति इस वर्ष भी सावन माह के दितीय पक्ष में मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम अवध बिहारी के झुलनोत्सव कार्य कर्म का प्रारंभ हर्षोल्लास के वातावरण में किया गया। प्रथम दिन वन झूला के नाम पर शुरूआत की जाती है। इस अवसर पर भगवान को कदंब बृक्ष के नीचे आसन देकर आसन को पेड़ से बांध कर झुलाने की परंपरा रही है, जो सदियों पुरानी है। झुला का प्रारंभ महंत राम भजन दास ने शंखनाद के ध्वनी के साथ किया जहां बेंड बाजा वाले ने अपना बैंड बाजा बजा कर भगवान का स्वागत किया और भक्तों ने झुला गीत एवं भजन गाकर। इस अवसर पर सनातन धर्म संस्कृति परिषद के अध्यक्ष डॉ शंभू कुमार ने कहा कि भगवान के झूला महोत्सव कार्यक्रम की शुरूआत पावन भूमि अयोध्या के मणि पर्वत से प्रारंभ हुआ और देश के सभी राम जानकी एवं राधा कृष्ण के मंदिरों में आयोजित होने लगा। ऐसे मां अपने बच्चों को शुरूआती दौड़ से ही अपनी बाहों में बच्चों को झुलाती है। भगवान के श्री विग्रह को झुलाने की परंपरा का आयोजन अयोध्या में ही संतों महंतों के द्वारा अखाड़ा परिषद के द्वारा किया गया जहां मणि पर्वत पर भगवान को लाकर झुलाना और शोभा यात्रा निकाली जाती रही है। यह भगवान और भक्त के बिच असीम प्रेम व सद्धा का पर्व है जो सावन माह के द्वितीय पक्ष के तृतीया तिथि से प्रारंभ होकर पुर्णिमा के रात्रि में समाप्त होता है शाश्त्रों में ऐसी मान्यता है कि झुलनोत्सव कार्य में शामिल होने से कष्टों का निवारण होता है। बदलते परिवेश में अब यह परंपरा बंद होने के कगार पर है गिने चुने स्थान ही इस परंपरा का निर्वहन करते आ रहे हैं क्यूंकि नब्बे प्रतिशत मंदिरों में कोई महंत नहीं है। इस अवसर पर भक्तों व किर्तन मंडली ने झुला लगें मणि पर्वत पर झुले अवध बिहारी ना के स्वर सुनकर भाव बिभोर हो गए। इस अवसर पर पवित्र सिंह, आत्मा राम सिंह, बम बम सिंह, दिनेश महतो, हिरा सिंह, रेशमी सिंह, शतिश सिंह, उमेश सिंह आदि दर्जनों लोग शामिल हुए।

## आर एल मेमोरियल हॉस्पिटल में दो जटिल प्रकार के सर्जरी केस को ऑपरेट किया

प्रात : किरण संवाददाता

आरा शहर के मशहूर सर्जन डॉक्टर विजय गुप्ता ने रविवार को अपने आरा स्थित अस्पताल आर एल मेमोरियल हॉस्पिटल में दो जटिल प्रकार के सर्जरी केस को ऑपरेट किया। पहला मामला बक्सर के एक 6 साल के छोटे बच्चे द्वारा सिक्का निकले जाने का है दरअसल बक्सर शहर का रहने वाला 6 साल का बच्चा अनुराग अपने घर में एक साथ खेलने के क्रम में 2 रुपए के दो सिक्के निगल गया। जब उसके परिजनों को इस मामले की जानकारी मिली तो उन्होंने स्थानीय शहर यानी कि बक्सर के चिकित्सकों ने संपर्क किया, लेकिन उसका उपचार नहीं हो सका ऐसे में आनन-फानन में उसके परिजन बच्चे को लेकर आरा शहर के मशहूर सर्जन डॉक्टर विजय कुमार गुप्ता के यहां है जहां डॉक्टर गुप्ता ने एंडोस्कोपी की मदद से बच्चे के में गले में फंसे दोनों सिक्कों को सफलतापूर्वक ऑपरेट करके बाहर निकाला। महज 15 मिनट के इस ऑपरेशन के बाद मरीज की हालत पूरी तरह से स्वस्थ है और उसे डॉक्टर गुप्ता द्वारा महज 1 घंटे बाद ही अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। वही सर्जरी से जुड़ा दूसरा मामला सुशीला देवी नाम की एक महिला मरीज से जुड़ा है जो की करीब 70 साल की है। दौलतपुर की रहने वाली इस महिला को गंभीर स्थिति में अस्पताल में भर्ती कराया गया था। दरअसल गॉल ब्लैडर का एक बार 20 साल पहले ऑपरेशन किया गया जिसके बाद भी दोबारा पित की नली में एक स्टोन जा फंसा जिससे मरीज जॉन्डिस कर शिकार हो गई थी। डॉक्टर गुप्ता के पास जब यह मरिज पहुंची तो वह काफी परेशानी में थी हालांकि डॉक्टर गुप्ता ने इस चैलेंज केस लेते हुए न केवल महिला का ऑपरेशन किया बल्कि महज 30 मिनट बाद ही मरीज होश में आ गई और वो अब पूरी तरह से स्वस्थ है। आपको बता दें कि इस महिला का ऑपरेशन डॉक्टर बीपी यादव द्वारा किया गया था। ये केस अपने मायने में खास इसलिए भी था क्योंकि 20 साल पहले खुले पेट का ऑपरेशन इंडोस्कोपी से किया गया। इंडोस्कोपी से किए गए ये दोनों ऑपरेशन पूरी तरह से सफल रहे

## सावन मिलन समारोह सम्पन्न

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। एन वी संगिनी क्लब के द्वारा आज सावन मिलन समारोह का आयोजन शहर के कटहरीबाग स्तिथ नूतन निकेतन में हुआ । कार्यक्रम का उद्घाटन जिप अध्यक्षा जयमित्रा देवी ने दीप प्रजवलित कर किया । जिप अध्यक्षा ने कहा कि सावन हरियाली और सुख समृद्धि का महीना है। सावन मिलन समरोह में कई तरह के कार्यक्रम जैसे नृत्य, म्यूजिकल चेयर,सावन क्वीन इत्यादि का आयोजन किया गया । जिसमे सावन क्वीन- अर्चना प्रताप म्यूजिकल चेयर- रूबी ब्याहुत पेपर डांस- नूतन देवी एवं डॉ रेणु सिंह विजयी रही। इस कार्यक्रम का आयोजक अभिनेत्री वैष्णवी थी । इस मिलन समरोह में अमिता सिंह, मीना सिंह, पूजा वर्मा, कुंती देवी, डॉ रेणु सिंह,नूतन देवी, अर्चना प्रताप,रीना, रूबी ब्याहुत, दीप्ति प्रताप, रिमझिम वर्मा , समेत सैकड़ों महिला शामिल रही ।

## रोटरी सारण ने लगाया निःशुल्क जांच शिविर, इनर व्हील क्लब ऑफ सारण ने दिया सहयोग, 256 लोगो की गई जांच

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। रोटरी सारण क्लब द्वारा रविवार को सिग्नेचर प्रोजेक्ट के तहत निशुल्क स्वास्थ्य जॉच शिविर का आयोजन मोहन नगर 44 नंबर ढाला के समीप संयोजक डॉ ओम प्रकाश श्रीवास्तव के निवास स्थान पर किया गया।जिसमें दंत रोग विशेषज्ञ डॉ अभय कुमार सिंह,नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ प्रज्ञा सिंह,स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ रश्मि मिश्रा,जनरल फिजिशियन डॉ ओमप्रकाश श्रीवास्तव,शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ ब्रजेश मिश्रा ने अपना सहयोग प्रदान किया। कुल 256 मरीज का निशुल्क उपचार किया गया तथा दवा एवं चश्मा का वितरण किया गया।चिकित्सको ने जांच कराने पहु

## संक्षिप्त खबरें

### मशरक पुलिस ने ट्रैक्टर पर लदे भारी मात्रा में अंग्रेजी शराब पकड़ा

एक बाइक के साथ चालक गिरफ्तार

मशरक । मशरक पुलिस ने गशती के दौरान कर्णकुदरिया रेलवे नहर पुल के पास गुप्त सूचना के आधार पर शनिवार के रात्रि में ट्रॉली सहित ट्रैक्टर को जांच के लिया रोका। ट्रैक्टर की ट्रॉली में तहखाना बनाकर भारी मात्रा में अंग्रेजी शराब जांच के दौरान पाया गया। ट्रैक्टर को पुलिस द्वारा जब्त करने को देख गाड़ी के साथ बाइक से चल रहे कारोबारी बाइक छोड़ फरार हो गया। पुलिस ने बाइक एवम ट्रैक्टर ट्रॉली के साथ चालक को गिरफ्तार कर मशरक थाना लाया। ट्रैक्टर के ट्राली में तहखाना बनाकर रखे गए 56 कार्टन शराब मिला जिसका मूल्य लाखो रुपया बताया गया है । छापेमारी दल का नेतृत्व सअनि रंजित कुमार ने किया। हालांकि संवाद प्रेषण तक प्राथमिकी दर्ज नहीं हो पाई है पुलिस तहकीकात में जुटी है । इधर शराब कारोबार छोड़ चुके कई लोग थाना का चक्कर लगा पता करने में जुटे है , कही पुलिस केस में उनका नाम भी न आ जाए।

### बाइक से गिरकर वृद्ध महिला जख्मी

आरा। आरा-अरवल मुख मार्ग पर जिले के उदवंतनगर थाना क्षेत्र के चक्रदह एवं बेलाउर गांव के बीच रविवार की दोपहर बाइक से गिरकर एक बृद्ध महिला गंभीर रूप से जख्मी हो गई। जिसके बाद परिजन द्वारा उन्हें इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया जहां उनका इलाज कराया जा रहा है। जानकारी के अनुसार जख्मी बृद्ध महिला सहार थाना क्षेत्र के वंशीडिहरी गांव निवासी जनेश्वर पासवान की 60 वर्षीया पत्नी शांति देवी है। इधर जख्मी बृद्ध महिला के बेटे रंजीत कुमार ने बताया कि रविवार की दोपहर वह अपनी मां के साथ बाइक से अपने गांव से बेलाउर गांव अपनी बहन आनंदी देवी के घर आ रहा था। उसी दौरान चक्रदह एंव बेलाउर गांव के बीच उसकी मां असंतुलित होकर बाइक से गिर पड़ी और गंभीर रूप से जख्मी हो गई। जिसके बाद परिजन द्वारा उन्हें इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया जहां उनका इलाज कराया जा रहा है।

### हिंदू जागरण मंच आरा नगर की बैठक

हिंदू जागरण मंच आरानगर की आज बैठक बड़ी मठिया आरा में संपन्न हुई जिसमें सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे इस बैठक में हिंदू जागरण मंच के विस्तार एवं जिले में हिंदू समुदाय के लोगों के विपरीत चल रही गतिविधियों के संदर्भ में बातें हुई , बैठक के अंत में हिंदू युवाओं के बीच हनुमान चालीसा का पाठ कर 151 हनुमान चालीसा की पुस्तक का वितरण किया गया । बैठक में हिंदू जागरण मंच के प्रदेश सह संयोजक सोना लाल जी की उपस्थिति रही इस बैठक की अध्यक्षता ईलू गुप्ता ने की बैठक का संचालन नगर संयोजक पवन सत्यार्थी ने किया बैठक में जिला संयोजक विजय कुमार हिंदू , जिला मंत्री संजय भारती, जिला कोषाध्यक्ष ,अरुण कुमार,जिला मीडिया प्रभारी आदित्य सोनी, नगर महामंत्री मुन्ना बजरंगी, नगर उपाध्यक्ष आदित्य राज चंदन ,दुर्गेश सिंह, मोहन कुमार ,ऋषभ श्रीवास्तव हरे राम , सोनू, कुंदन, शुभम, प्रवीण बजरंगी ,प्रिंस सचदेव, राजवीर, सोनू,गोलू सिंह,राहुल ,आकश केशरी , शिवम गौतम वरुण सज्जन, राहुल, गोलू,संजय, गौतम इत्यादि सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित रहे एवं सदैव हिंदू हित के कार्यों को हिंदू जागरण मंच के साथ जुड़ के करने का निश्चय किया।

# मानवाधिकार सामाजिक सुरक्षा जन कल्याण संघ द्वारा चलाया गया जागरुकता अभियान

प्रात : किरण संवाददाता

रोहतास पूर्व मध्य रेल के पंडित दीनदयाल उपाध्याय मंडल के रोहतास जिले के डेहरी ऑन सोन रेलवे स्टेशन पर यात्रियों तथा रेलवे के सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए जागरूकता अभियान चलाया गया।

यह अभियान रेलवे सुरक्षा बल के प्रभारी निरीक्षक रामविलास राम के नेतृत्व में रोहतास जिले के डेहरी ऑन सोन रेलवे स्टेशन पर आने - जाने वाली ट्रेनों व सभी प्लेटफार्म पर बैठे यात्रियों के बीच आरपीएफ व मानवाधिकार सामाजिक सुरक्षा जन कल्याण संघ के द्वारा रेल यात्रियों के बीच जन -जागरूकता अभियान चलाया गया।

डेहरी ऑन सोन रेलवे स्टेशन पर आरपीएफ व मानवाधिकार के अध्यक्ष संजीत कुमार गुप्ता एवं टीम के द्वारा लाउड हेलर,बैनर एवं पंपलेट के माध्यम से गाडियों में अनावश्यक रूप से चेन पुलिंग करने वालो को आगाह किया गया व इससे होने वाले नुकसान के बारे में यात्रियों को जागरूक किया गया।

वहीं ट्रेनों में अंजान व्यक्ति द्वारा दिए गए खाद्य पदार्थों को नही खाने को ले बताया गया।तथा बच्चों व मानव तस्करी को रोकने को ले आरपीएफ को सहयोग करने को कहा गया। वहीं, अनाधिकृत रूप से रेलवे ट्रैक पर नहीं करने के दौरान कई लोगों की जानें गई हैं।ऐसे में रेलवे द्वारा अधिकृत रास्ते का इस्तेमाल करने को कहा गया।

अपील की गई की वे खुद भी रेलवे के नियम का पालन करने के साथ दूसरे व्यक्ति को भी पालन करने के लिए प्रेरित करे। ताकि आपके साथ अन्य यात्री की भी यात्रा सुखद रहे।

स्टेशन के सभी प्लेटफार्म पर यात्रियों के बीच घूम घूम कर बताया गया की यात्रा के दौरान किसी भी प्रकार के समस्या होने पर रेलवे के टॉल फ्री नंबर 139 पर संपर्क करने के लिए जागरूक किया गया। इसके अंतर्गत यात्रियों को ट्रेन में या स्टेशन परिसर में कोई भी लावारिस या संदिग्ध वस्तुओं को देखकर उसकी सूचना तुरंत रेलवे सुरक्षा बल को या टॉल फ्री नंबर 139 पर देने को बताया गया।साथ ही ट्रेनों की पायदान पर यात्रा करने एवं ट्रेन पकड़ने के लिए रेल की पटरी से चढ़ने व उतरने को कानून का उल्लंघन बताया गया। इसके अलावा ट्रेनों में उचित टिकट लेकर यात्रा करने तथा ट्रेनों में पत्थरबाजी नहीं करने का सुझाव दिया गया।

इस अभियान में मानवाधिकार सामाजिक सुरक्षा जन कल्याण संघ के राष्ट्रीय सलाहकार नीतीश कुमार, सूचना व तकनीक प्रभारी प्रताप कुमार गुप्ता,ऋतुराज उपाध्याय, विकास कुमार,सुनीता देवी,सुदर्शन सिंह, एजाज अहमद ,वही रेलवे सुरक्षा बल के उप निरीक्षक मनोज कुमार,निशांत कुमार,सहायक उपनिरीक्षक एमके चौधरी,प्रधान आरक्षी शैलेश कुमार,संतोष कुमार पासवान,आरक्षी सम्मी कुमार, एमके दूबे मौजूद रहें।

# रोहित राज 19 साल की उमर में बने इंडियन यंगेस्ट साइबर सिक्युरिटी रिसर्चर एवं एथिकल हैकर

- डार्क वेब, फिक्सिंग, वेब सिक्युरिटी और भी इत्यादि जैसे चीजों पर काम किया

प्रात : किरण संवाददाता

अगर आपके अंदर कुछ करने का जज्बा है तो कोई भी चीज आपके रास्ते में रुकावट नहीं बन सकती। संसाधनों के अभाव में भी आप बहुत कुछ कर सकते है। इस बात को पटना के रोहित राज ने साबित किया है। रोहित राज का जन्म 16 नवम्बर 2003 में बिहार के पटना जिले में हुआ था। जब वो 15 वर्ष के थे तब उन्हें गैजेट्स तथा कंप्यूटर्स इलेक्ट्रॉनिक्स जैसी चीजों में बहुत रुचि थी। रोहित बताते है कि स्कूल की ही समय से उन्हें ड्रोन्स , रोबोटिक्स और आदि जैसे चीजों इंटरेस्ट आया और उन्होंने उसपर रिसर्च अथवा काम करना शुरू कर दिया। उन्होंने बहुत सारे प्रोजेक्ट्स के ऊपर काम किया और समाज की भी मदद की अपने प्रोजेक्ट्स से। इन्होंने कोविड के दौर में एक वेब एप्लीकेशन बनाकर बिहार के जरूरत मंदो की सहायता की थी और सिर्फ 6 दिनों में ही इनके वेब एप्लीकेशन के ऊपर 9 हजार से ज्यादा लोगो ने रजिस्ट्रेशन किया था। लेकिन बीतते वक्त के साथ रोहित का इंटरसेट टेक्नोलॉजी के प्रति और भी बढ़ता गया। फिर एक समय आया जब इनका इंटरेस्ट साइबर सिक्युरिटी एवं एथिकल हैकिंग में आया। रोहित बताते है की जब इन्होंने प्लेयर, डार्कवेब, ब्लाकहैट जैसी मूवी देखी तब इनका इंटरेस्ट साइबर सिक्युरिटी हैकिंग के प्रति आया और उन्होंने सोचा कि इन्हे भी हैकिंग की दुनिया में कदम रखनी चाहिए। रोहित बताते है की जब वो 11 वी कक्षा में पढ़ते थे तब वो ड्रॉन्स के साथ साइबर सिक्युरिटी के ऊपर विडियोज अथवा हैकिंग के बारे में जानकारी निकालते रहते थे। जिसमें इन्होंने डार्क वेब, फिक्सिंग, वेब सिक्युरिटी और भी इत्यादि जैसे चीजों के बारे में जाना और इनपर काम किया। इसी कारण इनका पढ़ाई में मन नहीं लगा और स्कूल एक्डेमिक्स में भी दिक्कत आई और उनके परिजनों और अध्यापक ने बहुत डाटा। लेकिन कहते है न की कोशिश करने वालो की कभी हार नही होती, रोहित ने हार नहीं मानी और ठान लिया की मुझे अब ड्रोनस और हैकिंग में ही अपने करियर बनाना है। बस फिर क्या था रोहित आगे बढ़ते रहे और साइबर सिक्युरिटी रिसर्चर अथवा एक एथिकल हैकर बन गए। रोहित की उम्र मात्र 19 साल है और यह अन्य प्रकार के टेक्नोलॉजी कांफ्रेंस तथा इवेंट्स में गेस्ट स्पीकर भी रह चुके है।

# कुलपति ने किया छात्राओं के पूर्व गणतंत्र दिवस परेड के प्रशिक्षण का उद्घाटन

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय ।रविवार को प्रशिक्षण का प्रथम दिन था। कुलपति ने छपरा स्थित महाविद्यालय की छात्राओं के प्रशिक्षण के लिए रामजयपाल महाविद्यालय को चुना है।आज के प्रशिक्षण में राजेंद्र महाविद्यालय से 7 वालंटियर आयीं,पी सी साइंस महाविद्यालय से 2,जे पी एम से 6,बीडीएसएम महाविद्यालय से 2,गंगासिंह महाविद्यालय से 6,जगदम महाविद्यालय से 3,जगलाल चौधरी महाविद्यालय से 2,कुल 28 छात्रा वालंटियर उपस्थित हुईं। कुलपति 7.26 बजे रामजयपाल महाविद्यालय में आ गए थे।राम जयपाल महाविद्यालय के दो एन सी सी के कैडेट और जगदम महाविद्यालय की रुपाली नाम की एनसीसी की कैडेट प्रशिक्षण देने का कार्य कर रही थीं। विदित हो कि इस बार पूरे भारत से 200 एनएसएस छात्रा वालंटियर का ही चुनाव गणतंत्र दिवस परेड के लिए किया जायेगा।इसके चयन की प्रक्रिया बहुत कठिन होती है।पहले विश्वविद्यालय स्तर पर,राज्य स्तरीय चयन के बाद राष्ट्रीय स्तर का चयन होता है।चयन की बारीकियों को ही देखने एवं कमियों को दूर करने के लिए ही इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को रखा गया है। सीवान की छात्रा वालंटियर का डीएवी एवं जेड ए इस्लामियां महाविद्यालय में प्रशिक्षण होगा एवं गोपालगंज के सभी वालंटियर का गोपेश्वर महाविद्यालय हथुआ में प्रशिक्षण होगा।पूर्व समन्वयक राष्ट्रीय सेवा योजना डॉ वी वी त्रिपाठी का मार्गदर्शन भी सभी छात्रा वालंटियर को मिल रहा है।एनएसएस के प्रति उनकी निष्ठा की कुलपति ने भूरि भूरि प्रशंसा किया।इस अवसर पर प्रोफेसर हरिश्चंद्र समन्वयक राष्ट्रीय सेवा योजना,प्रोफेसर इरफान अली प्राचार्य ,विश्वविद्यालय के सेक्सन आफिसर डॉ अमित प्रकाश ,देवेश,राज कुमार,विकास, ड़ॉ ऐमन रियाज कार्यक्रम पदाधिकारी एनएसएस आदि मौजूद थे। सुमन कुमारी,अंजली कुमारी, खुशी,संन्ध्या , सोविना, अमृता,सायमा परवीन, अनुप्रिया, एकता, सुलावति , चंचल, ज्योती, पूजा, प्रीती, मनू, नेहा, तान्या, निधि, दिव्या, रोमी,राशी , साधना, शालिनी,दिव्यांका,ईसा,रुपाली,प्रीति नेहा ने प्रशिक्षण में भाग लिया। कार्यक्रम समाप्त होने पर प्रोफेसर हरिश्चंद्र समन्वयक राष्ट्रीय सेवा योजना ने कुलपति प्रोफेसर फारूक अली,प्राचार्य रामजयपाल महाविद्यालय प्रोफेसर इरफान अली,पूर्व समन्वयक ड़ॉ विद्यावाचस्पति त्रिपाठी और डॉ अमित प्रकाश ,देवेश,राजकुमार ,विकास सबको धन्यवाद दिया। कुलपति प्रत्येक दिन प्रशिक्षण में उदारतापूर्वक आने की कृपा करेंगे । ऐसा आश्वासन दिये हैं।

# राष्ट्र भक्तों बलिदानियों शहीदों एवं स्वतंत्रता सेनानियों की भूमि है सारण -जनक

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका थी बाबू परमात्मा सिंह एवं कपिल देव बाबू की -रणजीत कुमार सिंह आज भारतीय जनता पार्टी द्वारा चलाए जा रहे मेरा माटी मेरा देश कार्यक्रम के अंतर्गत एकमा प्रखंड के टेघडा गांव में स्वतंत्रता सेनानी परमात्मा बाबू एवं कपिल देव बाबू के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम मेरा माटी मेरा देश शहीदों वीरो स्वतंत्रता सेनानियों का वंदन अभिनंदन एवं उनके आंगन की मिट्टी अमृत कलश में लेकर दिल्ली में भेजने एवं उनके परिवार वालों को सम्मानित करने हेतु भारतीय जनता पार्टी माझी पश्चिम के मंडल अध्यक्ष विभूति नारायण तिवारी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी के नेता तरैया के विधायक भाजपा के मुख्य सचेतक जनक सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सारण की भूमि ऋषि मुनियों वीरो शहीदों बलिदानियों स्वतंत्रता सेनानियों की भूमि है ऐसे वीरों एवं उनके परिवार वालों का भाजपा सम्मान कर रही है, ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों का पर संपूर्ण देशवासीयो को नाज है। जिला अध्यक्ष रणजीत कुमार सिंह ने कहा बाबू परमात्मा सिंह एवं बाबू कपिल देव सिंह पर पुरे सारण को गर्व है भाजपा पूरे देश में शहीदों एवं स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान में मेरा देश मेरे माटी कार्यक्रम कर रही है जिसमें हर शहीद एवं स्वतंत्रता सेनानी की हर जाकर सम्मान अभिनंदन करना है आज के इस कार्यक्रम में भाजपा महामंत्री एवं एकमा विधानसभा प्रभारी विवेक कुमार सिंह, उपाध्यक्ष चैतेंद्र नाथ सिंह, स्वतंत्रता सेनानी के परिजन भूपेंद्र सिंह, राजेंद्र सिंह, बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता ग्रामीण युवा मोर्चा के कार्यकर्ता पर उपस्थित थे।

# ओम शिव मंदिर में रुद्राभिषेक एवम अष्टयाम का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

मकेर ( सारण) सावन के सोमवार को मकेर के ओमशिव मंदिर में रुद्राभिषेक एवम अखण्ड अष्टयाम का आयोजन किया गया है ।आयोजन को लेकर आज रविवार की सुबह गांव के युवक युवती एवम महिलाओं ने रेवघाट गंडक नदी से जल भरकर अपने शर पर रखकर चांदनी चौक ,मकेर बाजार होते हुए यज्ञ स्थल ओम शिव मंदिर पहुँचे । जलभरी को लेकर काफी संख्या में लोग सरीक होकर गाजे बाजे हाथी घोड़ा एवम नगारे के साथ जुलूस निकालकर नगर परिक्रमा करते हुए यज्ञ स्थल तक पहुच ,यज्ञ का शुभारंभ किया गया ।,पण्डितचार्य सुदीश मिश्रा ने बताया कि सोमवार की सुबह से रुद्राभिषेक होने के पश्चात 24 घंटे का अष्टयाम का आयोजन किया गया है जिसका बिधिवत शुरूआत शुरू हो चुका है ।इस मौके पर भाजपा पूर्व जिलाध्यक्ष रामदयाल शर्मा मुखिया पति संजीत राय समाज सेवी सुनील राय निरंजन शर्मा सुबोध कुमार शर्मा अशोक कुमार सोनी सुरेंद्र सोनी सरपंच पति रबिन्द्र राय सुनीता देवी पुष्पा देवी सहित हजारो की संख्या में लोग उपस्थित थे ।

# संघ ने धरना को लेकर बीडीओ को सौंपा ज्ञापन

प्रात : किरण संवाददाता

इसुआपुर । प्रखंड मुखिया संघ की बैठक प्रखंड मुखिया संघ की अध्यक्ष सह छपियां पंचायत की मुखिया बीना देवी की अध्यक्षता में हुई। जिसमें आगामी 22 अगस्त को अपनी विभिन्न मांगों से संबंधित प्रखंड मुख्यालय पर धरना देने को लेकर बीडीओ के नाम ज्ञापन सौंपा गया। जिसमें ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों के वेतन भत्ता बढ़ाकर मुखिया को 10 हजार,उप मुखिया को 7 हजार तथा वार्ड सदस्य को 5 हजार रुपए किए जाने, मनरेगा में मजदूरी बढ़ाई जाने,अपराधियों द्वारा हत्या कर दिए जाने वाले मुखिया के आश्रित को 50 लाख रुपए मुआवजा देने तथा स्पीडी ट्रायल के माध्यम से दोषियों को अभिलंब सजा दिलाने, मुखिया की सुरक्षा हेतु आवश्यकता अनुसार उनकी मांग पर आर्म्स का लाइसेंस देने, कबीर अंत्येष्टि योजना को लागू करने, नल-जल योजना के कार्य को पीएचडी से हटकर पुनः वार्ड क्रियान्वयन एवं प्रबंधन समिति को सौंपे जाने, ग्राम पंचायत को पुनः जन्म, मृत्यु प्रमाण पत्र बनाए जाने का अधिकार देने समेत 19 सूत्री मांगे शामिल हैं।

# आई-ग्लैम मिस एंड मिसेज गुलाब-परी बिहार 2023 छपरा ऑडिशनः एक शानदार सफलता

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। डीपीएस जीनियस स्कूल में आयोजित डाबर गुलाबरी आई-ग्लैम मिस एंड मिसेज गुलाब-परी बिहार 2023 छपरा ऑडिशन में छपरा शहर ने प्रतिभा और सुंदरता का असाधारण प्रदर्शन देखा। कार्यक्रम शाम 4 बजे शुरू हुआ और इसमें मिस्टर, मिस ,मिसेज और बच्चो कि श्रेणियों में उत्साही प्रतियोगियों की भारी भागीदारी देखी गई। ऑडिशन ने छपरा की असाधारण प्रतिभा को प्रदर्शित किया। छपरा ऑडिशन सुंदरता और अनुग्रह का एक त्रुटिहीन मिश्रण था, जिसमें प्रतियोगियों ने अपने उल्लेखनीय कौशल और करिश्मा का प्रदर्शन किया। दर्शकों की प्रतिक्रिया उल्लेखनीय से कम नहीं थी, जो आयोजन की सफलता को रेखांकित करती है। सौंदर्य और कल्याण में एक विश्वसनीय नाम, डाबर ने आयोजन की जीत सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उपस्थित लोगों को डाबर उत्पादों का एक विशेष नमूना पेश किया गया, जिससे समग्र अनुभव बेहतर हुआ। कार्यक्रम के निर्बाध आयोजन के पीछे की मास्टरमाइंड डॉ. रेनू कुमारी यह सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रशंसा की पात्र हैं कि प्रत्येक विवरण को त्रुटिहीन ढंग से निष्पादित किया गया। इस कार्यक्रम में चीफ गेस्ट श्री मति सावित्री देवी, प्रोफेसर डॉ. उदय शंकर ओझा, अंग्रेजी विभाग, जेपी विश्वविद्यालय, छपरा, विशिष्ट अतिथि श्री मति किरण ओझा , अभिनेत्री वैष्णवी, आई ग्लैम की फाउंडर देवजानी मित्रा, एवम डॉक्टर जुली कुमारी की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिन्होंने इस अवसर पर भव्यता का एक अतिरिक्त स्पर्श जोड़ा। कऋछअट के दूरदर्शी संस्थापक और निदेशक देवजानी मित्रा ने छपरा के लोगों की अविश्वसनीय भागीदारी को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने टिप्पणी की, ₹छपरा के प्रतिभागियों द्वारा दिखाए गए उत्साह और शिष्टता को देखकर दिल खुश हो गया। उन्होंने स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया है कि उनकी प्रतिभा की कोई सीमा नहीं है और वे सर्वश्रेष्ठ के बराबर खड़े हैं। ऑडिशंस में डाबर गुलाबरी की तरफ से कुछ गतिविधियां भी करवाई गई जिसके बाद दर्शको में डाबर गुलाबरी के तरफ से कुछ तोहफे भी बाटे गए। डाबर गुलाबरी आई-ग्लैम मिस एंड मिसेज गुलाब-परी बिहार 2023 छपरा ऑडिशन ने एक रोमांचक यात्रा के लिए मंच तैयार कर दिया है। इस कार्यक्रम ने न केवल सुंदरता और प्रतिभा का जश्न मनाया बल्कि छपरा की जीवंत भावना को भी प्रदर्शित किया। ऐसी शानदार सफलता के साथ, इस क्षेत्र की सुंदरता और सुंदरता का भविष्य अविश्वसनीय रूप से आशाजनक दिखता है।

# बसपा द्वारा एक दिवसीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर का हुआ आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

सासाराम। खबर रोहतास जिले के कोचस से हैं जहां कोचस के एक निजी लॉज में बहुजन समाज पार्टी का एक दिवसीय कार्यकर्ता सम्मेलन सह प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि बसपा बिहार प्रदेश प्रभारी अनिल कुमार एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रदेश महासचिव उदय प्रताप सिंह सहित अन्य अतिथि मौजूद रहे। इस दौरान कार्यकताओं को पटना के बापू सभागार में 25 अगस्त को बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय को-ऑर्डिनेटर आकाश आनंद के आगमन को लेकर कार्यकताओं को हजारों की संख्या में जुटकर कार्यक्रम को सफल बनाने की बात कहीं। वहीं इस दौरान बिहार बसपा प्रदेश प्रभारी अनिल कुमार ने बिहार सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि बिहार में कानून व्यवस्था समाप्त हो गई है जहां आए दिन पिछड़ों एवं दलितों की हत्या हो रही है और इस सरकार को संवेदना नहीं है घटनाएं तो घटी रही है लेकिन उसके परिवार को न्याय भी नहीं मिल रहा है। उन्होंने कहा कि जेल में बंद अपराधी जो डीएम के हत्या किये थे वैसे अपराधी को जेल से छुड़ा देती है। यह सरकार सिर्फ धन लूटने का काम कर रही है और गरीबों को रुलाने का काम कर रही है।

# राजीव गांधी की 79 वीं जयंती पर पुष्पांजलि सभा का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा । जिला कॉंग्रेस कार्यालय शहीद भवन आरा मे जिलाध्यक्ष आदरणीय अशोक राम की अध्यक्षता मे, भारत रत्न, देश के पूर्व प्रधान मंत्री, आधुनिक भारत के शिल्पकार, स्व राजीव गांधी जी की 79 वी जयंती पर पुष्पांजलि सभा का आयोजन किया गया । पुष्पांजलि सभा मे उपस्थित कार्यकर्ताओ को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष आदरणीय अशोक राम ने कहा की स्व राजीव जी देश का ही नही बल्की पुरे विश्व के नेता थे, उनके प्रधानमंत्रित्व काल मे देश का चौमुखी विकास हुआ। उनके प्रधानमंत्रित्व काल मे ही त्रिस्तरीय पंचायतीराज का स्थापना हुआ, वे देश मे त्रिस्तरीय पंचायतीराज, एवं कम्प्यूटर क्रान्ति के मसीहा, डिजिटल इण्डिया आर्किटेक्ट और सुचना तकनीक एवं दूरसंचार क्रान्ति के जनक के रूप मे याद किए जाते है स्व राजीव जी उच्चस्तरीय शिक्षा एवं नवोदय विधालय की स्थापना कर शिक्षा जगत मे क्रान्ति लाए, उनहोने आई टी एवं टेलीफोन के जनक के रूप मे जाने जाते है, उनके प्रधानमंत्रित्व काल मे देश विकास मे नया नया कीर्तिमान स्थापित किए जिससे भारत विश्व पटल पर महाशक्ति सम्पन्न देश बना ।राजीव जी सहनशील एवं निर्मल स्वभाव के धनी ब्यक्ति थे। उनके इसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए देश हमेशा याद करता रहेगा।,वे देश की एकता और अखंडता के लिए अपना जीवन की कुबार्नी दिए आज उनके जयंति पर हम सब संकल्प लेते है की उनके द्वारा बताए गए रास्ते पर चलकर देश की एकता और अखंडता की रक्षा करते रहेगे, आज देश की राजनीति लोकतन्त्र और संविधान को खत्म करने पर तुली हुई है, आज सब भ्रष्टाचार का संरक्षक मोदी सरकार है। हाल ही मे सी ए जी का रिपोर्ट निकला है मोदी सरकार मे कइ भ्रष्टाचार का उजागर हुआ है लेकिन मोदी सरकार कोई कारवाई नही करेगी वंशवाद पर मोदी सरकार अपने भाजपा के गिरेबान मे झाकना चाहिए ,अगर भ्रष्टाचार और वंशवाद उनके दल और सरकार मे नही है तो देश की जनता को उपदेश देना चाहिए, नही तो वंशवाद और भ्रष्टाचार पर मोदी सरकार को नैतिकता के आधार पर नही बोलना चाहिए , क्योकि वंशवाद और भ्रष्टाचार की जननी है मोदी सरकार। पुष्पांजलि सभा मे तीर्थ नाथ दुबे, अरूण सिंह, राजेन्द्र ओझा, श्रीधर तिवारी, बीरेन्द्र मिश्रा,अशोक यादव पन्नग कुमार त्रिपाठी, प्रमोद राय, मो चांद, नवीन कुमार सत्य प्रकाश राय, रतन धमालिया, रामानुज दुबे, आशुतोष ठाकुर, रामबचन तिवारी, देव कुमार सिंह, नागेन्द्र मिश्रा, krish कान्त नर्मदेश्वर ओझा, अरविन्द सिंह, मनोज कुमार अंजनी, लक्ष्मण ठाकुर कन्हैया पासवान लुटावन मोहम्मद फैसल चौरसीया, श्याम सुन्दर पाण्डेय, राजु पाठक, जितेन्द्र शर्मा, रविन्द्र कुमार, सुर्य प्रकाश, श्याम नारायण दुबे, अभिमन्यू कुमार यादव, भानु प्रताप सिंह, लाल मोहन सिंह, राजकुमार प्रसाद इत्यादि।

# मदरसों के प्रबंध समिति का तत्काल गठन कर प्रस्ताव बोर्ड को भेजें: सलीम परवेज

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा बिहार मदरसा एजूकेशन बोर्ड के अध्यक्ष सलीम परवेज का दूसरे दिन भी जिला में औचक निरीक्षण जारी रहा. अध्यक्ष श्री परवेज रविवार को रिविलगंज के गोदना अवस्थित मदरसा हमीदिया पहुंचे. उन्होंने कहा कि यह बिहार के प्राचीन मदरसों में है. इसकी स्थापना 1916 में हुई थी. इसका शानदार इतिहास रहा है. स्वतंत्रता संग्राम में यहां के शिक्षक और छात्रों का उल्लेखनीय योगदान है. उच्च स्तरीय शिक्षकों के कारण इसे पूरे देश में आदर की दृष्टि से देखा जाता है. यहां के शिक्षकों के शागिर्द शीर्षस्थ पदों तक पहुंचे. आज भी राज्य और देश में उनका आला मुकाम है. इस मदरसे को सूबे के आइडियल मदरसे के रूप में विकसित किया जाएगा. उन्होंने प्राचार्य को तत्काल आम सभा बुला कर प्रबंध समिति गठन का प्रस्ताव बोर्ड को भेजने का निर्देश दिया. उन्होंने कहा कि बोर्ड जल्द ही प्रबंध समिति, शिक्षक नियुक्ति, नियमित वेतन भुगतान, मूलभूत संरचना विकास आदि पर ठोस निर्णय लेगा. मदरसा के पंजी के अनुसार छात्रों की उपस्थिति जांचने के साथ ही शिक्षकों की उपस्थिति और मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता की जांच की. चेयरमैन श्री परवेज ने उच्च वर्गों के छात्रों की उपस्थिति बढ़ाने का निर्देश दिया. उन्होंने शिक्षकों से व्यक्तिगत प्रयास कर नियमित वर्ग संचालन की हिदायत दी. नियत सिलेबस का अनुपालन करते हुए प्रतियोगी परीक्षाओं को ध्यान में रख पठन-पाठन करने की अपील की. उन्होंने उपस्थित छात्रों व शिक्षकों से विषयवार सीधे सवाल किए. उन्होंने विभिन्न सुधार के निर्देश देते हुए कहा कि अगले जांच में निदेशों का अनुपालन देखा जाएगा. श्री परवेज के बीएमईबी का अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार गृह क्षेत्र में आगमन पर स्थानीय लोगों ने भव्य स्वागत किया. मौके पर पूर्व जिला पार्षद लियाकत अली आदि मौजूद थे.

सम्पादकीय

# अदालत की नई शब्दावली

सर्वोच्च अदालत ने नई शब्दावली जारी की है। यह प्रयास खासकर महिलाओं के सम्मान, उनकी गरिमा और समता के मद्देनजर किया गया है। इस लैंगिक और बेहतर पहल के लिए प्रधान न्यायाधीश जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ बधाई और साधुवाद के पात्र हैं। हमारी अदालतों की भाषा वाकई कबीलाई और मध्यकालीन संस्कारों और सोच से प्रभावित है। अदालतों में भी पितृसत्तात्मक व्यवस्था है, क्योंकि अधिकांश न्यायाधीश, वकील और कर्मचारी पुरुष हैं। महिलाओं की उपस्थिति न्यूनतम है, लेकिन भाषा के स्तर पर वही पुराना लैंगिक वर्चस्व का भाव है। बेशक याचिका हो या पुलिस, जांच एजेंसी का आरोप-पत्र अथवा वकीलों की बहस और न्यायाधीशों के फैसले हों, भाषाई स्तर बेहद आपत्तिजनक और तिरस्कारवादी रहा है। मसलन- वेश्या, बिन ब्याही मां, बदचलन, छोड़ी हुई औरत, रखैल आदि शब्द कमोबेश 21वीं सदी की भाषा के नहीं हो सकते। दरअसल भाषा हमारी चेतना को अभिव्यक्त करती है, लिहाजा मानसिक सोच को भी स्पष्ट करती है। कानून भाषा के जरिए ही जिंदा है। अदालतों में जो शब्द इस्तेमाल किए जाते रहे हैं, उनका हमारी जिंदगी पर बहुत प्रभाव होता है। कटघरे और अदालत में मौजूद महिला किसी की बेटी, बहन, बहू और पत्नी ही है, लिहाजा अपराध के बिना उसे लांछित क्यों किया जाए? प्रधान न्यायाधीश ने यह सामाजिक, भाषायी बीड़ा उठाया है, यकीनन इसकी प्रशंसा की जानी चाहिए। जस्टिस चंद्रचूड़ ने 43 शब्दों को फिलहाल रेखांकित करते हुए एक पुस्तिका जारी कराई है। उसकी शब्दावली में मां, यौनकर्मी, गृहिणी, अविवाहित महिला, होममेकर, फूहड़ या पवित्र महिला के स्थान पर सिर्फ महिला, कीप-रखैल-मिस्ट्रेस के लिए गैर मर्द से संबंध आदि शब्दों के प्रयोग के संशोधन किए गए हैं। फिलहाल यह बेहद सीमित पहल है। महिलाओं के अलावा भी कुछ और शब्द जोड़े गए हैं, लेकिन अभी यह अनुसंधान जारी रखना चाहिए कि किन और शब्दों को बेहतर और सभ्य बनाया जा सकता है। पहली चुनौती यह है कि क्या अदालतों में इन बेहतर शब्दों का चलन तुरंत प्रभावी हो जाएगा? जो नए शब्दों के स्थान पर पुराने शब्दों को ही दोहराते रहेंगे, उनके लिए अदालत के निर्देश क्या होंगे? अथवा उन्हें दंडित भी किया जा सकेगा? न्यायपालिका में करोड़ों मामले लंबित या विचाराधीन हैं। उनकी भाषा बदलने के आधार और नियम क्या होंगे? अब नई विश्व-व्यवस्था और नए भारत में परिवार का कमाऊ और रोटी-प्रदाता सदस्य पुरुष ही नहीं, बल्कि महिलाएं भी हैं। अलबत्ता वे यौन और घरेलू सेवाएं भी प्रदान करती हैं। प्रकृति ने उन्हें ही मातृत्व का वरदान दिया है, लिहाजा शब्दों और सोच का इस्तेमाल भी सभ्य और समता के स्तर पर किया जाना चाहिए। चूंकि अदालत से सीधा संबंध पुलिस, जांच एजेंसियों का है, लिहाजा प्रधान न्यायाधीश नई शब्दावली के लिए पुलिस विभाग, गृह मंत्रालय और अन्य संबद्ध विभाग से भी आग्रह कर सकते हैं। हमारा मानना है कि देश की समूची व्यवस्था में कमोबेश भाषायी परिवर्तन को जरूर लागू किया जाना चाहिए। तभी हम व्यावहारिक और आदर्श, सामाजिक तौर पर लैंगिक समानता और लैंगिक गरिमा की बात कर सकते हैं। बहरहाल नई शब्दावली का प्रयोग भी इसी संदर्भ में किया गया है कि भरी अदालत में औरत को कलंकित या लांछित न किया जाए। जो पुस्तिका जारी की गई है, उसे प्रवचन के बजाय व्यवहार में लिया जाना चाहिए।

# यादों की बूंदों से झांकते सवाल

पंकज शर्मा

तब सब अपने आप होता था। बिना किसी के कहे हम तिरंगा लहराते थे। बिना किसी के थोपे हम अपने फर्ज निभाते थे। सोचता हूं, आज हमारे स्वाभाविक-भावों के लिए भी आयोजन-प्रबंधन तकनीकों के इतने उत्प्रेरक क्यों इस्तेमाल किए जाते हैं? क्या हम वैसे नहीं रहे? या, क्या हमारे प्रेरणा-व्यक्तित्व वैसे नहीं रहे? जन-मन की नैसर्गिक तरंगों को बाजारू-आवरणों की जरूरत क्यों पड़ने लगी है?

मैं बचपन में अपने दादा-दादी और नाना-नानी के घर बहुत रहा। दादा-दादी के गांव में तब 50-60 कच्चे मकान हुआ करते थे और नाना-नानी के छोटे-से कस्बे की आबादी डेढ़-दो हजार हुआ करती होगी। मेरी मां बताती थीं कि जिस शाम महात्मा गांधी की हत्या हुई, पड़ोस में ही रहने वाली उन की एक सहेली की शादी थी। बैलगाड़ियों से बाराती दो दिन पहले ही आ गए थे। तब बारातें लड़की वालों के यहां तीन से पांच दिन तक ठहरा करती थीं। चूंकि सर्दियों के दिन थे, घुड़चढ़ी वाली शाम अंधेरा जल्दी हो गया था। उत्तरप्रदेश के अपने ननिहाल में जब मैं रहा करता था, तब भी हर शाम पूरे कस्बे में खंभों पर बने दीप-बक्सों में मिट्टी के तेल की चिमनी जला कर रखने के लिए सरकारी लोग आया करते थे तो आजादी मिलने के चार-पांच महीने के भीतर हालात क्या रहे होंगे, अंदाज लगा लीजिए। शाम का झुटपुटा होते ही बारात चल पड़ी थी। रास्ते में थी कि गांधी जी को गोली मार देने की खबर आ गई। मां बताती थीं कि दूल्हा, बिना किसी के कहे, घोड़ी से नीचे उतर गया और पैदल विवाह-मंडप में पहुंचा। बैंड वालों ने, बिना किसी के कहे, संगीत बजाना बंद कर दिया। साथ चल रहे रोशनी के चार-छह हंडे वालों ने, बिना किसी के कहे, उन्हें बुझा दिया। आसपास के घरों में जल रही टिमटिमाती रोशनियों और दीप स्तंभों के चिमनियों की मद्धम लौ के बीच बारात खामोशी से लड़की के घर पहुंची। बड़ी-बूढ़ियों ने, बिना किसी के कहे, बेहद धीमे सुरों में सोहर के गीत गाने की रस्म अदा की। पंडित जी ने, बिना किसी के कहे, दबी आवाज में श्लोक पढ़े और अग्नि के समक्ष सात फेरे कराए। बारातियों ने, बिना किसी के कहे, कह दिया कि भोजन में बनी मिठाई और दही-बूरा उन्हें न परोसा जाए। शुभ-कार्य में कच्चा खाना नहीं बनता है, सो, नहीं बना था, इसलिए एकाध पूड़ी-कचौड़ी खा कर बाराती जनवासे में लौट गए। पांच दिनों के लिए आई बारात, एक दिन पहले ही, अगले दिन दुल्हन की धूमधामविहीन विदाई करा कर लौट गई। उस दिन गांधी जी का अंतिम संस्कार था।

इस प्रतीक-प्रसंग की, बिना किसी फरमान के, अखिल भारतीय व्यापकता का अहसास हम आज भी कर सकते हैं। इस के 16 साल बाद, 1964 में मई महीने के आखिरी बुधवार के अपराह्न मैं ने रेडियो पर समाचार सुनते अपने पिता का चेहरा एकदम फक्क होते देखा। वे फफक कर रोने लगे। मेरी मां से जैसे-तैसे बोले कि नेहरू जी नहीं रहे। मैं बहुत छोटा था, लेकिन इतना जानता था कि जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री थे। यह भी कि वे चाचा नेहरू थे। चाचा नहीं रहे, यानी पिता के भाई नहीं रहे। मुझे अपने पिता के आंसुओं और नेहरू के निधन में तब बस यही नाता समझ में आया।

मेरे पिता मध्यप्रदेश के दूरवर्ती आदिवासी इलाके के एक छोटे-से ब्लॉक में पदस्थ थे। कवेलू की छत वाले एक अधपक्के घर में हम रहा करते थे। उस शाम मां ने, बिना किसी के कहे, चूल्हा नहीं जलाया। हम बच्चों को सुबह के बचे खाने में से थोड़ा-थोड़ा खिला कर सुला दिया। अगले दिन पिता दिन भर नम आंखें पोंछते रेडियो पर नेहरू जी के अंतिम संस्कार का आंखों देखा हाल सुनते रहे। घर में चूल्हा उस दिन भी नहीं जला। नेहरू की अंतिम विदाई के बाद पास के आदिवासी छात्रावास के बच्चे अपने बनाए भोजन में से आग्रहपूर्वक कुछ हमारे यहां दे गए। उन्होंने भी, बिना किसी के कहे, डेढ़ दिन बाद चूल्हा जलाया था।

तकरीबन ऐसे ही दृश्य की छुअन मेरी टुकुर-टुकुर आंखों ने 19 महीने बाद लालबहादुर शास्त्री के निधन पर महसूस की। मैं न बहुत छोटा था, न बड़ा, सो, तब समझ ही नहीं पाता था कि इस आदिवासी गांव के लोग, जो कभी दिल्ली तो क्या, अपने जिला मुख्यालय तक नहीं गए, जिन्होंने कभी नेहरू-शास्त्री को देखा तक नहीं, वे उन के निधन पर क्यों कर इतने शोकाकुल हैं, जैसे कोई नजदीकी परिजन चला गया हो? बहुत बाद में समझ आया कि वे कैसे निस्पृह नैतिक-नातों का वक्त था। मेरे माता-पिता धर्म-परायण थे। मां तो इतनी कि उन का सारा जीवन तीज-त्यौहारों, एकादशियों, सीतलामाता, शिवरात्रि, जन्माष्टमी, होली, दीवाली के व्रत करते ही बीता। माता-पिता सोमवार का व्रत भी करते थे। लेकिन यह एकमात्र ऐसा व्रत था, जिस के पीछे कोई धार्मिक कारण नहीं था। 1965 के भारत-पाक युद्ध के समय अन्न-संकट से निपटने के लिए शास्त्री जी ने देशवासियों से सप्ताह में एक दिन का व्रत रखने का आग्रह किया था। मेरे माता-पिता ने सोमवार को व्रत रखना शुरू कर दिया। युद्ध समाप्त हो गया। भारत अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया। हरित क्रांति हो गई। श्वेत क्रांति हो गई। उदारीकरण के बाद भारत बदल गया। मगर मां और पिता का सोमवार-व्रत, बिना किसी के कहे, ताजिंदगी जारी रहा। उन का चूल्हा शास्त्री जी के निधन के दिन भी नहीं जला। 31 अक्टूबर 1984 को इंदिरा गांधी की हत्या वाले दिन मैं दिल्ली में था। तब तक मैं नवभारत टाइम्स में आ गया था। माता-पिता से दूर। नवभारत टाइम्स ने पश्चिमी उत्तरप्रदेश का अलग संस्करण शुरू करने के लिए मेरठ में उस का क्षेत्रीय कार्यालय बनाया था। मैं पहला प्रभारी था। दिल्ली से मेरठ जा रहे मेरे कार्यालयीन वाहन का ड्राइवर एक नौजवान सिख था।

# भारत में तेज गति से बढ़ रही है नागरिकों की औसत आय

**भारतीय स्टेट बैंक के आर्थिक अनुसंधान विभाग द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 से सम्बंधित आय कर विवरणियों के आंकड़ों का एक विशेष अध्ययन किया गया है एवं इस अधय्यन के उपरांत उक्त निष्कर्ष निकाले गए हैं। इस संदर्भ में जारी किए गए एक प्रतिवेदन के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2022-23 से सम्बंधित आय कर विवरणियों की संख्या रिकार्ड स्तर 7 करोड़ तक पहुंच गई है। वित्तीय वर्ष 2046-47 के लिए अनुमान लगाया गया है कि भारत में 48.2 करोड़ नागरिक आय कर विवरणियां फाइल कर रहे होंगे। वित्तीय वर्ष 2012 से वित्तीय वर्ष 2023 के बीच निम्न स्तर की आय दशार्ने वाले नागरिकों में से 13.6 प्रतिशत नागरिक मध्यम श्रेणी की आय दशार्ने वाली श्रेणी में शामिल हो गए हैं। जबकि वित्तीय वर्ष 2024 से वित्तीय वर्ष 2047 के बीच निम्न स्तर की आय दशार्ने वाले नागरिकों में से 25 प्रतिशत नागरिक मध्यम श्रेणी की आय दशार्ने वाली श्रेणी में शामिल हो जाएंगे। वित्तीय वर्ष 2014 में आय कर विवरणियां दाखिल करने वाले नागरिकों की औसत आय 4.4 लाख रुपए थी जो वित्तीय वर्ष 2023 में तीन गुना से भी अधिक बढ़कर 13 लाख रुपए हो गई है एवं वित्तीय वर्ष 2047 में और अधिक बढ़कर 49.7 लाख रुपए हो जाएगी।**

प्रहलाद सबनानी
स्वतंत्र लेखक

भारत में लगातार मजबूत हो रही आर्थिक स्थिति का असर अब देश के नागरिकों की औसत आय में वृद्धि के रूप में भी देखने को मिल रहा है। गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले नागरिक मध्यम वर्ग की श्रेणी में एवं मध्यम वर्ग की श्रेणी के नागरिक उच्च वर्ग की श्रेणी में स्थानांतरित हो रहे है। भारतीय स्टेट बैंक के आर्थिक अनुसंधान विभाग द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 से सम्बंधित आय कर विवरणियों के आंकड़ों का एक विशेष अध्ययन किया गया है एवं इस अधय्यन के उपरांत उक्त निष्कर्ष निकाले गए हैं। इस संदर्भ में जारी किए गए एक प्रतिवेदन के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2022-23 से सम्बंधित आय कर विवरणियों की संख्या रिकार्ड स्तर 7 करोड़ तक पहुंच गई है। वित्तीय वर्ष 2046-47 के लिए अनुमान लगाया गया है कि भारत में 48.2 करोड़ नागरिक आय कर विवरणियां फाइल कर रहे होंगे। वित्तीय वर्ष 2012 से वित्तीय वर्ष 2023 के बीच निम्न स्तर की आय दशार्ने वाले नागरिकों में से 13.6 प्रतिशत नागरिक मध्यम श्रेणी की आय दशार्ने वाली श्रेणी में शामिल हो गए हैं। जबकि वित्तीय वर्ष 2024 से वित्तीय वर्ष 2047 के बीच निम्न स्तर की आय दशार्ने वाले नागरिकों में से 25 प्रतिशत नागरिक मध्यम श्रेणी की आय दशार्ने वाली श्रेणी में शामिल हो जाएंगे।

वित्तीय वर्ष 2014 में आय कर विवरणियां दाखिल करने वाले नागरिकों की औसत आय 4.4 लाख रुपए थी जो वित्तीय वर्ष 2023 में तीन गुना से भी अधिक बढ़कर 13 लाख रुपए हो गई है एवं वित्तीय वर्ष 2047 में और अधिक बढ़कर 49.7 लाख रुपए हो जाएगी। इसका कारण यह बताया गया है कि देश में हो रहे आर्थिक विकास का लाभ अब आम नागरिकों की आय में वृद्धि के रूप में दिखाई देने लगा है, जिसके चलते निम्न आय की श्रेणी के नागरिक उच्च आय की श्रेणी में शामिल हो रहे हैं। दूसरे, आय कर विवरणियां दाखिल करने वाले नागरिकों की संख्या लगातार बढ़ रही है। एक अनुमान के अनुसार, देश में आय कर विवरणियां दाखिल करने योग्य नागरिकों में से केवल 22.4 प्रतिशत नागरिक ही आय कर विवरणियां दाखिल कर रहे हैं जबकि वित्तीय वर्ष 2047 में यह संख्या बढ़कर 85.3 प्रतिशत होने जा रही है।

वित्तीय वर्ष 2023 में भारत में प्रति व्यक्ति आय 2 लाख रुपए प्रतिवर्ष (2500 अमेरिकी डॉलर) आंकी गई है जबकि वित्तीय वर्ष 2047 में यह बढ़कर 14.9 लाख रुपए प्रतिवर्ष (12,400 अमेरिकी डॉलर) होने जा रही है। भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न आर्थिक कार्यक्रमों जैसे ह्यस्किल इंडियाह्न आदि के चलते प्रति व्यक्ति आय में उक्त वृद्धि होने जा रही है। साथ ही, भारत के लिए कई नए क्षेत्रों जैसे ह्यआर्टिफिशियल इंटेलिजेन्सह्न, ह्यइलेक्ट्रॉनिक व्हीकल्सह्न, ह्यस्पेस टेक्नॉलजीह्न डिफेन्स के क्षेत्र, आदि में अपार सम्भावनाएं मौजूद हैं और इन क्षेत्रों में भारत का दबदबा बढ़ने की सम्भावना है।

दिल्ली, तमिलनाडु, केरल, गुजरात, कर्नाटक एवं महाराष्ट्र में अन्य राज्यों से श्रमिकों का पलायन हो रहा है क्योंकि यह राज्य उद्योग प्रधान राज्य हैं। श्रमिकों के पलायन से इन राज्यों को सीधे सीधे लाभ हो रहा है क्योंकि इससे इन राज्यों के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दृष्टिगोचर है एवं इससे इन राज्यों से आय कर विवरणियां भी अधिक संख्या में फाइल हो रही हैं। साथ ही, वित्तीय वर्ष 2012 में कुल आय कर विवरणियां फाइल करने वाले नागरिकों में से 84.1 प्रतिशत नागरिकों ने कर निर्धारित की जाने वाली राशि से कम राशि (शून्य कर देयता राशि) की आय कर विवरणियां फाइल की थीं जबकि वित्तीय वर्ष 2023 में यह संख्या घटकर 64 प्रतिशत हो गई है, इससे भी यह झलकता है कि अब नागरिकों की औसत आय में वृद्धि हो रही है। चीन में आर्थिक विकास की दर अब लगातार कम हो रही है, शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी की दर बढ़कर लगभग 20 प्रतिशत तक पहुंच गई है, चीन में विशेष रूप से कन्स्ट्रक्शन एवं बैंकिंग के क्षेत्र में विकराल समस्याएं आ रही हैं, इस क्षेत्र में कार्य कर रही बड़ी बड़ी कम्पनियों के डूबने का खतरा मंडरा रहा है। चीन का निर्यात लगातार कम हो रहा है। चीन की केंद्र एवं राज्य सरकारों ने इतना अधिक कर्ज लिया है कि अब इस कर्ज पर ब्याज चुकाने के लिए भी उन्हें कर्ज लेना पड़ रहा है। चीन में युवाओं की आबादी कम होकर बुजुर्गों की आबादी लगातार बढ़ रही है। चीनी युवाओं का ही चीन की अर्थव्यवस्था पर अब भरोसा नहीं रहा है। इस माहौल में विदेशी निवेशकों ने चीन में निवेश करने से मुंह मोड़ लिया है। अब विदेशी निवेशक जापान, ताईवान एवं भारत जैसे देशों की ओर रूख कर रहे हैं। जापान में चूंकि युवाओं की आबादी बहुत कम है एवं बुजुर्गों की आबादी अधिक होती जा रही है अतः विदेशी निवेश को सम्हालने की ताकत जापान में अब पहिले जैसे नहीं रही है। इसके साथ ही ताईवान एक छोटा देश है अतः अत्यधिक बढ़ी राशि के विदेशी निवेश ताईवान में करने की अपनी सीमाएं हैं। जबकि भारत में युवाओं की आबादी विश्व में सबसे अधिक है एवं भारत में उत्पादित वस्तुओं के लिए विश्व का सबसे बड़ा उपभोग बाजार उपलब्ध है। इस प्रकार कुल मिलाकर अब विदेशी निवेशकों को निवेश की दृष्टि से केवल भारत ही एक आकर्षण का केंद्र नजर आ रहा है।

विश्व बैंक के एक अनुमान के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या वर्तमान के 140 करोड़ के स्तर से वर्ष 2027 में 161 करोड़ के स्तर पर पहुंच जाएगी। वित्तीय वर्ष 2023 में भारत में 53 करोड़ नागरिक, कार्यशील जनसंख्या (15 से 64 वर्ष के बीच) की श्रेणी में शामिल है जबकि वित्तीय वर्ष 2047 में यह संख्या बढ़कर 72.5 करोड़ हो जाएगी। अर्थात, वित्तीय वर्ष 2023 में भारत की कुल जनसंख्या का 37.9 प्रतिशत भाग ही कार्यशील जनसंख्या की श्रेणी में शामिल है जो वित्तीय वर्ष 2047 में बढ़कर 45 प्रतिशत हो जाएगा। साथ ही, कार्यशील जनसंख्या में से वित्तीय वर्ष 2023 में आय कर अदा करने की श्रेणी में 31.3 करोड़ नागरिक शामिल थे जो वित्तीय वर्ष 2047 में बढ़कर 56.5 करोड़ हो जाएंगे। यह वित्तीय वर्ष 2023 में कुल कार्यशील जनसंख्या का 59.1 प्रतिशत था और वित्तीय वर्ष 2047 में यह बढ़कर 78 प्रतिशत हो जाएगा। युनाईटेड नेशन्स के एक अन्य अनुमान के अनुसार भारत में कार्यशील जनसंख्या (15 से 64 वर्ष के बीच) वर्ष 2040 तक बढ़ती रहेगी एवं अपने उच्चत्तम स्तर पर पहुंच कर इसके बाद घटनी शुरू होगी। वर्ष 2047 में भारत की कुल कार्यशील जनसंख्या का 22 प्रतिशत भाग ही कृषि क्षेत्र पर निर्भर रहेगा। वर्ष 2047 तक भारत की कुल कार्यशील जनसंख्या का अधिकतम हिस्सा (78 प्रतिशत) उद्योग एवं सेवा क्षेत्र में कार्यरत होगा जिससे इस वर्ग की औसत आय और अधिक तेजी से बढ़ने की संभावना व्यक्त की गई है।

# कब तक रैगिंग की आंधी में बुझेंगे सपनों के दीप?

**यह उस पीड़ित को हतोत्साहित करता है जो कई आशाओं और अपेक्षाओं के साथ कॉलेज जीवन में शामिल होता है। हालाँकि शारीरिक हमले और गंभीर चोटों की घटनाएँ नई नहीं हैं, लेकिन रैगिंग इसके साथ-साथ पीड़ित को गंभीर मनोवैज्ञानिक तनाव और आघात का कारण भी बनती है। जो छात्र रैगिंग का विरोध करना चुनते हैं, उन्हें भविष्य में अपने वरिष्ठों से बहिष्कार का सामना करना पड़ सकता है। जो लोग रैगिंग के शिकार होते हैं वे पढ़ाई छोड़ सकते हैं जिससे उनके करियर की संभावनाएं प्रभावित हो सकती हैं। गंभीर मामलों में आत्महत्या और गैर इरादतन हत्या की घटनाएं भी सामने आई हैं रैगिंग को एक ऐसे कृत्य के रूप में परिभाषित किया गया है जो किसी छात्र की गरिमा का उल्लंघन करता है या ऐसा माना जाता है। नए लोगों के स्वागत के बहाने की जाने वाली रैगिंग इस बात का प्रतीक है कि व्यापक मानवीय कल्पना कितनी दूर तक फैल सकती है।**

प्रियंका सौरभ
लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं

रैगिंग के नाम पर मैत्रीपूर्ण परिचय से जो शुरू होता है उसे घृणित और विकृत रूप धारण करने में देर नहीं लगती। रैगिंग की एक अप्रिय घटना पीड़ित के मन में एक स्थायी निशान छोड़ सकती है जो आने वाले वर्षों तक उसे परेशान कर सकती है। पीड़ित खुद को शेष दुनिया से बदनामी और अलगाव के लिए मजबूर करते हुए एक खोल में सिमट जाता है। यह उस पीड़ित को हतोत्साहित करता है जो कई आशाओं और अपेक्षाओं के साथ कॉलेज जीवन में शामिल होता है। हालाँकि शारीरिक हमले और गंभीर चोटों की घटनाएँ नई नहीं हैं, लेकिन रैगिंग इसके साथ-साथ पीड़ित को गंभीर मनोवैज्ञानिक तनाव और आघात का कारण भी बनती है। जो छात्र रैगिंग का विरोध करना चुनते हैं, उन्हें भविष्य में अपने वरिष्ठों से बहिष्कार का सामना करना पड़ सकता है। जो लोग रैगिंग के शिकार होते हैं वे पढ़ाई छोड़ सकते हैं जिससे उनके करियर की संभावनाएं प्रभावित हो सकती हैं। गंभीर मामलों में आत्महत्या और गैर इरादतन हत्या की घटनाएं भी सामने आई हैं रैगिंग को एक ऐसे कृत्य के रूप में परिभाषित किया गया है जो किसी छात्र की गरिमा का उल्लंघन करता है या ऐसा माना जाता है। नए लोगों के ह्यस्वागतह्न के बहाने की जाने वाली रैगिंग इस बात का प्रतीक है कि व्यापक मानवीय कल्पना कितनी दूर तक फैल सकती है। सच है, मानव कल्पना की कोई सीमा नहीं है, शैतानी रैगिंग की भी कोई सीमा नहीं है। आज, रैगिंग भले ही भारतीय शैक्षणिक व्यवस्था में गहरी जड़ें जमा चुकी है, लेकिन कई लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि रैगिंग मूल रूप से एक पश्चिमी अवधारणा है। ऐसा माना जाता है कि रैगिंग की शुरूआत कुछ यूरोपीय विश्वविद्यालयों में हुई जहां संस्थानों में नए छात्रों के स्वागत के समय वरिष्ठ छात्र व्यावहारिक मजाक करते थे। धीरे-धीरे रैगिंग की प्रथा पूरी दुनिया में लोकप्रिय हो गई। हालाँकि, समय के साथ, रैगिंग ने अप्रिय और हानिकारक अर्थ ग्रहण कर लिया और इसकी कड़ी निंदा की गई। आज, दुनिया के लगभग सभी देशों ने रैगिंग पर प्रतिबंध लगाने वाले कड़े कानून बनाए हैं और कनाडा और जापान जैसे देशों में इसे पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है। लेकिन दुख की बात है कि ब्रिटिश राज से रैगिंग विरासत में मिला भारत इस अमानवीय प्रथा के चंगुल से खुद को मुक्त नहीं कर पाया है। बिना किसी संदेह के यह कहा जा सकता है कि रैगिंग का सबसे बुरा रूप भारत में होता है। दरअसल एक शोध के अनुसार, भारत और श्रीलंका दुनिया के केवल दो देश हैं जहां रैगिंग मौजूद है। नए छात्रों को हमेशा अपने नियंत्रण में रखकर, एक वरिष्ठ छात्र अधिकार की भावना का पोषण करता है जो उसके मनोबल को बढ़ाता है और उसे ऊंचे स्थान पर रखता है। एक वरिष्ठ व्यक्ति जिसका रैगिंग का पुराना इतिहास रहा है, वह परपीड़क सुखों पर अपनी निराशा व्यक्त करके वापस आना चाहेगा। एक संभावित रैगर रैगिंग को एक गरीब नए छात्र की कल्पना की कीमत पर अपने परपीड़क सुखों को संतुष्ट करने के एक अच्छे अवसर के रूप में देखता है। यह भी एक वास्तविकता है कि रैगिंग करने वाले सभी वरिष्ठ अपनी इच्छा से ऐसा करने का आनंद नहीं लेते हैं। अपने अधिकांश बैच साथियों को रैगिंग में लिप्त देखकर उन्हें छूट जाने का डर रहता है। इसलिए अलगाव से बचने के लिए, वे भी झुंड में शामिल हो जाते हैं। पैसे, नई पोशाक, सवारी आदि के रूप में ठोस लाभ के साथ कई वरिष्ठ छात्र इस गलतफहमी में रहते हैं कि रैगिंग एक स्टाइल स्टेटमेंट है और इस तरह उन्हें ह्य उनके कॉलेज की ह्यप्रभावशाली भीड़ह्न में शामिल कर देगी। ऐसा कहा जाता है कि नर्क का रास्ता अच्छे इरादों से बनता है। रैगिंग के मामले में यह बात बिल्कुल सटीक बैठती है। रैगिंग के नाम पर मैत्रीपूर्ण परिचय से जो शुरू होता है उसे घृणित और विकृत रूप धारण करने में देर नहीं लगती। रैगिंग की एक अप्रिय घटना पीड़ित के मन में एक स्थायी निशान छोड़ सकती है जो आने वाले वर्षों तक उसे परेशान कर सकती है। पीड़ित खुद को शेष दुनिया से बदनामी और अलगाव के लिए मजबूर करते हुए एक खोल में सिमट जाता है। यह उस पीड़ित को हतोत्साहित करता है जो कई आशाओं और अपेक्षाओं के साथ कॉलेज जीवन में शामिल होता है। हालाँकि शारीरिक हमले और गंभीर चोटों की घटनाएँ नई नहीं हैं, लेकिन रैगिंग इसके साथ-साथ पीड़ित को गंभीर मनोवैज्ञानिक तनाव और आघात का कारण भी बनती है। जो छात्र रैगिंग का विरोध करना चुनते हैं, उन्हें भविष्य में अपने वरिष्ठों से बहिष्कार का सामना करना पड़ सकता है। जो लोग रैगिंग के शिकार होते हैं वे पढ़ाई छोड़ सकते हैं जिससे उनके करियर की संभावनाएं प्रभावित हो सकती हैं। गंभीर मामलों में आत्महत्या और गैर इरादतन हत्या की घटनाएं भी सामने आई हैं। एक मजबूत लेकिन सुधारात्मक दंड प्रणाली के साथ एक मजबूत रैगिंग विरोधी कानून केंद्र और राज्य दोनों सरकारों का कर्तव्य है। । सरकार ने 2007 में रैगिंग मुद्दे पर अध्ययन के लिए राघवन समिति की स्थापना की थी; और इसकी कई सिफारिशों को चरणबद्ध तरीके से लागू किया गया है। इसके अलावा, सरकार छात्रों के बीच जागरूकता फैलाने के लिए गैर सरकारी संगठनों, प्रिंट मीडिया, टीवी, रेडियो आदि का उपयोग कर सकती है। व्यापक परिप्रेक्ष्य में, सरकार को परिसर में शराब और नशीली दवाओं के उपयोग पर लगाम लगानी चाहिए, जो रैगिंग की घटनाओं को बढ़ावा देती है। अब तक रैगिंग पर रोक लगाने वाले दो ऐतिहासिक फैसले आ चुके हैं। तिरुवनंतपुरम सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज बनाम केरल राज्य में फ्रेशर्स की रैगिंग। राष्ट्रपति के माध्यम से विश्व जागृति मिशन बनाम कैबिनेट सचिव के माध्यम से केंद्र सरकार।

यूजीसी के साथ-साथ एआईसीटीई, एमसीआई आदि जैसे क्षेत्रीय निकायों को इस खतरे को रोकने में संस्थानों की भूमिका और ऐसा करने के तरीकों और साधनों के बारे में समय पर अनुस्मारक भेजने की जरूरत है। यह तथ्य कि 2009 के यूजीसी दिशानिर्देश भारत में एकमात्र व्यापक रैगिंग विरोधी नीति है, इस विचार को पुष्ट करता है। यूजीसी के साथ-साथ एआईसीटीई, एमसीआई आदि जैसे क्षेत्रीय निकायों को इस खतरे को रोकने में संस्थानों की भूमिका और ऐसा करने के तरीकों और साधनों के बारे में समय पर अनुस्मारक भेजने की जरूरत है। यह तथ्य कि 2009 के यूजीसी दिशानिर्देश भारत में एकमात्र व्यापक रैगिंग विरोधी नीति है, इस विचार को पुष्ट करता है। रैगिंग विद्यार्थियों की और विद्यार्थियों की समस्या है; और इसलिए इसका समाधान भी विद्यार्थियों के पास है। कॉलेजों में रैगिंग के अनियंत्रित होने के साथ, अब समय आ गया है कि छात्र समुदाय इस अमानवीय प्रथा के प्रति अपनी अंतरात्मा को जगाए, इससे पहले कि अधिक से अधिक निर्दोष छात्र इसका शिकार बनें और इससे पहले कि अधिक से अधिक शैक्षणिक संस्थान इसके कारण अपमानित हों। रैगिंग पर अंकुश लगाने की प्राथमिक जिम्मेदारी शैक्षणिक संस्थानों की होगी। इन पर नियंत्रण के लिए मीडिया एवं नागरिक समाज की भी सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता है। जैसा कि सुप्रीम कोर्ट ने सही कहा है, रैगिंग को संज्ञेय अपराध घोषित करने से रैगिंग पर नियंत्रण नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि शैक्षणिक संस्थानों में जाने वाले छात्रों को पुलिस के डर के साये में नहीं रहना चाहिए। हालाँकि, छात्रों पर हाल के प्रभाव को देखते हुए, रैगिंग के खतरे को रोकने के लिए दिशानिर्देश लागू किए गए है। रैगिंग से संबंधित मामलों का शीघ्र निपटारा सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी भी न्यायालय की सौंपी गई है। रैगिंग के प्रतिकूल प्रभाव की पिछली यादें इन कानूनों के सख्ती से कार्यान्वयन से ही मिटाई जा सकती हैं।

# प्रत्याशी के निजी विरोध के कारण हारती है पार्टी

डा. रवीन्द्र अरजरिया

देश में चुनावी सरगर्मियां तेज होने लगीं है। भारतीय जनता पार्टी ने मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ में अपने 60 प्रत्याशियों की सूची जारी कर दी है। घोषित प्रत्याशियों वाली सीटों पर टिकिट की आशा में दौडभाग कर रहे पार्टी के अन्य नेताओं को निराशा मिलने के कारण आन्तरिक कलह की शुरूआत भी हो चुकी है। पार्टी में दल बदलकर आने वाले अनेक नेताओं ने अपनी उपेक्षा के कारण अप्रत्यक्ष रूप से अपने समर्थकों को किस्तों में भाजपा छोडने का निर्देश जारी कर दिया है ताकि पार्टी पर दबाव बनाया जा सके। ऐसे लोगों ने भाजपा का दामन किसी सैध्दान्तिक हृदय परिवर्तन के कारण नहीं थामा था और न ही भाजपा के आदर्शो को अंगीकार किया था बल्कि अह्म की पूर्ति तथा अतीत की पार्टी में हो रही उपेक्षा के कारण ही उसे छोडा था। ऐसे लोग स्वार्थपूर्ति के अवसरों के आधार पर ही व्यक्तिगत आदर्शों को अंगीकार करते हैं और जब लाभ के अवसर पूरे हो जाते हैं, तो पुनः कहीं और ठिकाना तलाशने लगते हैं। भारतीय राजनीति में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, महाराष्ट्र के उध्दव ठाकरे, मध्य प्रदेश के ज्योतिरादित्य सिंधिया जैसे अनेक नाम इस बात के उदाहरण हैं कि स्वार्थपूर्ति की कीमत पर आदर्शों की चिता सजाकर, मयार्दाओं को तिलांजलि देकर और सिध्दान्तों को दफन करके उन्होंने अपनी निजी आस्था को ही स्थापित किया था। स्वार्थी नेता के साथ लाभ कमाने का नाता रखने वाले खास सिपाहसालारों की फौज का अपना निजी मत नहीं होता, वे तो केवल अपने नेताजी के साथ उनके जयकारे लगाने, भौतिक लाभ कमाने तथा विलासता के संसाधन जोडने में ही मगन रहते हैं। देश में समर्थकों की संख्या का इजाफा करने के लिए कानून तोडने वालों, अनियमिततायें करने वालों तथा मुनाफा कमाने के अनैतिक अवसर पाने की जुगाड में रहने वालों को संरक्षण देना अब आवश्यक हो गया है। ऐसा ही परिवर्तन नागरिक

## संक्षिप्त खबरें

### कारा महानिरीक्षक ने किया बैग क्लस्टर का निरीक्षण

मुजफ्फरपुर। कारा महानिरीक्षक शीर्षत कपिल ने शनिवार को बेला स्थित बैग क्लस्टर सेंटर का निरीक्षण किया। इस दौरान न्यायाधीश,श चक्रधारी शरण सिंह, उच्च न्यायालय, पटना, जिला न्यायाधीश मनोज कुमार सिंह, डीएम प्रणव कुमार, एवं अन्य पदाधिकारी, मौजूद रहे। इनके द्वारा लेदर बैग कलस्टर, बेला औद्योगिक क्षेत्र का भ्रमण किया गया। भ्रमण के क्रम में न्यायाधीश द्वारा जीविका उद्यमी दीदियों से बैग निर्माण के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई। जिला पदाधिकारी एवं मुरारी कारक, हाई स्प्रीट के प्रतिनिधि द्वारा न्यायाधीश महोदय को प्रशिक्षण के साथ-साथ इकाई की स्थापना एवं मार्केटिंग के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई। बैग कलस्टर भ्रमण का उद्देश्य बिहार के केन्द्रीय कारागारों में बंदियों को उद्योग संबंधित प्रशिक्षण के साथ-साथ उन्हें रोजगार सृजित कर आर्थिक रूप से सम्बल प्रदान करना बताया गया है।

### रेस्टोरेंट पर ताबड़तोड़ फायरिंग से मची दहशत

मुजफ्फरपुर । शहर के एक रेस्टोरेंट पर अपराधियों ने ताबड़तोड़ फायरिंग कर इलाके में दो शतक फैला दिया।हालांकि इस घटना में किसी के घायल होने की सूचना नहीं है। मामला जिले के सदर थाना क्षेत्र के रेवा रोड स्थित एक रेस्टोरेंट की है, जहां शनिवार की देर रात दो बाइक पर सवार चार अपराधी रेस्टोरेंट पर पहुंचे और ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। गोलीबारी की इस घटना मे किसी व्यक्ति के हताहत होने की सुचना नही है। . घटना की जानकारी मिलने के बाद सदर थाना अध्यक्ष कुंदन कुमार और मुजफ्फरपुर सिटी एसपी अरविंद प्रताप सिंह दलबल के साथ मौके पर पहुंचे और मामले की जांच शुरू कर दी। पूरी घटना सीसीटीवी में कैद हो गई है जिस समय अपराधियों द्वारा घटना को अंजाम दिया जा रहा था, उस समय रेस्टोरेंट के अंदर लोग बैठकर खाना खा रहे थे। सभी ने टेबल के नीचे और दीवाल के पीछे छुप कर किसी तरह अपनी जान बचाई.। मामले को लेकर घटनास्थल पर पहुंचे मुजफ्फरपुर सिटी एसपी अरविंद प्रताप सिंह ने बताया कि सदर थाना क्षेत्र में स्थित एक रेस्टोरेंट पर बाइक सवार अपराधियों ने दहशत फैलाने के उद्देश्य फायरिंग की है। उन्होंने कहा,अपराधियों ने किसी को टारगेट करके गोली नही चलाई है बावजूद इसके घटना बड़ी है और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर अपराधियों को चिन्हित कर उनकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है।

### फरार अभियुक्त के घर पुलिस ने चिपकाया इश्तेहार

बखरी, बेगूसराय। बखरी थाना क्षेत्र के मोहनपुर गांव में बखरी थाना के पीएसआई मनीष कुमार पंडित ने फरार अभियुक्त के घर इश्तेहार चिपकाया।प्रशिक्षुएसडीपीओ सह थानाध्यक्ष चांदनी सुमन ने जानकारी देते हुए बताया कि थाना काण्ड संख्या 280/22 धारा 341, 323, 379, 354 बी, 44, 376, 307 भारतीय दंड विधान के अंतर्गत काण्ड दर्ज करवाया गया था।जिसमें मो. शब्बीर पिता मो. युनुस फरार चल रहे थे।जिसकी तलाश पुलिस लंबे समय से कर रही हैं।गिरफ्तारी नहीं होने पर इसके विरुद्ध गिरफ्तारी वारंट निकाला गया।उक्त लोगों के द्वारा उपस्थित नहीं होने पर इनके घर इश्तेहार चिपकाया गया है। अगर यह अभियुक्त 30 दिन के अंदर न्यायालय में उपस्थित नहीं होते हैं तो इनके घर की कुर्की जब्ती की कार्रवाई की जाएगी।इस दौरान पुलिस बल के जवान मौजूद थे।

### परिजनों से भटक कर महिला पहुंची अलीगंज

पटना से भटक कर एक 42 वर्षीय महिला अलीगंज पहुंच गई है।पुछने पर वह अपना नाम मीणा देवी पति का नाम वीरेंद्र राम गांव का नाम अराफ (बिहटा) पटना बताती है।और कहती है कि वह अपने साथियो के साथ गांव से ही ट्रेनिंग लेने पटना गई थी और अपने साथियो से बिछुड कर ट्रेनिंग से लखीसराय पहुंच गई। और गांव अराफ बताने पर वह अलीगंज पहुच गई है।जो दो दिनो से अलीगंज बाजार मे रह रही है। महिला सब कुछ साफ साफ बताती रही है। कुछ स्थानीय लोगो द्वारा चंद्रदीप पुलिस को भी सूचना दी गई है। वह दो दिनो से अलीगंज बाजार मे भटक रही है।

# 21वीं सदी के महानायक थे राजीव गांधी : अखिलेश

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल। रविवार को नगरपरिषद क्षेत्र के बड़ा परेउवा के दलित बस्ती में भारत-रत्न युवा तुर्क पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी के 79 वीं जन्मदिवस पर युवा कांग्रेस के दलित प्रकोष्ठ अध्यक्ष आकाश रंजन के आवास पर सैकड़ों बच्चों के बीच पठन-पाठन सामग्री का वितरण किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता रक्सौल कांग्रेस के प्रखंड अध्यक्ष मनोरंजन तिवारी ने किया। बिहार प्रदेश युवा कांग्रेस के पूर्व महासचिव सह नगर प्रतिनिधि रक्सौल सदस्य बिहार विधान परिषद क्षेत्र संख्या 12 के प्रोफेसर अखिलेश दयाल ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी दूरदर्शी नेता थे, जिनका कहना था देश की उन्नति और प्रगति के लिए समाज के पिछली पंक्ति में खड़े प्रत्येक व्यक्ति को आगे लाना होगा। पूर्व महासचिव ने कहा कि राजीव गांधी के कार्यकाल में किये गये कार्य आज भी इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है। 18 वर्ष के युवाओं को मतदान करने का अधिकार जिसके कारण पांच करोड़ युवाओं को मतदान करने का अधिकार प्राप्त हुआ, संचार क्रांति की शुरूआत हुई। युवा कांग्रेस के रक्सौल विधानसभा अध्यक्ष खुशबू दयाल ने कहा कि पंचायती राज व्यवस्था की शुरूआत जिसका उद्देश्य पुरे देश में ग्राम सरकार की अवधारणा लागू की और पंचायतों को ज्यादा अधिकार दिए। भारत में कम्प्यूटर और संचार क्रांति का श्रेय राजीव गांधी को ही जाता है। स्व. राजीव गांधी का मानना था कि देश की युवा पीढ़ी को आगे ले जाना है तो उसके लिए कम्प्यूटर और विज्ञान की शिक्षा जरूरी है।

युवा कांग्रेस के नगर अध्यक्ष अमन कुमार ने कहा कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में पीसीओ सेंटर की शुरूआत, सन- 1986 में राजीव गांधी की पहल से ही एमटीएनएल और बीएसएनएल की स्थापना हुई। अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ युवा कांग्रेस के नगर अध्यक्ष जिशान अंसारी ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के उद्देश्य से जवाहर नवोदय विद्यालयों की स्थापना की।जिसके कारण लगभग हर जिले में एक नवोदय विद्यालय है, राजीव गांधी ने यह फैसला 1986 में घोषित शिक्षा नीति के तहत लिया था। युवा कांग्रेस के व्यवसायिक प्रकोष्ठ के नगर अध्यक्ष रीतेश कुमार ने कहा कि अयोध्या में विवादित स्थल का ताला खुलवाया।सन- 1985 में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने अयोध्या के विवादित स्थल का ताला खुलवा दिया और 1989 में राम मंदिर के निर्माण के लिए शिलान्यास की इजाजत भी दे दी।

युवा कांग्रेस के प्रखंड अध्यक्ष प्रदीप कुमार ने कहा कि राजीव गांधी के द्वारा किये गये कार्यों को भाजपा भजाने का कार्य कर रही है। उक्त कार्यक्रम में आनंद कुमार, नसरुद्दीन अंसारी, युगल किशोर तिवारी, विवेक पटेल, कुन्दन सिंह, मुकेश कुमार, नंदकिशोर यादव, मनीष कुमार, लड्डू अंसारी, साहिल अंसारी, मनोज कुमार सहित अनेकों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

# बेगूसराय में गोली मारकर एक युवक की हत्या

प्रात : किरण, संवाददाता

- घटना शनिवार की रात सिंघौल ओपी थाना क्षेत्र के कैलाशपुर गांव में घटी

बेगूसराय में बदमाशों ने एक युवक के सिर में गोली मारकर उसकी हत्या कर दी। यह घटना सिंघौल ओपी क्षेत्र के कैलाशपुर गांव की है। मृतक की पहचान रामनाथ यादव के 25 वर्षीय पुत्र विकास यादव के रूप में हुई है। घटना के बारे में मिली जानकारी के अनुसार कैलाशपुर गांव निवासी चमरु यादव और बैजू यादव दोनों पडोसी है। एक पिकअप गाड़ी लगाने को लेकर दोनों पडोसी के बीच कुछ कहासुनी हुई। यह बाते बढ़कर मारपीट का बडा रूप ले लिया। जिसमें पड़ोसी चमरू यादव और उसकी पत्नी और तीन बेटों ने मिलकर बैजू यादव के परिवार पर गोली चला दी। जिसमें बैजू यादव और उसके पुत्र संजीव यादव को मामूली चोट आयी। जबकि रामनाथ यादव का पुत्र विकास यादव को गोली लग गई। उसकी मौत इलाज के दौरान सदर अस्पताल में हो गयी। इस घटना की जानकारी मिलते ही सदर डीएसपी अमित कुमार और सिंघौल ओपी थाना की पुलिस घटनास्थल पर पहुंची। पुलिस ने घटनास्थल से दो खोखे को बरामद किया है। इस घटना में संलिप्त चमरू यादव की पत्नी विभा देवी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। वही चमरु यादव, रुपेश यादव, अंकेश यादव, चंदू यादव जो इस घटना में संलिप्त है, उसे गिरफ्तार करने के लिए पुलिस जगह-जगह छापेमारी कर रही है। इस घटना के बाद मृतक के परिजनों में कोहराम मचा हुआ है। सभी लोगों का रो-रोकर हाल बुरा है। हत्या की इस घटना से आसपास के गांवों में सनसनी फैल गई है।

# बेगूसराय में नौ घंटे के बाद हुआ दूसरा मर्डर

प्रात : किरण, संवाददाता

- मॉर्निंग वाकिंग के लिए निकले एक सेवानिवृत्त शिक्षक को अपराधियों ने गोली मारकर की हत्या
- यह घटना बछवाडा थाना क्षेत्र के फतेहा गांव की

बेगूसराय, प्रातः किरण ब्यरो। जिले में अपराधी बेखौफ हो गया है। उन्हें पुलिस के वर्दी का थोड़ा-सा भी भय नहीं है। इसी का नतीजा है कि बेगूसराय में शनिवार की रात सिंघौल ओपी क्षेत्र के कैलाशपुर गांव में गाड़ी लगाने के विवाद में बदमाशों ने विकास यादव की गोली मारकर हत्या कर दी। फिर 9 घंटे के बाद दूसरी घटना सुबह 5:00 बजे में बछवाडा थाना क्षेत्र के फतेहा गांव में घटी। जहां सुबह में मॉर्निंग वाकिंग के लिए निकले सेवानिवृत्त शिक्षक जवाहर चौधरी 70 वर्ष की अपराधियों ने सिर में एक गोली मारकर उन्हें भी सदा के लिए मौत की नींद सुला दिया। घटना की सूचना पाकर तेघडा एसडीपीओ डॉ. रविंद्र मोहन प्रसाद और बछवाडा थाना अध्यक्ष अपने सशस्त्र पुलिस बल के साथ फतेहा गांव घटनास्थल पर पहुंचे। जहां से मृतक के शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया है। इस घटना के संबंध मे तेघडा डीएसपी रविंद्र मोहन प्रसाद से जब पूछा गया तो उन्होंने बताया कि दो साल पहले मृतक के छोटे पुत्र की हत्या हुई थी। जिसमें उसका अपना दूसरा भाई उस मर्डर केस में नामजद अभियुक्त था। वह जेल गया था। अभी बेल पर बाहर है। मृतक जवाहर चौधरी को अपना तीन पुत्र था। घटना का कारण कुछ लोग जमीनी विवाद बता रहे हैं। लेकिन पुलिस विभिन्न बिन्दुओं से हत्या की गहन जांच कर रही है।

# दो सगे भाइयों की सड़क दुर्घटना में मौत के बाद परिजनों से मिले पूर्व मंत्री

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के करजा थाना क्षेत्र में एक सड़क दुर्घटना में दो सगे भाइयों की मौत के बाद पूर्व मंत्री और भाजपा नेता अजित कुमार ने आज पीड़ित परिवार से मुलाकात कर ढाढस बंधाया।झखरा निवासी सतनारायण लाल के दो पुत्रों की मौत पिछले दिन एक सड़क दुर्घटना में हो गई थी। उन्होंने शोक संतप्त परिवार को सांत्वना देते हुए ढाढस बंधाया।वही मृत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना किया।

पूर्व मंत्री ने कहा कि सतनारायण लाल के दो पुत्रों की एक साथ मौत से उन्हें भारी सदमा लगा है। उन्होंने कहा कि मैं इस परिवार से 29 वर्षों से जुड़ा हूं और इन बच्चों का जन्म मेरी आंखों के सामने हुआ था। जिसकी मौत से मैं काफी मार्माहत हूं । पूर्व मंत्री ने मृतक के स्वजनों को संतावना दी। इस दौरान परिवार के आधा दर्जन सदस्यों की हालत खराब होने पर उन्होंने सिविल सर्जन, डीएम व प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सा प्रभारी से बात कर तत्काल परिवार को स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराने को कहा। उन्होंने कहा कि दो जवान बेटों की मौत से परिवार के कई सदस्य डिप्रेशन में चले गए हैं, जिन्हें तत्काल इलाज की जरूरत है अन्यथा कोई बड़ा हादसा हो सकता है।पूर्व मंत्री के कहने पर जिलाधिकारी व प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी ने एंबुलेंस भेज सभी को इलाज मुहैया कराया। पूर्व मंत्री ने कहा कि परिवार का चार -चार सदस्य सेना के जवान के रूप में देश सेवा में लगा है। ऐसे परिवार का एक सेना के जवान सहित दो युवा सदस्यों की मौत ने उन्हें काफी आहत कर दिया है।उन्होंने पीड़ित परिवार को आश्वासन दिया कि उनकी वे हर तरह से मदद करेंगे। मौके पर राजकुमार साह,नागेंद्र गिरी, रंजीत ठाकुर, राजेश कुमार सिंह, रामबाबू सिंह, मो शमीम, गुलशन कुमार, राजदीप साह, कृष नंदन राय , चंदेश्वर राय , अजय राय, मुनीलाल सहनी ,श्रीकांत सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे। विदित हो कि गुरुवार की शाम करजा थाना क्षेत्र के रौतीनिया में मालवाहक तिपहिया वाहन की ठोकर से झखडा निवासी स्कूटी सवार दो सगे भाइयों की मौत हो गई थी।

# कांग्रेस कार्यकताओं के द्वारा भारत रत्न स्व. राजीव गांधी की जयंती सद्भावना दिवस के रूप में मनाया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर प्रखंड कांग्रेस कमिटी के कार्यकताओं के द्वारा ललित कुटीर पार्टी के कार्यालय परिसर में आधुनिक भारत के जनक भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी का जयंती सद्भावना दिवस के रुप में मनाया गया। प्रखंड अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार महतो के नेतृत्व में कांग्रेस के कार्यकताओं के द्वारा राजीव गांधी की फोटो पर पुष्प माल्यर्पण श्रद्धा सुमन अर्पित कर उन्हें नमन करते हुए उन्हें भावभीनी श्रधांजलि दि। कार्यकताओं ने स्व. राजीव गांधी के बताये रास्ते पर चलने का संकल्प लिया। प्रखंड अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार महतो ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि देश के विकास में राजीव गांधी के अहम योगदान रहा है जिसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। देश में कम्प्यूटर क्रांति और दूरसंचार क्रांति राजीव गांधी की देन है। राजीव गांधी ने भारत को विकसित देश की श्रेणी में खड़ा करने की आधारशीला रखी थी। मौके पर रामचंद्र शाह, नित्यानन्द झा, रविन्द्र पोद्दार, अजय झा, इम्तियाज शेख , मो. आसिफ समेत कई कार्यकर्ता भाग लिए।

# बहुजन समाज पार्टी के कार्यकताओं की बैठक आयोजित

## 25 अगस्त को पाटलिपुत्र में आयोजित कार्यक्रम में कार्यकताओं से किया आह्वान

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर सिंचाई भवन के परिसर में रविवार को बहुजन समाज पार्टी के कार्यकताओं की एक विशेष बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता पार्टी के जिलाध्यक्ष पंडित घुरण सदाय एवं संचालन जिला सचिव साबिर अली ने किया। कार्यकताओं के बैठक को सम्बोधित जिलाध्यक्ष पार्टी के मजबूती पंचायत स्तर पर सदस्यता अभियान चलाने पर बल दिया। 25 अगस्त को पाटलीपुत्र में आयोजित कार्यक्रम में भागीदारी और तैयारी को लेकर चर्चा करते हुए जिला से बड़ी संख्या में कार्यकताओं कार्यक्रम में शामिल होने का आह्वान किया गया। पार्टी के राष्ट्रीय कोडिनेटर आकाश आनंद कार्यकर्ता सम्मेलन को सम्बोधित करेंगे। उनके सम्बोधन को सुन कर आकाश आनंद के दिशा निर्देश पर पार्टी के कार्यकर्ता पार्टी आगामी लोक सभा और विधानसभा चुनाव की तैयारी को लेकर चर्चा करेंगे और पार्टी के गाईड लाईन अनुसार कार्य करेंगे। कार्यक्रम में शामिल होकर कार्यक्रम को सफल बनाने का संकल्प लिया। साथ आगामी लोक सभा और विधानसभा चुनाव की तैयारी में जुट जाने का आह्वान किया गया। बैठक में खजौली विधानसभा अध्यक्ष जीवछ राम, सचिव बौआ लाल राम,जिला सचिव साबीर अली, नंदा साफि, मो. इसराफिल, देव कुमार राम, नगर अध्यक्ष धर्मेन्द्र सहनी, प्रखण्ड कोषाध्यक्ष कमाल अंसारी, सेक्टर अध्यक्ष बुधन सदाय,फुलपरास अध्यक्ष भैरव पासवान समेत कई कार्यकर्ता भाग लिया।

# सामुदायिक पुलिसिंग के तहत फुटबॉल टूनार्मेंट का आयोजन

## फुटबॉल टूनार्मेंट का फीता काटकर उद्घाटन करते एसपी डा.शौर्य सुमन व कमांडेंट जोगेन्द्र सिंह मौर्य

प्रात : किरण संवाददाता

बरहट जमुई पुलिस द्वारा लगातार सामुदायिक पुलिसिंग के तहत कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहे है।इस बार जमुई पुलिस ने एक और अनोखी पहल की है। आपको बता दें पुलिस पब्लिक संबंध को और मजबूत करने के मकसद से एसपी डा. शौर्य सुमन के निर्देश पर पुलिस लाइन मलयपुर में बिग हिट यूथ कप फुटबॉल टूनार्मेंट का आयोजन किया।टूनार्मेंट में नक्सल क्षेत्र के बच्चों की टीम सहित कई अलग अलग जिलों की टीमों ने हिस्सा लिया है। इसका उद्घघाटन रविवार को एसपी डा. शौर्य सुमन व 215 बटालियन कमांडेंट जोगेंद्र सिंह मौर्य ने संयुक्त रूप से फीता काट कर किया। टूनार्मेंट का पहला मैच रेड हिट फुटबॉल अकादमी जमुई बनाम अब्दुल रहीम फुटबॉल क्लब गया के बीच खेला गया। जिसमे जमुई की रेड हिट टीम ने खेल का अच्छा प्रदर्शन करते हुए एक गोल से बढ़त बनाते हुए विजयी घोषित हुई। वही शिवरंजन बासके को मैन ऑफ द मैच के पुरुस्कार से सम्मानित किया गया। एसपी डा. शौर्य सुमन द्वारा जमुई के नक्सल क्षेत्र से आने वाले खिलाड़ियों को फुटबॉल, जर्सी, बूट सहित अन्य खेल सामग्रियों का भी वितरण किया गया। एसपी ने कहा की ऐसी प्रतियोगिता आयोजित कर जमुई पुलिस नक्सल प्रभावित क्षेत्रों से आने वाले बच्चों मे प्रतिभा की कोई कमी नहीं है उनको आगे आने का मौका मिलेगा।साथ ही इस टूनार्मेंट के माध्यम से जर्मनी की फुटबॉल क्लब बिहार के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों का चयन कर गोवा में फुटबॉल कैंप आयोजित कर प्रशिक्षण देने का काम करेगी।ऐसे में जमुई के खिलाडियों को एक बेहतर प्लेटफार्म देने का प्रयास जमुई पुलिस द्वारा किया जा रहा है। मौके पर सीआरपीएफ कमांडेंट जोगेंद्र सिंह, एसएसबी कमांडेंट मनीष कुमार,द्वितीय कमान अधिकारी मनोज कुमार, एएसपी अभियान ओंकार नाथ सिंह, एसडीपीओ राकेश कुमार, डीएसपी हेडक्वार्टर अभिषेक सिंह,डा. विशाल आनंद सहित कई खेलप्रेमी मौजूद थे।वही आयोजकों ने बताया की बिग हिट यूथ कप का आयोजन आज से शुरू हो गया है जिसमे बिहार के 14 जिले के टीमों ने हिस्सा लिया है।टूनार्मेंट का बाकी सभी मैच प्लस टू उच्च विद्यालय के मैदान में खेला जाएगा। फाइनल मुकाबला 26 अगस्त को मलयपूर में ही खेला जाएगा।

# पत्रकार के निधन पर श्रधांजलि सभा आयोजित

- सभी हत्यारों की अबिलम्ब गिरफ्तार करने व मृतक के आश्रितों को 25 लाख मुवावजे देने की उठी मांग
- पूरे प्रदेश में लागू हो पत्रकार सुरक्षा कानून : पत्रकार बिपिन कुशवाहा

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट्स आई बिहार रक्सौल अनुमंडल इकाई के तत्वधान में रविवार को वाई एस रिसोर्ट रक्सौल के सभागार में दिवंगत पत्रकार बिमल कुमार यादव के आत्मा के शांति के लिये श्रधांजलि सभा का आयोजन किया गया। साथ ही इस घटना की कड़ी निंदा की गई। अररिया जिला के रानीगंज के पत्रकार बिमल कुमार यादव को पिछले दिनों अज्ञात अपराधियो ने घर पर गोली मारकर निर्मम हत्या कर दी थी। इस घटना से पूरा पत्रकार समाज काफी आहत, मर्माहत व आक्रोशित है। कार्यक्रम में शामिल पत्रकारों ने इस घटना की कड़ी शब्दो मे निंदा की। एनयूजेआई रक्सौल अनुमंडल संयोजक बिपिन कुशवाहा ने कहा कि लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ पत्रकार की हत्या काफी निंदनीय व चिन्ताजनक है। उन्होंने सरकार से पत्रकार की इस हत्या में शामिल सभी आरोपियो की शिघ्र गिरफ्तारी करने तथा स्पीडी ट्रायल चलाकर सजा दिलाने, मृतक के आश्रितों को 25 लाख रुपये मुआवजा देने, योग्यता के अनुसार परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने, मृतक के परिवार को सुरक्षा प्रदान करने तथा पूरे प्रदेश में पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करने की मांग की। इस मौके पर वरीय पत्रकार दीपक अग्निरथ, नवीन कुमार सिंह, डीएन कुशवाहा, लक्ष्मीकांत त्रिपाठी,सुबोध कुमार,मोहमद साहिल अंसारी, अवधेश कुमार शर्मा, विकाश कुमार कुशवाहा, संदीप कुमार, संजय कुशवाहा, उदय श्रीवास्तव, जितेंद्र पंडित, भूपेंद्र पांडेय, वरुण कुमार मिश्रा, मधु गिरी, कुंदन कुमार, रविन्द्र ठाकुर, राजेश कुमार चौरसिया, मुहर्रम हुसैन, पीताम्बर कुमार आदि सहित अन्य कई पत्रकार उपस्थित थे।

# याद किए गए विश्वप्रसिद्ध इतिहासकार प्रोफेसर : रामशरण शर्मा

प्रात : किरण ब्यूरो

बेगूसराय, रविवार को विश्वप्रसिद्ध इतिहासकार प्रोफेसर रामशरण शर्मा को याद करने के लिए मार्क्सवादी पुस्तकालय परिसर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में राकेश कुमार ने प्रोफेसर राम शरण शर्मा के संपूर्ण जीवन चरित्र पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्राचीन भारतीय इतिहास, प्राचीन भारतीय समाज की संस्थाओं, प्राचीन भारतीय जाति व्यवस्था तथा सामंती व्यवस्था के सूक्ष्म एवं प्रभावशाली अध्ययन करने वाले एक विशेषज्ञ इतिहासकार के रूप में अपनी पहचान बनाई। सौरभ ने प्रोफेसर राम शरण शर्मा की पारिवारिक पृष्ठभूमि की चर्चा विस्तार से की। बताया कि उन्होंने किस तरह शिक्षा जगत में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया और हमें हमारे इतिहास से रूबरू करवाया है। धीरज ने इनके लिखे पुस्तक शुद्रों का प्राचीन इतिहास, भारत के प्राचीन नगरों का पतन आदि के संदर्भ में कुछ बातों को हमारे सामने रखा। बबलू ने बताया कि डॉक्टर रामशरण शर्मा ने लगभग 115 पुस्तक लिखीं थीं। जो कि विश्व स्तर पर चर्चित हुई। जिसमें प्राचीन भारत के राजनैतिक विचार एवं संस्थाएं, शूद्रों का इतिहास आदि मुख्य रूप से चर्चित है। हमें हमारे भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए अपने इतिहास से प्रेरणा लेनी चाहिए और अपने इतिहास की अच्छी से जानकारी हो, इसके लिए हमें डॉक्टर रामशरण शर्मा के लिखे इतिहास को पढ़ना अतिआवश्यक है। सामाजिक सरोकार से भी डॉ राम शरण शर्मा का गहरा लगाव था। जिसका उदाहरण सांप्रदायिकता के खिलाफ सक्रिय लड़ाई में बाबरी मस्जिद मुद्दे पर इलाहाबाद उच्च न्यायालय की शरण लेना सबसे प्रमुख है। उनके लिखे अनेक पुस्तकों का अनुवाद हिंदी, अंग्रेजी के अलावा जापानी, फ्रेंड्स जर्मन, रूस आदि भाषाओं में भी हुआ है। अभिभावक अर्जुन सिंह ने बताया कि डॉ राम शरण शर्मा पटना विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय सहित देश के बाहर टोरंटो विश्वविद्यालय, लंदन विश्वविद्यालय आदि प्रमुख विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य किया था। बीहट नगर परिषद के उप मुख्य पार्षद ऋषिकेश कुमार ने कहा कि रामशरण शर्मा भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के संस्थापक अध्यक्ष 1972 से 1977 तक थे। 1987 में इन्हें एशियाटिक सोसाइटी के द्वारा कैंपवेल गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया था। भारतीय इतिहास कांग्रेस द्वारा जीवन पर्यंत इतिहास में योगदान देने के लिए 2002 ईस्वी में विश्वनाथ काशीनाथ राजवाड़े अवार्ड द्वारा भी सम्मानित किया गया।

# पत्रकार विमल मंडल की हत्या के विरोध में प्रतिवाद मार्च

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के पत्रकारों ने अररिया के पत्रकार विमल मंडल की हत्या के खिलाफ आक्रोश मार्च निकाला। इससे पहले अमर शहीद खुदीराम बोस स्मारक स्थल पर पत्रकारों ने श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। श्रद्धांजलि सभा में पत्रकारों ने अपनी सुरक्षा ,पीड़ित परिवार को न्याय व सुरक्षा देने की मांग रखी। स्मारक स्थल से आक्रोश मार्च निकाला गया जो मुख्य मार्ग से गुजरते हुए कमिश्नर कार्यालय, आईजी कार्यालय, एसडीओ कार्यालय होते हुए समाहरणालय परिसर में समाप्त हुआ। सभा को संबोधित करते हुए वरीय पत्रकार अमरेंद्र तिवारी ने कहा कि अररिया के रानीगंज निवासी वरीय पत्रकार विमल मंडल को अपराधियो ने गोली मारकर हत्या कर दी। मंडल सुबह घर में सोए हुए थे। अपराधियो ने विमल भैया कहकर आवाज दी और उनके घर से निकलते ही सीने में गोली मार दी। घटना स्थल पर ही उसकी मौत हो गई । उन्होंने पीड़ित परिवार की सुरक्षा, 25 लाख मुआवजा , मृतक के बच्चों को सरकारी खर्च पर पढ़ाई की व्यवस्था करने, अपराधियों को स्पीडी ट्रायल चला कर सजा दिलाने की मांग की है। वरीय पत्रकार अमरेंद्र तिवारी ने कहा कि पत्रकारों के हक के लिए मीडिया फार बॉर्डर हामोर्नी संगठन बराबर पहल कर रहा हैं ।पत्रकार तिवारी ने पत्रकारों की सुरक्षा के लिए कुछ मांग रखी ।जिस पर श्रद्धांजलि सभा और आक्रोश मार्च में शामिल पत्रकारों ने अपनी सहमति दी। आक्रोश मार्च में विभिन्न पत्र, पत्रिका, न्यूज, यूट्यूब ,वेब चैनल, बेवसाइट पोर्टल से जुड़े पत्रकारों ने हिस्सा लिया। सरकार से मांग की गई किपत्रकार विमल मंडल के परिवार की सुरक्षा, 25 लाख रुपया मुआवजा, बच्चों की पढ़ाई का खर्च सरकार उठावें ,अपराधियों को स्पीडी ट्रायल चल कर सजा दिलाई जाए जाए, राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर पत्रकार संरक्षण आयोग का गठन किया जाय। आयोग के गठन से पत्रकारों को संवैधानिक संरक्षण मिल पायेगा।इसके अलावे बिहार में सभी ग्रामीण, प्रखंड अनुमंडल व जिला स्तरीय व स्वतंत्र पत्रकारों की निगरानी में एक कमिटी का गठन किया जाए, पत्रकारों के कल्याण के लिए जिला स्तर पर पत्रकार राहत कोष का गठन सरकार करे ताकि आपात स्थिति हत्या, दर्घटना, गंभीर रूप से बीमार होने पर उनको तत्काल मदद मिल सके।

# जिले में स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने में टेलीमेडिसीन कंस्लटेंसी की भूमिका महत्वपूर्ण

## ग्रामीणों को सीधे तौर पर इसका लाभ देने के लिए स्वास्थ्य विभाग सक्षमः सीएस

प्रात : किरण,संवाददाता

पूर्णिया। बिहार में कई ऐसे सुदूर ग्रामीण क्षेत्र हैं जहां पर गरीब या साधन विहीन मरीजों को इलाज के लिए कोसों दूर काफी कठिनाइयों का सामना करने के बाद सरकारी स्वास्थ्य केंद्र पहुंचना पड़ता है। इसी तरह की समस्याओं को दूर करने के लिहाज से ई संजीवनी सेवा उपलब्ध कराई गई है। जिसके माध्यम से किसी भी प्रकार की बीमारियों से संबंधित ग्रामीण या उनके अभिभावक सीधे तौर पर ऑनलाइन के माध्यम से जुड़कर चिकित्सकों से सलाह लेते हैं।

सिविल सर्जन डॉ अभय प्रकाश चौधरी ने बताया कि

जिले में स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने और लोगों को सीधे तौर पर इसका लाभ देने के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा टेलीमेडिसीन कंस्लटेशन की सुविधाएं दी जा रही हैं। जिसके माध्यम से जिले के सभी स्वास्थ्य संस्थानों में कार्यरत चिकित्सा पदाधिकारियों के द्वारा क्षेत्र के मरीजों को सीधे तौर पर ऑनलाइन जुड़ कर चिकित्सकीय सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। सुदूर ग्रामीण इलाकों की आम जनमानस को इस अभियान से काफी सहूलियत मिल रही है।

विशेष रूप से आयोजित टेलीमेडिसिन कंस्लटेंसी में 147 प्रतिशत के साथ पूर्णिया को मिला सातवां स्थानः डीपीसी

जिला योजना समन्वयक डॉ सुधांशु शेखर ने बताया कि राज्य स्वास्थ्य समिति के कार्यपालक निदेशक संजय कुमार सिंह और जिलाधिकारी कुंदन कुमार के दिशा निर्देश व सिविल सर्जन डॉ अभय प्रकाश चौधरी के मार्गदर्शन में स्वास्थ्य विभाग अपने लक्ष्य को शत-प्रतिशत पूरा करने के लिए लगातार प्रयासरत रहता है। राज्य में ई-संजीवनी के माध्यम से टेलीमेडिसीन द्वारा प्रतिदिन चिकित्सीय परामर्श दिया जाता है। प्रत्येक महीने के पहले और तीसरे बुधवार को विशेष रूप से टेलीमेडिसिन की सेवाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। दरअसल जिले के अधिक से अधिक ग्रामीणों को इसका लाभ पहुंचाना स्वास्थ्य विभाग का लक्ष्य है। जिले में 339 आयुष्मान भारत हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर कार्यरत हैं। जिसके द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सीय सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। विशेष रूप से बुधवार को आयोजित टेलीकंस्लटेंसी में राज्य में 147 प्रतिशत के साथ जिला को सातवां स्थान मिला था। क्योंकि जिला में 2360 लक्ष्य के मुकाबले 3534 कॉल को रिसीव कर टेलीकंस्लटेंसी की गयी थी। शेष दिन शत-प्रतिशत लक्ष्य की प्राप्ति करने में सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों की भूमिका महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण हम जैसे सीएचओ की भूमिका चुनौतीपूर्णः आशा कुमारी

कसबा प्रखंड के सरोचियां स्थित आयुष्मान भारत हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर की सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी आशा कुमारी ने बताया कि ई-टेलीमेडिसीन कंस्लटेंसी के माध्यम से सामान्य रूप से स्वास्थ्य के अलावा मातृ और शिशु स्वास्थ्य से संबंधित सभी प्रकार की चिकित्सीय सुविधाएं उपलब्ध हैं। साथ ही टीबी, फाइलेरिया (हाथीपांव और हाइड्रोसील), डेंगू, मलेरिया, कुष्ठ, हाइपरटेंशन, सर्दी, खांसी, बुखार, बीपी, शुगर, अर्थराइटिस जैसी बीमारियों के लिए चिकित्सीय सेवाएं के साथ ही बचाव और सुरक्षित रहने के लिए जागरूक भी किया जाता है। वहीं परामर्श केंद्र पर परिवार नियोजन, पोषण, एड्स, कैंसर, तंबाकू उपयोग के दुष्परिणाम के लिए उचित सलाह दी जाती है। मधुमेह, उच्च रक्तचाप एवं किशोरियों और गर्भवती महिलाओं में एनीमिया की जांच की जाती है।

# कांग्रेस के जिला कार्यालय में मनायी गई पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की जयंती

● राजीव गांधी के देशहित में किये गये तमाम तरह के कार्यों पर चर्चा

प्रात : किरण,संवाददाता

पूर्णिया । जिला कांग्रेस कार्यालय गोकुल कृष्ण आश्रम में देश के पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्वर्गीय राजीव गांधी की जयंती मनाई गई। जिसकी अध्यक्षता कांग्रेस पार्टी के पूर्व जिला अध्यक्ष रंजन सिंह ने की। सर्वप्रथम उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर रंजन सिंह, मोहम्मद अलीमुद्दीन, गौतम वर्मा, जवाहर किशोर, जयवर्धन सिंह, मोहम्मद जावेद, तुफैल, सुशील शर्मा, परवेज अंजुम, जब्बार हसन, अखिलेश कुमार, रविंद्र कुमार सिंह, नीरज यादव, मिंटू सिंह, सुजीत शर्मा, असरार हाशमी, शंभू जायसवाल चौधरी आदि ने अपने विचार रखते हुए कहा कि स्वर्गीय राजीव गांधी का व्यक्तित्व और कृतित्व काफी महान रहा है। 21वीं सदी के भारत के निमार्ता के रूप में उन्हें याद किया जाता रहेगा। उनकी ही देन है की आज 18 वर्ष के युवा अपने मताधिकार का प्रयोग कर रहे हैं। पंचायती राज व्यवस्था को मजबूत बनाने का काम किए थे। भारत में कंप्यूटर युग लाकर तकनीकी रूप से देश को टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में एक अलग पहचान दिलाई इसलिए इन्हें संचार क्रांति का जनक भी कहा जाता है। देश की एकता अखंडता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने का काम किए थे। स्वर्गीय गांधी का मानना था कि देश का विकास युवाओं के द्वारा ही हो सकता है देश के युवाओं को रोजगार मिले इसके लिए जवाहर रोजगार योजना शुरू की। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को मजबूत देश के रूप में स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई। देश के सबसे कम उम्र के प्रधानमंत्री के तौर पर अपने कार्यों से लोगों के दिलों में बसने का काम किए थे। आज के दिन हमें संकल्प लेना चाहिए की उनके बताए मार्ग पर चलकर ही देश आगे बढ़ सकता है और ऐसे महामानव पर कांग्रेस पार्टी का एक-एक कार्यकर्ता अपने को गौरवान्वित महसूस करता है। भारतीय राजनीति के इतिहास में स्वर्गीय गांधी का नाम युगांतर तक स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा।

# कैंसर रोग से होने वाले प्रभाव व उपचार को लेकर सेमिनार का हुआ आयोजन

● रोग से संबंधित उपस्थित अतिथि चिकित्सक से छात्रों ने किये सवाल

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। लायंस क्लब ऑफ भागलपुर प्राइम एवं मेदांता के डॉक्टर्स की टीम द्वारा संयुक्त रूप से खरमनचक स्थित टैली एकेडेमी प्रांगण में कैंसर से होने वाले रोगों व उसके उपचार को लेकर एक सेमिनार का आयोजन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में पूर्वी बिहार चैंबर आफ कमर्स एंड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष श्रवण बाजोरिया थे। वही कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. राजीव रंजन प्रसाद (डॉक्टरेट रेडिएशन ऑकोलॉजी) डॉ. संदीप कुमार (एसोसिएट डायरेक्टर सर्जिकल ऑकोलॉजी, कैंसर हेड एंड नेक) ने कैंसर रोग से होने वाले प्रभाव पर अपने विचार प्रस्तुत किये। इस कार्यक्रम में लगभग 50 युवाओं ने कैंसर से होने वाले बीमारियों एवं उसके उपचार के बारे में जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया, साथ ही अपने जिज्ञासा हेतु उपस्थित अतिथियों से प्रश्न किया गया, जिसका जवाब डॉ. संदीप ने दिया। कार्यक्रम का जो उद्देश्य था कि ज्यादा से ज्यादा युवा लोग कैंसर रोग के प्रति जागरूक हो और किसी भी प्रकार परेशानी होने पर उस विषय के अधिकृत डॉक्टर से सलाह परामर्श ले सकें। वही कार्यक्रम में उपस्थित सभी डॉक्टर टीम एवं अतिथियों का स्वागत एडमिनिस्ट्रेटर ला. सुमित जैन ने किया, कार्यक्रम के अंतिम में धन्यवाद ज्ञापन कोषाध्यक्ष ला. आयुष छापोलीका ने किया। वही कार्यक्रम के दौरान ला. अनिल गोयनका ने प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा को प्रदर्शित किया। क्रायक्रम को संबोधित करते हुए चेंबर के अध्यक्ष श्रवण बाजोरिया ने बताया कि वेदांता अपनी एयर एंबुलेंस सेवा जल्द से जल्द भागलपुर में भी प्रारंभ करेंगें, चेंबर उसका हर तरीके से सपोर्ट करेगी। टैली अकैडमी के संस्थापक श्रवण साह ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन देते हुए लायंस क्लब के हर सेवा कार्य में अपना सहयोग करने की बात कही। वही जोनल चेयरपर्सन प्रज्ञा कुमार ने कहा की महिलाएं बहुत हिचकिचाती हैं जब भी महिलाओं को किसी प्रकार की परेशानी हो उन्हें जल्द से जल्द उस रोग के विशेषज्ञ डॉक्टर से मिल अपनी समस्या का निवारण हेतु सलाह परामर्श लेना चाहिए और जिससे उसका इलाज ससमय किया जा सकें।डिस्ट्रिक्ट कॉर्डिनेटर लायन डॉक्टर पंकज टंडन ने इस कार्यक्रम की बहुत प्रशंसा की और बताया कि अवेयरनेस कैंप लगातार जिला स्तर पर ही नहीं बल्कि ग्राम स्तर पर भी होते रहना चाहिए, जिससे संबंधित रोगों को लेकर जागरूक हो सकें। इस मौके पर अध्यक्ष सुधांशु शेखर, सचिव अभिषेक डोकानिया एवं प्राइम की पूरी टीम मौजूद रही थी।

# बस और ऑटो की आमने सामने की टक्कर में चार यात्रियों की मौत, आठ घायल

प्रात : किरण,संवाददाता

पूर्णिया/ केनगर । कृत्यानंद नगर थाना क्षेत्र के गणेशपुर इथेनाल प्लांट से करीब दो सौ मीटर पश्चिम पूर्णिया-धमदाहा स्टेट हाईवे पर बस एवं आटो के आमने- सामने हुई जोड़दार टक्कर में आटो सवार तीन यात्री की घटना स्थल पर मौत हो गई। जबकि गंभीर रूप से घायल एक यात्री की मौत अस्पताल ले जाने के क्रम में रास्ते में ही हो गई। सूचना पर घटना स्थल पहुंची केनगर थाना पुलिस ने 8 अन्य घायल को इलाज के लिए जीएमसीए पूर्णिया भेज दिया गया। जिसमें गंभीर रूप से घायल एक यात्री की रास्ते में ही मौत हो गई। मृतक की पहचान धमदाहा थाना क्षेत्र के विषणपुर पंचायत के वार्ड संख्या- 1 के सुगठिया गाँव निवासी बौकू उडांव के 60 वर्षीय पुत्र बब्जा उडांव एवं बलराम उरांव के 35 वर्षीय पुत्र जितेंद्र उरांव तथा स्व फौदू उरांव के 55 वर्षीय पुत्र अनुप लाल उरांव औरस्व महेंद्र उरांव70 वर्षीय डोमी उरांव के रूप में पहचान हुई है.

वही घायलों में सुगठिया गांव के ही 70 वर्षीय साधु उरांव, 45 वर्षीय जियालाल उरांव, 65 वर्षीय नूनू लाल उरांव, 55 वर्षीय राजेन्द्र उरांव, 35 वर्षीय आटो चालक मोहन साह, 65 वर्षीय दशरथ उरांव एवं 35 वर्षीय दिनेश उरांव का नाम शामिल है। बताया जाता है कि ऑटो सवार सभी यात्री केस की पैरवी के लिए पूर्णियां व्यवहार न्यायालय जा रहे थे। जानकारी के अनुसार बीआर 11 पी 5547 ऑटो धमदाहा की तरफ से पूर्णिया की ओर जा रहा था। बताया जाता है कि पूर्णियां से धमदाहा की ओर जा रही तेज रफ्तार बीआर 11 टी 9101 छोटी हिंदुस्तानी बस ने गणेशपुर इथेनाल प्लांट और अगस्त नगर डहरिया के बीच यात्री सवार ऑटो में जबरदस्त ठोकर मार दी। बताया जाता है कि ठोकर इतनी जबरदस्त थी की ऑटो के परखजे उड़ गये और बस ने उसे अपनी दिशा में मोड़ लिया। प्रत्यक्ष दर्शियों ने बताया कि घटना के बाद बस चालक मौके से फरार हो गया. थानाध्यक्ष मुकेश कुमार मिश्रा ने बताया कि बस एवं क्षतिग्रस्त ऑटो को कब्जे में ले लिया गया है और मृतकों के शवों को अंत्यपरीक्षण के लिए जीएमसीएच अस्पताल भेज दिया गया है। बताते चले कि सदर एसडीपीओ पुष्कर कुमार मौके पर पहुंचे और घटना का मुआयना किया तथा मृतकों और घायलों के बारे में जानकारी ली।

# भारत छोड़ो आंदोलन के शहीद स्मारकों पर राजकीय समारोह 25 को

पूर्णिया/ धमदाहा । 25 अगस्त 1942 धमदाहा थाना में विदेशी झंडा को हटाकर भारतीय झंडा फहराने वाले वीर शहीद के बलिदान दिवस पर 25 अगस्त 2023 को बिहार सरकार के द्वारा राजकीय सम्मान घोषित किया गया है। राजकीय समारोह घोषित करने के बाद धमदाहा अनुमंडल प्रशासन ने कार्य के सफल आयोजन हेतु बाजार धमदाहा के सभी व्यवसायिक व टेम्पो स्टैंड, किरानी बस स्टैंड किरानी के साथ बैठक किया। बैठक में सभी व्यवसाय स्टैंड किरानी को संबोधित करते हुए अनुमंडल पदाधिकारी राजीव कुमार ने कहा 1942 में तिरंगा फहराने के दौरान धमदाहा थाना में अंग्रेजों की गोली से शहीद हुए वीर सपूतों के सम्मान में बलिदान दिवस को राजकीय समारोह घोषित किया गया है। जिसमें लगभग 10000 एवं 15000 के आसपास लोग इस कार्यक्रम में भाग लेंगे जिसमें जिला स्तर से एवं राज्य स्तर के मंत्री, विधायक, सांसद, आयुक्त, जिला कलेक्टर आदि शामिल रहेंगे जिसमें सुबह 7:00 बजे प्रभात फेरी, 8:15 बजे पुष्पांजलि कार्यक्रम, 8:45 बजे झांकियां निकाली जाएगी। 9:30 बजे से पुरस्कार वितरण किया जाएगा। राष्ट्रीय स्तर के जाने माने फिल्मीस्तान के गायक शब्बीर कुमार का संध्या में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा जिसमें ट्रैफिक व्यवस्था के समस्या उत्पन्न नहीं हो इसके लिए तीन पहिया वाहन का स्टैंड किरासन डिपो के पास होगा। बीकोठी रूट का कोसी प्रोजेक्ट के पास पूर्णिया धमदाहा का डीजल पम्प के पास निर्धारित किया गया है। इस दौरान धमदाहा, भवानीपुर, बी-कोठी मार्ग के दोनों किनारे फुटपाथ पर दुकानें ठेला रिक्शा नहीं लगाई जाएगी। मछली मांस की दुकान पूरे दिन बंद रहेगा। दो बजे बाद सब्जी की दुकान खोली जाऐगी। तीन पहिया और चार पहिया वाहन चालक के द्वारा अवेहलना करने वाले चालक का चलान किया जाऐगा।

## जिला पदाधिकारी के आदेश पर पॉलिटेक्निक कॉलेज में पुलिस ने चलाया सर्च अभियान

हवेली खड़गपुर। खड़गपुर पुलिस ने शनिवार की देर रात प्राप्त शिकायत के आधार पर पॉलिटेक्निक कॉलेज रमणकाबाद हवेली खड़गपुर मुंगेर(03) में छापामारी किया। पुलिस सूत्रों के मुताबिक खड़गपुर पुलिस को सूचना मिली थी, कि पॉलिटेक्निक कॉलेज रमणकाबाद हवेली खड़गपुर मुंगेर 03 में शराब पीने और पिलाने का दौर संस्थान के कर्मचारियों के द्वारा किया जाता रहता है। इसमें संस्थान के कई कर्मचारी शराब सेवन करने में शामिल रहते हैं। पुलिस छापेमारी के संबंध में पूछे जाने पर संस्थान के चपरासी प्रमोद कुमार मंडल ने बताया कि जिला अधिकारी मुंगेर नवीन कुमार के आदेश से खड़गपुर पुलिस सुरक्षा के कारण राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज में आया और संस्थान के छात्रावास में रात को जांच अभियान चलाया। संस्थान के कर्मचारी ने बसाया की हवेली खड़गपुर पुलिस को इस छापामारी में कोई आपत्तिजनक सामान नहीं मिला है। सूत्रों का मन तो पुलिस के आने के पहले ही संस्थान से आपत्तिजनक सामग्री को हटा लिया गया था।

# अररिया के दिवंगत पत्रकार विमल कुमार यादव को मुंगेर में दी गयी श्रद्धांजलि

● बिहार में पत्रकार सुरक्षित नहीं है, जहां अपराधी बेखौफ होकर पत्रकार की हत्या कर रहे है

प्रात : किरण ब्यूरो मुंगेर

मुंगेर : नेशनल जर्नलिस्ट एसोसिएशन मुंगेर जिला कमेटी द्वारा जिलाध्यक्ष ललन राज की अध्यक्षता मे शहीद स्मारक मुंगेर के परिसर मे अररिया के दिवंगत पत्रकार विमल यादव को लेकर शोक सभा का आयोजन किया गया।इस दौरान पत्रकारों द्वारा दो मिनट का मौन धारण कर दिवंगत आत्मा की शांति के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गयी। साथ ही दिवंगत पत्रकार विमल यादव के तेल चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। मौके पर उपस्थित राष्ट्रीय प्रवक्ता रंजीत विद्यार्थी ने कहा कि बिहार में पत्रकार सुरक्षित नहीं है।जहां अपराधी बेखौफ होकर पत्रकार की हत्या कर रहे है।सरकार से मांग है कि मृतक पत्रकार के आश्रितों को मुआवजा दे और अपराध पर अंकुश लगाने की दिशा में ठोस कदम उठाये ताकि प्रदेश के पत्रकार सुरक्षित महसूस कर सके।वही प्रदेश संरक्षक सह विधिक सलाहकार अनिल भूषण ने पत्रकार की निर्मम हत्या पर विरोध जताया और कहां की सरकार स्पीडी ट्रायल चलाकर दोषियों को सजा दे साथ ही मृतक पत्रकार के आश्रितों को मुआवजा व नौकरी दे।पत्रकार प्रशांत कुमार सिंह,मनीष कुमार, जिलाध्यक्ष ललन राज समेत प्रदेश अध्यक्ष अबोध ठाकुर,प्रदेश सचिव विकास सिंह,प्रमंडलीय अध्यक्ष त्रिपुरारी मिश्रा,महासचिव विजय कुमार मंडल,संस्थापक सदस्य पप्पू लाल रंजन,जिला संरक्षक संजीव कुमार, जिला कोषाध्यक्ष विनोद , मिथुन कुमार, पुनीत सिंह,शशिकांत कुमार, भानु पांडे,सुदामा शर्मा,विपिन कुमार, त्रिभुवन चौधरी आदि उपस्थित थे।

# मेरा बूथ सबसे मजबूत अभियान को लेकर भाजपा कार्यकताओं की बैठक

पूर्णिया/ केनगर । प्रखंड अंतर्गत मेरा बूथ सबसे मजबूत एवं 9 साल बेमिसाल अभियान के तहत रहुआ पंचायत भवन में बैठक की गयी। भाजपा कामाख्या मंडल के भाजपा इकाई के कार्यकताओं की 9 साल बेमिसाल एवं बूथ सशक्तिकरण अभियान के तहत रहुआ पंचायत भवन शक्ति केंद्र पर बैठक संपन्न हुआ। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा कामाख्या मंडल इकाई के मंडल अध्यक्ष सच्चिदानंद साह उर्फ सचिन कुमार ने की। संचालन एसटी मंडल अध्यक्ष लक्ष्मण पासवान एवं मंडल संयोजक सुदर्शन मिश्र उर्फ बब्बू ने किया। बैठक के मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा कामाख्या मंडल इकाई अध्यक्ष सच्चिदानंद साह उर्फ सचिन कुमार उपस्थित रहे। उन्होंने कहा मेरा बूथ सबसे मजबूत एवं 9 साल बेमिसाल यह कार्यक्रम पूरे भारत में चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत केंद्र सरकार की उपलब्धियों से जन-जन को अवगत कराया जा रहा है। यह कार्यक्रम केनगर प्रखंड के दक्षिणी भाग भाजपा मंडल इकाई के द्वारा विभिन्न पंचायतों में आयोजन किया जा रहा है। बैठक के दौरान चूनापुर के विद्यापति मिश्र मंडल अध्यक्ष, भाजपा वरिष्ठ उपाध्यक्ष सतीश चंद्र गुप्ता, मंडल महामंत्री प्रकाश कौशिक, उपाध्यक्ष अजय कुमार मिश्र, उपाध्यक्ष सह उप मुखिया पवन कुमार शर्मा, भाजपा महिला मोर्चा अध्यक्ष ममता झा सहित भाजपा कामाख्या मंडल इकाई के तरफ से रहुआ पंचायत के पूर्व स्वतंत्रता सेनानी के पुत्र राम जी मंडल, भूतपूर्व सैनिक बीएसएफ मोहन पासवान, भूतपूर्व सैनिक अशोक पासवान बीएसएफ एवं राजेंद्र पासवान कारगिल में शहीद सीआरपीएफ सैनिक के पुत्र अमन पासवान, सभी को अंग वस्त्र एवं पुस्तक देकर सम्मानित किया।

# बेलगाम ट्रैक्टर व बाइक की हुई भिरंत में एक छात्र की हुई मौत

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। जिले भर की सड़कों पर मौत का दौर लगातार जारी है। इसी कड़ी में एक और घटना घटित होने का मामला सामने आया है।घटना को लेकर मिली जानकारी के मुताबिक औद्योगिक थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्लोबल हॉस्पिटल के समीप एक तेज रफ्तार ट्रैक्टर व बाइक के सीधी टक्कर में बाइक पर सवार दो युवक गम्भीर रूप से घायल हो गया। जिसमें एक युवक की घटनास्थल पर ही मौत हो गई हैं। वहीं दूसरे को आंशिक चोट आई है, जिसे स्थानीय लोगों व राहगीरों ने त्वरित इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है। वही दूसरी ओर इस घटना के चपेट में आ मौत का शिकार हुए मृतक युवक की पहचान गोराडीह प्रखंड के सतजोरि के कैलाश यादव के 23 बर्षीय पुत्र राहुल कुमार के रूप में हुई है। वही घटना को लेकर बताया जा रहा है कि मृतक राहुल खंजरपुर इलाके में एक लॉज में रहकर पढ़ाई कर रहा था, किसी काम से अपने मित्र के साथ बाइक पर सवार हो अपने घर की ओर जा रहा था, तभी तेज रफ्तार ट्रैक्टर चालक व बाइक की जोरदार सीधी टक्कर हो गई। इस घटना में बाइक के परखच्चे उड़ गए और वहीं पर 23 वर्षीय छात्र राहुल की मौके पर ही मौत हो गई। वही घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय थाना पुलिस मौके पर पहुंच घटना की जांच में जुट गई। जिसके बाद पुलिस ने मृतक के शव को अपने कब्जे में ले पोस्टमार्टम प्रक्रिया को लेकर घटना स्थल से शव को उठा मायागंज अस्पताल ले जाया गया। जहां परिजनों के आगमन के बाद पूरे अस्पताल परिसर में कोलाहल मच गयी। वहीं मौजूद पुलिस कर्मियों ने परिजनों के बीच ढाढस बांधने का भावनात्मक रूप में दिलासा दिया। जिसके बाद परिजनों का लिखित फर्द बयान के तहत मृतक युवक के शव को पोस्टमार्टम के लिए नवलाखा भेज दिया।वही घटना से आहत हो परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है।

# जमालपुर शहरी क्षेत्र के जल नल योजना में भारी अनियमितता की बात आई सामने

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेरः अब तक यह योजना शहर वासियों को अमृत देने के बजाय बूंद बूंद पानी के लिए मोहताज बना दिया गया है। क्योंकि पीएचइडी एवं बुडको के पदाधिकारियों की आपसी सामंजस्य की कमी एवं लापरवाही के कारण पिछले 15 सालों से यह योजना अब तक अधर में लटका हुआ है। अब तक एक चौथाई लोगों को भी सही तरीके से पानी नहीं मिल पा रहा है। बुडको के पदाधिकारियों की पूरी टीम को पिछले माह ही परिवर्तन कर दिया गया है। और नई टीम को सख्त निर्देश दिया गया है कि इस योजना में जहां भी खामियां आई है उसे जल्द से जल्द दुरुस्त किया जाए और हर लोगों के घर तक पीने का पानी मुहैया कराया जाए। तथा प्रत्येक दिन के निरीक्षण कार्यों का रिपोर्ट हेड क्वार्टर पटना भेजा जाए। शुक्रवार को टीम के नए पदाधिकारी अस्सिटेंट इंजीनियर अनिल कुमार, जूनियर इंजीनियर निकेश कुमार को वार्ड संख्या 12 के वार्ड पार्षद साईं शंकर ने सदर बाजार स्थित वार्ड संख्या 12 एवं 18 में सभी गली एवं मोहल्ले में ले जाकर समस्या से अवगत कराया। शनिवार को टीम ने डलळ - 4 का निरीक्षण करने से पूर्व वार्ड संख्या 22 एवं 23 से स्थिति मुख्य सड़क पर दो नंबर काली स्थान के पास, छलिया मोड़ के पास, वार्ड संख्या 26 स्थित अल्पसंख्यक बंगाली दुर्गा स्थान के समीप, गुरुद्वारा मोड़ पर स्थित शिव मंदिर के निकट, गुरुद्वारा चौराहा एवं जहांगीर फाड़ी के निकट के सभी लिकेज का निरीक्षण किया तथा इसे 48 घंटे के अंदर दुरुस्त करने का निर्देश दिया गया है।

साईं शंकर ने कहा कि अब यह बहाना बिल्कुल नहीं चल सकता है कि यह पीएचईडी का पाइप है एवं यह बुडको का पाइप है , संबंधित विभाग इसे जल्द से जल्द दुरुस्त करें क्योंकि पानी की बबार्दी अब किसी भी स्तर पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी। डलळ - 4 में भी पदाधिकारियों ने कई तरह की खामी पाई उसे भी दुरुस्त करने का निर्देश दिया गया है तथा वार्ड संख्या 28 के संपूर्ण निरीक्षण के बाद पदाधिकारी ने स्थनीय वार्ड पार्षद राकेश तिवारी को कहा कि वार्ड 28 में लक्षित कनेक्शन को पूर्ण रूप से कंप्लीट करने के बाद ही वार्ड संख्या 25, 26 एवं 24 के कार्य को आगे बढ़ाया जाएगा। अब एक-एक वार्ड को कंप्लीट करके ही सदर बाजार क्षेत्र में स्थित सभी वार्डों को कंप्लीट किया जाएगा। जलापूर्ति का काम अगर अति शीघ्र हो जाता है तभी मुख्य सड़कों का निर्माण कार्य को भी आगे बढ़ाया जा सकता है। किसी के भी घर में कार्यकारी एजेंसी बुडको के कॉन्ट्रैक्टर गनाधिपति इंटरप्राइजेज के द्वारा किए गए कनेक्शन में स्टॉपर, मीटर एवं पीतल का नल यह तीनों चीज एक साथ नहीं लगाया गया है तो ऐसे कनेक्शन को अधूरा कनेक्शन माना जाएगा। तथा सभी कनेक्शन गृह क्षेत्र के अंदर होना चाहिए। पीएचईडी एवं बुडको को आपसी तालमेल कर इस कार्य को अतीत शीघ्र संपादित करने का निर्देश जमालपुर विधायक डॉ अजय कुमार सिंह के द्वारा दिया गया है।

# मंदिर के समीप जमीन के निचे मिला शिवलिंग रूपी पत्थर, दर्शन को उमड़ी ग्रामीणों की भीड़

प्रात : किरण ब्यूरो।

शाहकुंड (भागलपुर)। प्रखंड के पचखटिया गांव से पुरब स्थित बनामानाथ शिव मंदिर के समीप जमीन के नीचे शिवलिंग रूपी पत्थर मिलने से पूरे गांव में शिवभक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी है। मामले को लेकर बताया जा रहा है कि गांव के विनोद राम की नजर इस शिवलिंग रूपी पत्थर पर पड़ी जो जमीन के निचे थोड़ा नजर आ रहा था, जमीन ऊंचा नीचा होने के वजह से मिट्टी दरक गई थी। जिससे ग्रामीण विनोद राम ने वहां थोड़ी सी साफ सफाई करने की कोशिश की लालसा जगी और देखते ही देखते उक्त पत्थर को देखने की चाह में पूरी खुदाई कर दी। जिसके बाद उक्त शिवलिंग रूपी पत्थर को देख आस्था के भाव में उसकी साफ सफाई कर पूजा अर्चना शुरू कर दी। वही उक्त शिवलिंग के निकलने की सूचना आग की तरह पूरे गांव व आसपास के क्षेत्र इलाके में एक लहर दौड़ गई। जिसे देखने के लिए भारी संख्या में ग्रामीणों की भीड़ उमड़ने लगी है। वही मौजूद गांव के लोगों ने बताया कि ग्रामीण विनोद रोजाना की तरह घास काटने के लिए यहां पहुंचे थे।इसी क्रम में घास काट रहे विनोद की नजर उस स्थल पर जमीन के निचले हिस्से में कुछ मिट्टी दरकता हुआ नजर आया तभी ग्रामीण विनोद उक्त स्थल पर कुछ ठोस चीज होने की अंदेशा से मिट्टी की खुदाई के साथ साफ सफाई के लालसा जगी तो उन्होंने अपनी कुदाल से उक्त स्थल पर मिट्टी हटा ही था कि विनोद राम की उसे देखने की लालसा और बढ़ गई करीब 3 फीट की खुदाई ही हुई थी कि उसे शिवलिंग रूपी आकर का पत्थर दिखाई दिया, जो अभी भी जमीन के काफी नीचे तक गड़ा हुआ है। वही इसकी खबर जंगल में आग की तरह फैल गई, ग्रामीण पूजा अर्चना के साथ साथ दर्शन करने देखने के लिए लोगों में भीड़ उमड़ने लगी, वही इस शिवलिंग के स्थलों पर ग्रामीणों ने एक मंदिर बनवाने का विचार किया है। जहां शिवलिंग मिला है वहां उस से पांच सौ फीट दूरी पर दक्षिण दिशा में बनामानाथ शिव मंदिर अवस्थित है। इस संबंध में झारखंड के पुरातत्व पंडित आलोक कुमार बाजपेई ने कहा कि यह शिवलिंग बेहतरीन है। इस शिवलिंग के मिलने से यह स्पष्ट हो गया है कि प्राचीन सभ्यता के साक्ष्य क्षेत्र में है। विश्वास है कि आने वाले समय में इतिहास इस बात का अवश्य दर्ज कराएगा कि मानव सभ्यता की शुरूआत अंग क्षेत्र से ही हुआ है, जो पल्लवित पुष्पित हुई है, ग्राम नगर बसे हैं। जहां के प्रमुख देवता के रूप में शिव की प्रतिष्ठा मिली है। शाहकुंड परिक्षेत्र के आसपास इलाके में खुदाई के दौरान शिवलिंग मिलते रहता है। अब देखने वाली बात है कि इस पत्थर रूपी शिवलिंग के मिलने से इस सावन मास में आस्था के विश्वास पर क्या असर पड़ता है और इस धरोहर को कैसे सुरक्षित रखने के प्रयास करते हैं।

## दुष्कर्म मामले में दो अभियुक्तों को 10-10 साल की सजा व जुमार्ना

पूर्णिया । दुष्कर्म के एक मामले में शेख जुल्फिकार और दिलशाद को 10-10 वर्ष कैद की सजा दी गई है। प्रथम अभियुक्त को 50000 जुमार्ना व दूसरे अभियुक्त 25000 जुमार्ने की राशि लगाई गई है। जुमार्ना राशि नहीं देने पर 6 महीना अतिरिक्त कैद की सजा होगी। घटना साकिन बनगामा बायसी थाना क्षेत्र में घटित है। सत्र वाद विचरण संख्या 1049/14 के तहत प्रथम अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश रोहित शंकर ने सजा सुनाई है। दर्ज मुकदमें के आधार पर अभियुक्त जुल्फीकार सूचिका के घर में घुसकर रसोई घर में दुष्कर्म किया। जिससे वह रोने चीखने लगी तब अभियुक्त ने शादी का दिलासा देकर किसी तरह चुप कराया। फिर कुछ दिन के बाद नदी किनारे सूचीका बकरी बांधने गई तो दोनों अभियुक्तों ने बारी बारी से जबरदस्ती दुष्कर्म किया। फिर हाथ पैर बांधकर नदी में फेंकने की तैयारी करने लगा, हल्ला पर गांव वाले जमा हो गए जिसे देख कर अभियुक्त भाग गया। घटना को लेकर पंचायती हुई और अभियुक्त से शादी की बात की गई, कागज भी बनाया गया, किंतु उसने शादी से इंकार कर दिया। इस मामले के अपर लोक अभियोजक राहुल कुमार राजा ने बतलाया अभियोजन की ओर से कुल 6 गवाहों न्यायालय में दर्ज कराई गई थी।

# फिल्म की कमाई अब सफलता का पैमाना बना

फरवरी 2022 से लेकर अब तक यामी गौतम की पांच फिल्में थिएटर और OTT पर आई हैं। लेटेस्ट फिल्म OMG-2 है। यामी ने बातचीत में कहा कि कलेक्शन के हिसाब से किसी फिल्म की क्वालिटी नहीं मापनी चाहिए। यामी ने कहा कि आज कल साधारण लोग भी ट्रेड की भाषा बोलने लगे हैं। फिल्म अच्छी है या नहीं, यह उसके बॉक्स ऑफिस कलेक्शन से तय किया जा रहा है।

**आम जनता भी ट्रेड की भाषा बोलने लगी है**

यामी ने कहा- मैं अपनी नई फिल्म के लिए ट्रेनिंग कर रही थी। तभी मेरी केयरटेकर मेरे पास आई। उसने कहा कि मैम, आपकी फिल्म बहुत अच्छी है, लेकिन कमाई तो दूसरी फिल्म (गदर-2) रही है। मैं हैरान रह गई। यह सभी बातें इंडस्ट्री वाले करते हैं, लेकिन अब आम जनता भी ट्रेड की भाषा बोलने लगी है। फिल्म कितनी अच्छी है, बात उसकी नहीं हो रही है, बल्कि फिल्म कमा कितना रही है, चर्चा सिर्फ उसकी है। यह बहुत खतरनाक है। डर इस बात का है कि कहीं कलेक्शन ही फिल्म की क्वालिटी का पैमाना न बन जाए।

**यामी का परिवार ही उनका सबसे बड़ा क्रिटिक**

यामी ने कहा- मेरा परिवार ही मेरा सबसे बड़ा क्रिटिक है। अगर वहां से तारीफ मिल जाए तो बात ही क्या होगी। मुझे याद है फिल्म LOST के टाइम पापा ने कहा था- यामी तुम इतनी अच्छी एक्ट्रेस कब बन गई। उन्होंने जिस शिद्दत के साथ कहा, संयोग से वो चीज OMG-2 के वक्त भी रिपीट हुई। ऑडिएंस फिल्म के कोर्ट रूम ड्रामा को एन्जॉय कर रहे थे। पति आदित्य धर ने रिलीज से पहले ही फिल्म देख ली थी। उन्होंने उस वक्त ही कहा था कि यह फिल्म वाकई अच्छा करेगी। सबसे दिलचस्प बात तो रमेश सिप्पी साहब ने कही। उन्होंने कहा कि नेगेटिव रोल में सामने वाले को कन्विंस करवा लेना बड़ी बात है।

**आस-पास की औरतों को देख कर प्रेरणा लेती हैं यामी**

यामी ने इंटरव्यू में आगे कहा- मैं अपने आसपास की औरतों को देख कर प्रेरणा लेती हूं। मैं जब हिमाचल जाती हूं तो देखती हूं कि वहां की औरतें कैसे-कैसे काम करती हैं। एक बार तो एक औरत को देखा कि वो अपने बीमार पति को खुद उठाकर ऊंची पहाड़ी पर अस्पताल ले गई थी। सोचिए, वहां गाड़ियां भी नहीं पहुंच पा रही थीं। हमारे अंदर शक्ति तो है। अगर किरदार की राइटिंग में भी वो चीज झलके तो बात बन जाती है। अच्छी बात यह रही कि इस फिल्म के डायरेक्टर अमित राय ने मेरा किरदार गढ़ने से पहले मेरी फिल्म बत्ती गुल मीटर चालू भी देखी थी। ऐसा इसलिए ताकि वो रोल OMG-2 वाले किरदार से मैच न हो।

**स्कूल में सेक्स एजुकेशन को शामिल करना चाहिए या नहीं**

इस पर यामी ने कहा- इंटरनेट के जमाने में हर एक व्यू पॉइंट मिल जाएगा। हालांकि स्कूली शिक्षा का इससे महत्व कम नहीं होता। कई बार फिल्में समाज में गहरा असर डाल देती हैं। फिल्मों में दिखाए जाने के बाद समाज में डिस्कशन शुरू होता है। अब कुछ स्कूल प्रशासन भी सोच रहे होंगे कि हमें सेक्स एजुकेशन के बारे में पढ़ाना चाहिए। हमारी फिल्म तभी सफल हुई है जब लोगों ने इसे एक्सेप्ट किया है। इसका मतलब इस सब्जेक्ट के बारे में बात होनी चाहिए।

# वेब शो का हिस्सा बनना चाहती हैं अमीषा पटेल

**निर्माता -निर्देशक अनिल शर्मा की फिल्म गदर 2 11 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज हो गई है। जब से इस फिल्म का ट्रेलर और गाने रिलीज हुए हैं। फिल्म को लेकर दर्शकों के बीच खूब उत्सुकता देखने को मिल रही थी। सनी और अमीषा की फिल्म को दर्शकों की अच्छी खासी प्रतिक्रिया मिल रही है और यह बॉक्स ऑफिस पर भी जबर्दस्त प्रदर्शन कर रही है। अब अमीषा ने वेब कंटेंट पर अपने विचार प्रकट किए हैं।**

'गदर 2' स्टार अमीषा पटेल को हाल ही में होमोफोबिक टिप्पणियां करने और यह सुझाव देने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा था कि ओटीटी प्लेटफार्मों पर उपलब्ध सामग्री भारतीय संवेदनाओं के लिए ठीक नहीं है। हालांकि, अब अभिनेत्री ने कहा है कि वह ओटीटी प्लेटफॉर्म पर एक वेब सीरीज में नजर आना चाहती हैं। अमीषा ने अपने हालिया इंटरव्यू में कहा, मुझे लगता है कि उस वर्ग को गलत समझा गया क्योंकि ओटीटी पर जो कुछ भी चल रहा है उसके खिलाफ मेरे पास कुछ भी नहीं है। मैं केवल लोगों से सुनती थी कि हमने कई शो और इस तरह की चीजों पर चाइल्ड लॉक लगा दिया है क्योंकि हम परिवार के साथ 90% ओटीटी शोज नहीं देख सकते हैं क्योंकि इसमें बहुत अधिक अपमानजनक भाषा या बहुत अधिक नग्नता या हिंसा होती है। यह डार्क सामग्री है और हम पारिवारिक सामग्री चाहते हैं।' अमीषा ने आगे कहा, 'मुझे मेरे विचारों के लिए गलत समझा गया है। मैं वेब शो करना पसंद करूंगी। फिल्मों के बाद अब मेरी वेब शोज में भी काम करने की इच्छा है। मैं लोगों से यही गुजारिश करूंगी कि मेरी बातों का गलत मतलब न निकाले। मुझे वेब शोज से कोई दिक्कत नहीं है।' निर्माता -निर्देशक अनिल शर्मा की फिल्म गदर 2, 11 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज हो गई है। फिल्म को दर्शकों की काफी अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है।

# मुझे और मेरे बेटों को कभी ड्यू क्रेडिट नहीं मिला

फिल्म उद्योग में इन दिनों देओल परिवार की चर्चा बहुत हो रही है। इसका कारण है इस परिवार के सदस्यों की दो फिल्मों को जबरदस्त सफलता मिलना। एक तरफ जहाँ सनी देओल अपनी हालिया प्रदर्शित हुई 300 करोड़ी फिल्म गदर-2 को लेकर सुर्खियों में हैं, वहीं दूसरी ओर 89 साल के धर्मेन्द्र अपनी हालिया ब्लॉकबस्टर हुई फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी की सफलता का आनन्द उठा रहे हैं। इन दोनों फिल्मों की चर्चाओं के बीच धर्मेन्द्र का हाल ही में दिया गया एक साक्षात्कार सुर्खियों में है जिसमें उन्होंने कहा है कि कभी उनके परिवार को उनका क्रेडिट नहीं मिला। इस बात के अतिरिक्त धर्मेंद्र ने इंटरव्यू में कई बातों का अफसोस जताया है।

**हमारा परिवार कभी अपनी मार्केटिंग नहीं करता**

एक इंटरव्यू में धर्मेंद्र ने कहा कि वो और उनके दोनों बेटे सनी और बॉबी देओल अपनी मार्केटिंग नहीं करते। धर्मेंद्र को लगता है कि ना सिर्फ वो और सनी बल्कि बॉबी भी अपने लिए काफी अच्छा काम कर रहे हैं। इसके बावजूद भी उनके परिवार के काम को कोई स्वीकार नहीं करता। गौरतलब है कि फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी में धर्मेंद्र ने रणवीर सिंह के दादा का किरदार निभाया है।

**फैंस के दम पर टिका है देओल परिवार**

धर्मेंद्र ने अपने साक्षात्कार में आगे कहा, 'मेरे परिवार को कभी उसका ड्यू नहीं मिला। हमारा परिवार फैंस के प्यार के दम पर टिका हुआ है। इंडस्ट्री में कभी मुझे भी मेरे काम के लिए याद नहीं किया। 1969 में रिलीज हुई मेरी फिल्म 'सत्यकाम' के लिए भी मुझे कभी कोई अवॉर्ड नहीं मिला। धर्मेन्द्र इन दिनों अपनी अगली अनटाइटल्ड फिल्म में व्यस्त हैं जिसमें शाहिद कपूर और कृति सेनन नजर आएंगे। वहीं बॉबी देओल, रणबीर कपूर स्टारर 'एनिमल' में विलेन के रोल में होंगे। सनी देओल इन दिनों हालिया रिलीज ब्लॉकबस्टर 'गदर 2' की सक्सेस एंजॉय कर रहे हैं। हालांकि उन्होंने भी पत्रकारों को हाल ही में दिए अपने एक साक्षात्कार में कहा है कि जल्द ही वो गदर-3 लाने की तैयारी में हैं। अब देखने वाली बात यह है कि गदर-3 की घोषणा कब होती है और यह कब परदे पर आती है, क्योंकि गदर-2 को सिनेमाई परदे पर आने में 22 साल लग गए।

# डॉन 3 में कियारा नहीं कृति?

डॉन 3 फिल्म को लेकर जोरशोर से चर्चा हो रही है। फरहान अख्तर ने ऐलान किया है कि फिल्म में रणवीर सिंह लीड रोल में होंगे। इस ऐलान के बाद ये चर्चा होने लगी कि फिल्म में रणवीर सिंह की हिरोइन कौन होगी? आखिर कौन रोमा का किरदार निभाएगी। जब कियारा आडवाणी को प्रोड्यूसर रितेश सिधवानी के ऑफिस के बाहर देखा तो ये कयास लगने लगे कि वो डॉन 3 में रणवीर की रोमा बनेंगी। साथ ही ये खबर भी सामने आई कि फिल्म में कियारा नया किरदार निभाएंगी। उनको नया रोल ऑफर किया गया है। कियारा के फैंस अभी खुशी से फूले नहीं समा रहे थे कि अचानक ये कहा जाने लगा कि उन्हें फिल्म से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया है! कहा जा रहा है कि कृति सेनन ने कियारा को फिल्म से रिप्लेस कर दिया है। वो भी रितेश सिधवानी के ऑफिस के बाहर स्पॉट हुईं। हालांकि, कुछ यूजर्स इस पर बेहूदा रिएक्शन भी दे रहे हैं। उनका कहना है कि कृति सेनन को फिल्म में कास्ट करने से वो मूवी चौपट हो जाएगी। उधर, मेड इन हेवन शोभिता धुलिपाला के फैंस उन्हें डॉन 3 में देखना चाहते हैं, जिस पर एक्ट्रेस ने रिएक्ट करते हुए कहा कि अगर ऐसा हुआ तो उनका सपना पूरा हो जाएगा। पहली डॉन फिल्म साल 1978 में रिलीज हुई थी, जिसमें अमिताभ बच्चन थे। फिर 2006 में डॉन रीबूट आई, जिसमें शाहरुख खान थे। फिर डॉन 2 साल 2011 में रिलीज हुई।

# अपने आप में इंडस्ट्री बन चुके हैं सनी

सनी देओल और अमीषा पटेल की 'गदर 2' मूवी लगातार धूम मचा रही है। आम लोगों के साथ सेलेब्स भी इसकी तारीफ करते नहीं थक रहे हैं। अब दिग्गज एक्टर अनुपम खेर की रिएक्शन सामने आई है। अनुपम ने हाल ही में सिंगल स्क्रीन पर 'गदर 2' देखी। इसके बाद उन्होंने फिल्म की तारीफ करते हुए एक लंबी-चौड़ी पोस्ट शेयर की है। ये पोस्ट सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। दरअसल अनुपम ने 32 साल बाद मुंबई के गेइटी गैलेक्सी थिएटर में जाके फिल्म देखी और रिव्यू भी दिया। अनुपम ने ट्विटर हैंडल पर थिएटर से एक वीडियो और फिल्म का पोस्टर शेयर करते हुए लिखा, 'अभी बांद्रा के गेइटी गैलेक्सी थिएटर में ॥त्रड्डस्रड्डह्न2 देखी। पिछली बार मैं इस सिंगल स्क्रीन थिएटर में अपनी फिल्म ॥ ।ह्वद्ब के प्रीमियर के लिए गया था। ॥त्रड्डस्रड्डह्न2 न केवल स्क्रीन पर कलाकारों द्वारा बल्कि थिएटर में दर्शकों द्वारा भी महसूस की गई भावनाओं की सुनामी है। ये आपको एक रोलर कोस्टर राइड पर ले जाती है। ये आपको एक गौरवान्वित भारतीय होने का मतलब समझाती है। असल में ये हमारे देश की बहुसंस्कृति/बहुधर्म पहलू को मनाने वाली फिल्म है। ये बेहद अच्छी है। फिल्म के हर डायलॉग पर भीड़ जोर-जोर से चिल्लाने लगती है। सनी देओल अब एक्टर नहीं हैं। वे अपने आप में एक इंडस्ट्री बन चुके हैं। उल्लेखनीय है कि अनुपम ने सनी के साथ कई फिल्मों में काम किया है।

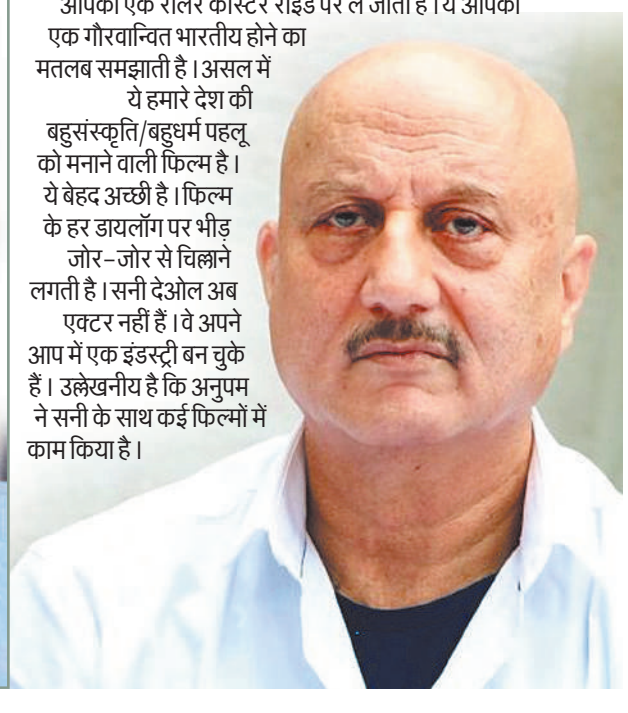

# कंगना रनौत ने संजय लीला भंसाली की जमकर की तारीफ

एक्ट्रेस कंगना रनौत ने फिल्म निर्माता संजय लीला भंसाली की प्रशंसा की है और उन्हें भगवान और लीजेंड कहा। कंगना ने इंस्टाग्राम पर एक नोट पोस्ट किया, जिसमें बताया गया कि कैसे वह फिल्म निर्माता द्वारा दी गई भूमिकाएं और नंबर नहीं ले सकीं। अभिनेत्री ने लिखा- एक कलाकार के रूप में मैं संजय लीला भंसाली की गहराई से प्रशंसा करती हूं, वह कभी भी सफलता या महिमा का दिखावा नहीं करते... वह इस समय फिल्म उद्योग में रहने वाले सबसे सच्चे कलाकार हैं... मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानती जो सिनेमा से इतना प्यार करता हो और अपने जुनून से इतना प्रेरित हो... सबसे बढ़कर वह अपने काम से काम रखते है, वह लीजेंड है... मैं सिर्फ संजय सर से प्यार करती हूं... प्यार।

उन्हें भगवान कहते हुए उन्होंने कहा, सालों से एसएलबी प्रोडक्शन द्वारा मुझे कुछ सॉन्ग/रोल ऑफर किए गए, किसी न किसी कारण से मैं उन्हें नहीं कर सकी, आज भी अगर मैं उन्हें देखना चाहती हूं या उनके साथ बातचीत करने के लिए उनके घर जाना चाहती हूं, तो वह मेरे सामने लिविंग गॉड की तरह बैठे हैं और धीरे-धीरे मुस्कुरा रहे हैं, अपनी आंखों से दया और प्रशंसा की बारिश कर रहे हैं, कम शब्दों में बोलने वाले एसएलबी जी अद्भुत हैं। यह 2020 में एक इंटरव्यू के दौरान था, जब एक्ट्रेस ने साझा किया था कि फिल्म निर्माता ने उन्हें गोलियों की रासलीला राम लीला में एक सॉन्ग की पेशकश की थी, लेकिन वह काम नहीं कर सकी। इसपर उन्होंने अफसोस जाहिर किया। इस बीच, कंगना अगली बार चंद्रमुखी 2 में दिखाई देंगी, जिसमें राघव लॉरेंस भी हैं और यह रजनीकांत और ज्योतिका अभिनीत ब्लॉकबस्टर तमिल फिल्म चंद्रमुखी की अगली कड़ी है। उनके पास सर्वेश मेवाड़ा की तेजस भी है, जो 20 अक्टूबर को रिलीज होने की उम्मीद है, और इमरजेंसी भी है। फिल्म में अनुपम खेर, सतीश कौशिक और मिलिंद सोमन भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं और यह 24 नवंबर को रिलीज होने वाली है।

## रिलायंस इंडस्ट्रीज,ऑयल इंडिया समेत कई स्टॉक अगले हफ्ते करेंगे ट्रेड

दिल्ली। सोमवार, 21 अगस्त से शुरू होने वाले सप्ताह में रिलायंस इंडस्ट्रीज, ऑयल इंडिया, आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, रेलटेल कॉर्पोरेशन सहित कई अन्य कंपनियों के शेयर एक्स-डिविडेंड पर ट्रेड करेंगे। इसके अतिरिक्त, वीर ग्लोबल इंफ्राकंस्ट्रक्शन लिमिटेड के शेयर 22 अगस्त को एक्स-बोनस ट्रेड करेंगे।

## टाटा स्टील, एलएंडटी जैसी कंपनियों में भी एआई विशेषज्ञों की डिमांड

दिल्ली। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विशेषज्ञों की मांग है केवल आईटी या टेक्नॉलजी बेस्ड कंपनियों में ही नहीं है बल्कि स्टील निर्माता कपनी टाटा स्टील, इंजीनियरिंग फर्म लार्सन एंड टुब्रो और चॉकलेट प्रमुख मोंडेलेज जैसी पुरानी नॉन-टेक्निकल कंपनियां भी एआई प्रतिभाओं को काम पर रख रही हैं।

# एयरोफ्लेक्स इंडस्ट्रीज लिमिटेड के साथ इस कंपनी का आईपीओ भी खुलेगा

**नई दिल्ली, एजेंसी।** अगस्त के तीसरे सप्ताह में कई आईपीओ निवेशकों के लिए खुलेंगे। वैसे तो शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव जारी है। भारतीय करेंसी कमजोर हो गई है, इसके साथ बढ़ती घरेलू मुद्रास्फीति, विदेशी निवेश में गिरावट और चीन की मंदी ने काफी चिंता बढ़ा दिया है। इसके अलावा अमेरिकी ब्याज दरों में भी बढ़त बनी हुई है। इस हफ्ते की कंपनी के आईपीओ खुलेंगे। आइए, जानते हैं कि इस हफ्ते कौन-से आईपीओ खुलने वाले हैं।

### विष्णु प्रकाश आर पुंगलिया लिमिटेड

24 अगस्त 2023 (गुरुवार) को विष्णु प्रकाश आर पुंगलिया लिमिटेड का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा और 28 अगस्त को बंद हो जाएगा। कंपनी ने आईपीओ का प्राइस बैंड 94 रुपये से 99 रुपये तय किया है। एंकर निवेशकों के लिए नीलामी 23 अगस्त को शुरू होगी। इस आईपीओ में प्रति शेयर का फेस वैल्यू 10 रुपये है। कंपनी का आईपीओ अगले महीने 5 सितंबर को बीएसई और एनएसई पर लिस्ट की जाएगी। विष्णु प्रकाश आर पुंगलिया आईपीओ ने क्यूआईबी 50 फीसदी से ज्यादा शेयर रिजर्व किये हैं। वहीं एनआईआई के लिए 15 फीसदी और रिटेल निवेशकों के लिए 35 फीसदी रिजर्व है। कंपनी के कर्मचारियों के लिए 3,00,000 तक के शेयर को आरक्षित रखा गया है। कंपनी ने 31.20 मिलियन फ्रेश शेयर जारी किये हैं।

### एयरोफ्लेक्स इंडस्ट्रीज लिमिटेड

अगले हफ्ते एयरोफ्लेक्स इंडस्ट्रीज लिमिटेड का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलने वाला है। कंपनी का आईपीओ 22 अगस्त को खुलेगा और 24 अगस्त को बंद होगा। कंपनी ने आईपीओ का प्राइस बैंड 102 रुपये से 108 रुपये प्रति शेयर निर्धारित किया है। कंपनी का आईपीओ 21 अगस्त को एंकर निवेशकों के लिए खुलेगा। 29 अगस्त को कंपनी के शेयर का अलॉटमेंट होगा। 30 अगस्त को शेयरों का रिफंड प्रोसेस शुरू होगा। 1 सितंबर को कंपनी का आईपीओ दोनों सूचकांक पर लिस्ट होंगे।

## एसबीआई ने करोड़ों ग्राहको दी बड़ी खुशखबरी, 400 दिनों वाली स्पेशल एफडी स्कीम की डेडलाइन बढ़ी

**नई दिल्ली एजेंसी।** अगर आप फिक्स्ड डिपॉजिट में निवेश करके ज्यादा मुनाफा कमाने की सोच रहे हैं तो यह खबर आपके लिए है। देश के सबसे बड़े सरकारी लेंडर भारतीय स्टेट बैंक ने अमृत कलश स्पेशल एफडी स्कीम की मियाद को 31 दिसंबर तक बढ़ा दिया है। इस स्पेशल एफडी स्कीम के तहत एसबीआई अपने जनरल कस्टमर्स को 7.1 पर्सेंट जबकि अपने सीनियर सिटीजन ग्राहकों को 7.60 पर्सेंट का ब्याज दे रहा है। बता दें कि एसबीआई की 400 दिनों वाली ये स्पेशल एफडी स्कीम 15 फरवरी को लॉन्च की गई थी। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया अपने ग्राहकों को 7 दिन से 45 दिन की एफडी पर 3 पर्सेंट, 46 दिन से 179 दिन की एफडी पर 4.50 पर्सेंट जबकि 180 दिन से लेकर 210 दिन की एफडी पर 5.25 पर्सेंट का ब्याज दे रहा है।

## चावल से रूई तक, किसानी में अब उतना फायदा नहीं रहा

**नई दिल्ली एजेंसी।** खाने-पीने की चीजों की कीमतें समय के साथ काफी अधिक बढ़ी हैं। इसके बावजूद सभी प्रमुख फसलों पर किसानों का मुनाफा लगातार घट रहा है। अतुल ठाकुर के विश्लेषण के अनुसार साल 2010-11 में भारत का गन्ना किसान अपनी फसल में हर एक रुपये की लागत पर 2.8 रुपये कमाता था। साल 2020-21 तक वह प्रत्येक रुपये पर 2.1 रुपये ही कमा पा रहे था। कपास के किसानों की बात करें, तो मुनाफा और भी घटा है। साल 2009-10 में वे हर 1 रुपये की लागत पर 1.8 रुपये कमाते थे। साल 2020-21 तक यह गिरकर 1.3 रुपये पर आ गया।

### इनकम की तुलना में तेजी से बढ़ी लागत

ऐसा इसलिए हुआ है, क्योंकि किसानों की प्रति हेक्टेयर इनकम की तुलना में लागत तेजी से बढ़ी है। कपास जैसी फसलों के मामले में तो कमाई रुक सी गई है। सीएसीपी के आंकड़ों के अनुसार गन्ने के लिए प्रति हेक्टेयर ग्रॉस रिटर्न टीई 2010-11 और टीई 2020-21 के बीच 37.2 फीसदी बढ़ा। रुपये के हिसाब से देखें तो किसानों की कमाई 82,791 रुपये प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 1.13 लाख रुपये प्रति हेक्टेयर हो गई। हालांकि, इस अवधि में गन्ने की लागत 116 फीसदी बढ़ गई। परिणामस्वरूप ग्रॉस रिटर्न मार्जिन लागत के 177 प्रतिशत से घटकर 112 प्रतिशत रह गई।

## इस सप्ताह वैश्विक रुझानों, विदेशी निवेशकों की चाल से तय होगी बाजार की दिशाः विश्लेषक

**नई दिल्ली, एजेंसी।** कंपनियों के तिमाही नतीजों की घोषणा पूरी होने के साथ घरेलू शेयर बाजार का रुख इस सप्ताह काफी हद तक वैश्विक रुझानों और विदेशी निवेशकों की चाल से तय होगा। विशेषज्ञों ने कहा कि वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड और डॉलर के मुकाबले रुपए की कीमत भी बाजार के रुझान को प्रभावित करेगी। स्वास्तिका इन्वेस्टमार्ट लिमिटेड के वरिष्ठ तकनीकी विश्लेषक प्रवेश गौड़ ने कहा, आने वाले दिनों में व्यापक आर्थिक संकेतक, वैश्विक शेयर बाजारों के रुझान और एफआईआई की चाल बाजार को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। मास्टर कैपिटल सर्विसेज लिमिटेड के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अरविंदर सिंह नंदा ने कहा कि बाजार कुछ प्रमुख वैश्विक घटनाओं जैसे अमेरिका में मौजूदा घरेलू बिक्री, बेरोजगारी के आंकड़े और यूरोजोन एसएंडपी वैश्विक समग्र पीएमआई से प्रभावित होगा। मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज के खुदरा शोध प्रमुख सिद्धार्थ खेमका ने कहा, सूचकांक में प्रमुख हिस्सेदारी रखने वाले रिलायंस पर सबका ध्यान रहेगा, क्योंकि जियो फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड सोमवार को सूचीबद्ध होने वाली है। शेयर बाजार से मिली जानकारी के मुताबिक रिलायंस इंडस्ट्रीज की अलग वित्तीय सेवा इकाई जियो फाइनेंशियल सर्विसेज 21 अगस्त को शेयर बाजार में सूचीबद्ध होगी। पिछले सप्ताह, बीएसई सेंसेक्स 373.99 अंक या 0.57 प्रतिशत गिरकर बंद हुआ था, जबकि निफ्टी 118.15 अंक या 0.60 प्रतिशत टूटकर बंद हुआ।

## भारतीय खाद्य, पेय पैकेजिंग उद्योग के 2029 तक 86 अरब डॉलर का होने की उम्मीद

**मुंबई एजेंसी।** अखिल भारतीय खाद्य प्रसंस्करण संघ ने कहा है कि शहरीकरण में तेजी, बढ़ती खर्च करने योग्य आय और उपभोग के बदलते तरीकों के चलते भारतीय खाद्य एवं पेय पैकेजिंग उद्योग के 2029 तक 86 अरब डॉलर का होने की उम्मीद है। यह उद्योग फिलहाल सालाना 14.8 प्रतिशत की दर से वृद्धि कर रहा है। अखिल भारतीय खाद्य प्रसंस्करण संघ के पश्चिमी क्षेत्र के अध्यक्ष प्रबोध हल्दे ने फूड इंग्रीडिएंट्स (फाई इंडिया) और प्रोपैक इंडिया के अंतिम दिन बयान में कहा, कोविड-19 महामारी के बाद प्राकृतिक खाद्य पदार्थों की मांग बढ़ी है। पौष्टिक-औषधीय पदार्थों और जैविक खाद्य पदार्थों के लिए एफएसएसएआई के नए नियम इस क्षेत्र में वृद्धि को गति दे रहे हैं। प्राकृतिक, जैविक, शाकाहारी और भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग वाले उत्पाद जैसे रुझान माहौल को नया आकार दे रहे हैं। उन्होंने इंफॉर्मा मार्केट्स इन इंडिया द्वारा 17 से 19 अगस्त तक आयोजित फूड इंग्रीडिएंट्स (फाई इंडिया) के 17वें संस्करण और प्रोपैक इंडिया के पांचवें संस्करण में कहा कि संगठित पैकेज्ड सामग्री बाजार का मूल्य सालाना लगभग 20,000 करोड़ रुपये है, जो खुले उत्पादों से पैकेज्ड उत्पादों की ओर बदलाव का संकेत देता है। एफआई इंडिया में 230 से अधिक प्रदर्शकों और 1,000 से अधिक ब्रांड ने भाग लिया, जबकि प्रोपैक इंडिया में 85 प्रदर्शकों और 300 से अधिक ब्रांड ने भाग लिया। प्रदर्शनियों में नीदरलैंड, डेनमार्क, फ्रांस, बेल्जियम, अमेरिका, पोलैंड, जापान, हांगकांग, सिंगापुर और थाईलैंड के अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शक शामिल हुए। हल्दे ने कहा, भारतीय खाद्य और पेय पैकेजिंग उद्योग वर्तमान में (2022 में) 32 अरब डॉलर है, और 2029 तक 14.8 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़कर 86 अरब डॉलर होने का अनुमान है।

## 5638 प्रतिशत चढ़ गया 22 का यह शेयर, लगातार चढ़ने के बाद अब रॉकेट बन गया भाव, निवेशक गदगद

**नई दिल्ली एजेंसी।** ट्रेडिंग सेक्टर की अशनिशा इंडस्ट्रीज ने हाल ही में तिमाही नतीजे का ऐलान किया है। शानदार तिमाही नतीजे के बाद से ही कंपनी के शेयरों में तूफानी तेजी है। बीते शुक्रवार को अशनिशा इंडस्ट्रीज के शेयर बीएसई पर 3.66 प्रतिशत की तेजी के साथ 22.38 रुपये पर बंद हुए। वहीं, ट्रेडिंग के दौरान शेयर की कीमत 4 प्रतिशत तक की तेजी के साथ 22.66 रुपये पर पहुंच गई। एक हफ्ते में यह शेयर बीएसई के मुकाबले करीब 10 प्रतिशत तक चढ़ चुका है।

### मल्टीबैगर रिटर्न देने वाला शेयर

यह शेयर निवेशकों को एक साल की अवधि में मल्टीबैगर रिटर्न दे चुका है। बीएसई के मुकाबले एक साल की अवधि में निवेशकों को 1140 प्रतिशत तक का रिटर्न मिला है। दो साल का यह रिटर्न 3100 प्रतिशत का रहा है। वहीं, 3 साल का रिटर्न 5638 प्रतिशत मिल चुका है। बता दें कि शेयर के 52 हफ्ते का निचला स्तर 1.56 रुपये है। यह 52 हफ्ते का निचला स्तर है। वहीं, शेयर ने 52 हफ्ते का हाई 25.72 रुपये को जून 2023 में टच किया था।

### कैसे थे तिमाही नतीजे

जून 2023 की तिमाही में अशनिशा इंडस्ट्रीज की बिक्री 313.43 प्रतिशत बढ़कर 2.18 करोड़ रुपये हो गई। जून 2022 की तिमाही में 0.53 करोड़ की बिक्री थी। वहीं, जून तिमाही के दौरान नेट प्रॉफिट 0.30 करोड़ रुपये था, जो एक साल पहले की इसी अवधि से 19.81 प्रतिशत अधिक है। वहीं, अशनिशा इंडस्ट्रीज के गैर-प्रवर्तकों को 20,00,000 इक्विटी शेयरों का आवंटन किए जाने की मंजूरी मिली है। यह आवंटन प्रिफेंशियल बेसिस पर किया जा रहा है। यह आवंटन घनश्याम-धनंजय गंवली और प्रज्ञा एस जोशी को किया गया है।

## 2030 तक 1 ट्रिलियन डॉलर का हो जाएगा रियल एस्टेट का कारोबार, यहां होगी ज्यादा डिमांड!

**नई दिल्ली एजेंसी।** वित्त वर्ष 2021 के दौरान भारत का प्रॉपर्टी मार्केट 200 अरब डॉलर था। अब अनुमान लगाया जा रहा है वित्त वर्ष 2030 तक यह सेक्टर एक ट्रिलियन बढ़कर हो जाएगा। वहीं उम्मीद है कि रियल एस्टेट सेक्टर 2025 तक देश की जीडीपी में 13 फीसदी का का योगदान देगा।

एक रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत का रियल एस्टेट सेक्टर का भविष्य काफी अच्छा है और आने वाले समय में यह तेजी से तरक्की करने वाला है। इंडिया का रियल एस्टेट सेक्टर में निवेशकों की संख्या और पैसा तेज गति से बढ़ने वाला है। इसे और सरल तरीके से कहें तो आने वाले समय में इस सेक्टर के निवेशकों के लिए अच्छा समय होने की उम्मीद है। रियल एस्टेट सेक्टर में उछाल देश के कुछ शहरों में सबसे ज्यादा मांग लेकर आएगा। इसमें मुंबई, दिल्ली और बेंगलुरु जैसे बड़े शहर शामिल हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि इन शहरों के कुछ हिस्सों में बजट में प्रॉपर्टी बिकेंगी और लोगों का इसकी ओर रुझान ज्यादा हो सकता है।

### मुंबई में यहां सस्ते में मिल रहा अपार्टमेंट

एक्सपर्ट के हवाले से रिपोर्ट में कहा गया है कि मुंबई के भीतर कुछ क्षेत्र खासकर कांजुर मार्ग, विक्रोली और भांडुप में करीब 70 फीसदी प्रॉपर्टी की खरीदारी की गई है। इस एरिया के भीतर एक बेडरूम वाले अपार्टमेंट की कीमत 80 लाख रुपए से 90 लाख रुपए तक है, जबकि दो बेडरूम वाले अपार्टमेंट की कीमत 1.5 करोड़ रुपए तक है।

### किफायती कीमत में यहां भी मिल सकते हैं घर

गौरतलब है कि भारतीय रियल एस्टेट क्षेत्र विकास और अवसर के प्रतीक के तौर पर उभर रहा है। मुंबई में एक और आशाजनक रास्ता पश्चिमी गलियारे में है, जिसमें बोरीवली, कांदिवली, दहिसर जैसे क्षेत्र शामिल हैं। यह आने वाले समय में एक कीफायती कीमत में अपार्टमेंट पेश कर सकता है।

## टाइटन ने 4,621 करोड़ रुपए में कैरटलेन की अतिरिक्त 27.2 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदी

**नई दिल्ली, एजेंसी।** ब्रांडेड आभूषण निर्माता टाइटन ने अपनी अनुषंगी कंपनी कैरटलेन में 27.18 प्रतिशत हिस्सेदारी और खरीद ली है। टाइटन ने शनिवार को बताया कि अब कैरटलेन में उसकी कुल हिस्सेदारी 98.28 प्रतिशत हो गई है। टाटा समूह के नियंत्रण वाली कंपनी ने शनिवार को शेयर खरीद समझौता करते हुए कैरटलेन ट्रेडिंग प्राइवेट लिमिटेड और उनके पारिवारिक सदस्यों से 91.90 लाख इक्विटी शेयरों का अधिग्रहण कर लिया। कंपनी ने कहा, कैरटलेन टाइटन की अनुषंगी है और उपरोक्त शेयर खरीद के बाद कैरेटलेन में कंपनी की शेयरधारिता 71.09 प्रतिशत से बढ़कर 98.28 प्रतिशत हो जाएगी। सौदे की कीमत पर टाइटन ने कहा कि वह कैरटलेन के 21.18 प्रतिशत इक्विटी शेयर के लिए वह 4,621 करोड़ रुपए चुकाएगी।

## भारती एयरटेल ने भारत के सभी 22 दूरसंचार सर्किलों में 5जी सेवाओं के न्यूनतम रोल-आउट दायित्व को सफलतापूर्वक पूरा किया

**नई दिल्ली, एजेंसी।** भारत के अग्रणी टेलीकॉम सर्विस प्रोवाइडर्स में से एक भारती एयरटेल ने आज घोषणा की है कि कंपनी ने दूरसंचार विभाग द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार, भारत की सभी 22 दूरसंचार सर्किलों में 26 गीगाहर्ट्ज स्पेक्ट्रम पर 5जी सेवाएं शुरू करने की न्यूनतम रोल-आउट बाध्यता को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। यह सेवाएं न्यूनतम कवरेज आवश्यकता को पूरा करने के लिए दूरसंचार विभाग के नियमों का पालन करते हुए शुरू की गई हैं। 26 गीगाहर्ट्ज़ द्वारा सक्षम 5जी की व्यापक संभावनाओं के साथ, कंपनी अपने ग्राहकों के लिए एयरटेल 5जी प्लस का सर्वोत्तम अनुभव प्रदान करने के लिए लगातार नवीनतम तकनीक को बढ़ावा देने के लिए तैयार है। व्यावहारिक तौर पर एयरटेल के 5त्न नेटवर्क के प्रदर्शन ने, इसकी उल्लेखनीय क्षमता और ग्राहकों द्वारा 5त्न अपनाने की बढ़ती गति को प्रदर्शित किया है। एयरटेल की 5त्न प्लस सेवा अब देश भर के 5000 से अधिक शहरों और कस्बों में उपलब्ध है। कंपनी ने राष्ट्रीय स्तर पर अपने 5त्न नेटवर्क पर 10 मिलियन ग्राहकों की अद्वितीय संख्या को पार कर लिया है और सितंबर 2023 तक कंपनी अपनी 5त्न प्लस सेवा के साथ हर शहर और प्रमुख ग्रामीण क्षेत्र को कवर करने के लिए तैयार है। कंपनी ने ग्राहकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से असीमित 5त्न डेटा प्लान्स भी लॉन्च किए है, जिससे उनको एयरटेल के 5जी प्लस नेटवर्क का अनुभव मिलेगा। एयरटेल ने सभी मौजूदा प्लान में डेटा उपयोग पर लिमिट हटा दी है, जिससे ग्राहक अब डेटा की चिंता किए बिना अल्ट्राफास्ट, विश्वसनीय और सुरक्षित 5जी प्लस सेवाओं का अनुभव ले पाएंगे।

# क्रेडिट स्कोर है 700 से ऊपर तो यूनियन बैंक में मिल रहा है लोन पर ऑफर

**नई दिल्ली एजेंसी।** खाने-पीने की चीजों की कीमतें समय के साथ काफी अधिक बढ़ी हैं। इसके बावजूद सभी प्रमुख फसलों पर किसानों का मुनाफा लगातार घट रहा है। अतुल ठाकुर के विश्लेषण के अनुसार साल 2010-11 में भारत का गन्ना किसान अपनी फसल में हर एक रुपये की लागत पर 2.8 रुपये कमाता था। साल 2020-21 तक वह प्रत्येक रुपये पर 2.1 रुपये ही कमा पा रहे था। कपास के किसानों की बात करें, तो मुनाफा और भी घटा है। साल 2009-10 में वे हर 1 रुपये की लागत पर 1.8 रुपये कमाते थे। साल 2020-21 तक यह गिरकर 1.3 रुपये पर आ गया। ऐसा इसलिए हुआ है, क्योंकि किसानों की प्रति हेक्टेयर इनकम की तुलना में लागत तेजी से बढ़ी है। कपास जैसी फसलों के मामले में तो कमाई रुक सी गई है। सीएसीपी के आंकड़ों के अनुसार गन्ने के लिए प्रति हेक्टेयर ग्रॉस रिटर्न टीई 2010-11 और टीई 2020-21 के बीच 37.2 फीसदी बढ़ा। रुपये के हिसाब से देखें तो किसानों की कमाई 82,791 रुपये प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 1.13 लाख रुपये प्रति हेक्टेयर हो गई। हालांकि, इस अवधि में गन्ने की लागत 116 फीसदी बढ़ गई। परिणामस्वरूप ग्रॉस रिटर्न मार्जिन लागत के 177 प्रतिशत से घटकर 112 प्रतिशत रह गई।

### रुक सी गई कपास जैसी फसलों में कमाई

कपास उत्पादकों की स्थिति और भी बुरी है। कपास की फसल के लिए लागत टीई 2009-10 से टीई2021-22 के बीच 180 फीसदी बढ़ गई। वहीं, प्रति हेक्टेयर इनकम इस अवधि में सिर्फ 0.7 फीसदी ही बढ़ी। यह 20,306 रुपये से बढ़कर 20,445 रुपये हो गई।

### खरीफ फसलों के मार्जिन में बड़ी गिरावट

खरीफ (मानसून) सीजन की फसलों जैसे- धान, मक्का, जवार, बाजारा, रागी, अरहर, मूंग, उड़द, मूंगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी और कपास के मार्जिन्स में भी काफी गिरावट आई है। टीई 2009-10 और टीई 2021-22 के बीच धान की लागत 179 फीसदी बढ़ गई। लेकिन किसानों की प्रति हेक्टेयर कमाई केवल 123 फीसदी ही बढ़ी।

## लगभग तैयार है नई राष्ट्रीय सहकारी नीतिः सुरेश प्रभु

**कोलकाता एजेंसी।** नई राष्ट्रीय सहकारी नीति लगभग तैयार हो चुकी है और 47 सदस्यीय समिति इसे केंद्र सरकार के पास भेजने की प्रक्रिया शुरू कर चुकी है। समिति के चेयरमैन और पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश प्रभु ने यह जानकारी दी। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने पिछले साल घोषणा की थी कि देश में सहकारी आंदोलन को सशक्त करने के लिए जल्द ही एक इसी के लिए एक नीति तैयार की जाएगी। उन्होंने कहा था कि इसकी राष्ट्रीय स्तर की समिति की अध्यक्षता सुरेश प्रभु करेंगे। समिति के सदस्यों में सहकारिता क्षेत्र के विशेषज्ञ और प्रतिनिधि के साथ-साथ केंद्रीय मंत्रालयों के अधिकारी शामिल हैं।

## बिजनेस टायकून रतन टाटा को मिला 'उद्योग र प्रतिशत अवॉर्ड', महाराष्ट्र सरकार ने किया सम्मानित

नई दिल्ली, एजेंसी। मशहूर बिजनेसमैन और टाटा ग्रुप के चेयरमैन को महाराष्ट्र सरकार ने उद्योग र प्रतिशत अवॉर्ड से नवाजा है। महाराष्ट्र सरकार के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और डिप्टी ष्टरूदेवेंद्र फडणवीस ने ये अवॉर्ड उनके घर दिया है। बता दें कि बिजनेस टाइकून रतन टाटा का स्वास्थ खराब होने के चलते वो किसी अवॉर्ड समारोह में भाग नहीं लेंगे। बता दें, 20 अगस्त को महाराष्ट्र में अवॉर्ड समारोह होना है, खराब स्वास्थ के चलते रतन टाटा इसमें भाग नहीं ले पाएंगे जिस कारण आज ही मुख्यमंत्री और डिप्टी ष्टरूने उन्हें अवॉर्ड से नवाजा है। कुछ दिन पहले ही महाराष्ट्र सरकार ने बताया था कि देश के मशहूर बिजनेस टायकून रतन टाटा देशभर के लोगों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। रतन टाटा परोपकार और उदार दिल के लिए जाने जाते हैं। वो दूसरों की मदद करने से कभी पीछे नहीं हटते हैं, जिसके लिए अब महाराष्ट्र सरकार उन्हें इस काम के लिए 'उद्योग र प्रतिशत' पुरस्कार देगी। अवॉर्ड की जानकारी महाराष्ट्र के उद्योग मंत्री उदय सामंत ने दी है।

## महिंद्रा ने वायरिंग में दिक्कत आने पर लगभग एक लाख एसयूवी 700 वापस मंगाई

**नई दिल्ली, एजेंसी।** महिंद्रा एंड महिंद्रा ने अपने स्पोर्ट्स यूटिलिटी व्हीकल (एसयूवी) एक्सयूवी700 के इंजन में वायरिंग (तार) संबंधी दिक्कत का परीक्षण करने के लिए लगभग एक लाख गाड़ियां वापस मंगाई हैं। कंपनी ने यह जानकारी दी। कंपनी ने शेयर बाजार को बताया कि उसने आठ जून, 2021 से 28 जून, 2023 तक बनीं 1,08,306 एक्सयूवी700 के इंजन में तारों का परीक्षण करने के लिए वापस मंगाया है। कंपनी ने वायरिंग में घर्षण से कट लगने के संभावित खतरे के चलते यह कदम उठाया है। एमएंडएम ने कहा कि साथ ही, 16 फरवरी, 2023 से पांच जून 2023 तक बनीं 3,560 एक्सयूवी400 का भी परीक्षण किया जाएगा। कंपनी ने कहा कि सभी ग्राहकों के लिए निरीक्षण और उसके बाद सुधार निःशुल्क किया जाएगा।

# बाजूस में छंटनी का सिलसिला जारी, कंपनी ने फिर निकाले कर्मचारी

**नई दिल्ली एजेंसी।** एडटेक दिग्गज बैजूस ने कर्मचारियों के प्रदर्शन की समीक्षा के आधार पर 100 कर्मचारियों की छंटनी कर दी है। हालांकि, एक खबर के मुताबिक, एडटेक दिग्गज ने करीब 400 लोगों को नौकरी से निकाल दिया है। मामले की जानकारी रखने वाले लोगों ने बताया कि हालिया छंटनी पोस्ट-सेल विभाग में की गई है। बैजूस के एक प्रवक्ता ने इसकी पुष्टि की है।

बैजूस के प्रवक्ता ने कहा, 'प्रदर्शन की आवधिक समीक्षा के आधार पर वैसे 100 कर्मचारी जो परफॉर्मेंस इंप्रूवमेंट प्लान (पीआईपी) के बाद भी उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे उन्हें उचित प्रक्रियाओं के बाद कंपनी ने नौकरी से हटा दिया।' उन्होंने कहा कि यह छंटनी पूरी तरह से प्रदर्शन की समीक्षा के आधार पर की गई है। लागत में कटौती का इसमें कोई उद्देश्य नहीं है। बैजूस ने यह भी कहा कि पोस्ट-सेल विभाग में अब कोई नई छंटनी नहीं की जाएगी। प्रवक्ता ने कहा, 'सही मायने में देखा जाए तो हमने पिछले दो महीने में इस विभाग को मजबूत करने के लिए 200 नए पेशेवरों की भर्तियां भी की हैं।'

### इससे पहले करीब 1 हजार कर्मचारियों को निकाला था

खबरों के अनुसार, इस साल की शुरुआत में बैजूस ने छंटनी के दौर में 900 से 1 हजार कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया था। हालांकि कंपनी के सूत्रों ने कहा कि यह कदम लागत कम करने की रणनीति का हिस्सा था, जिसकी घोषणा कंपनी ने पिछले साल ही थी। इसमें 2,500 कर्मचारियों को सेवामुक्त करना था। पिछले साल बैजूस ने अपने समूह की कंपनी- व्हाइटहैट जूनियर और टॉपर के करीब 600 कर्मचारियों को हटा दिया था। इसे लागत कम करने के तौर पर बताया गया था। यह कदम ऐसे समय में उठाया गया है जब एडटेक दिग्गज कंपनी ने अपने मानव संसाधन विभाग के कार्यों को बदलने के लिए इन्फोसिस के अनुभवी एचआर प्रमुख रहे रिचर्ड लोबो को विशेष सलाहकार के रूप में नियुक्त किया है। यह रणनीतिक कदम अपनी कर्मचारी-केंद्रित संस्कृति को मजबूत करने की बैजूस की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

# विश्व चैम्पियनशिप में प्रणय, सेन और सात्विक चिराग की जोड़ी से पदकों की आस

**कोपनहेगन (एजेंसी)।** फॉर्म में चल रहे एचएस प्रणय और लक्ष्य सेन सोमवार से यहां शुरू हो रही बीडब्ल्यूएफ विश्व चैम्पियनशिप में भारत के पदक दावेदारों की अगुआई करेंगे। सभी की निगाहें सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की जोड़ी पर लगी होंगी जो इस समय दुनिया की दूसरी नंबर की जोड़ी है। देश की सर्वश्रेष्ठ युगल जोड़ी पिछले चरण में जीते गये कांस्य पदक के रंग को बेहतर करना चाहेगी।

भारत ने 1977 से शुरू हुई इस प्रतियोगिता में एक स्वर्ण सहित 13 पदक जीते हैं जिसमें चार रजत और आठ कांस्य शामिल हैं। महान बैडमिंटन खिलाड़ी प्रकाश पादुकोण पदक (कांस्य, 1993 में) जीतने वाले पहले भारतीय थे और 2011 के बाद से पीवी सिंधू की अगुआई में देश के खिलाड़ी कम से कम एक पदक जीतते आ रहे हैं। सिंधू विश्व चैम्पियनशिप में भारत की सबसे सफल खिलाड़ी हैं जो 2019 में चैम्पियन रहीं और उनके नाम पांच पदक हैं। लेकिन बासेल चरण के बाद से वह पोडियम तक नहीं पहुंच पा रही हैं और इस सत्र में अपने पहले जैसे प्रदर्शन की झलक नहीं दिखा सकी हैं।

किदाम्बी श्रीकांत और लक्ष्य सेन ने 2021 चरण में भारत को कमश- रजत और कांस्य पदक दिलाये जबकि सात्विक और चिराग की जोड़ी ने 2022 में कांस्य पदक जीता। प्रणय ऐसे खिलाड़ी हैं जो पोडियम के करीब पहुंचकर चूक रहे हैं, वह 2021 और 2022 दोनों चरण के क्वार्टर फाइनल तक पहुंचे। लेकिन पिछले 12 महीनों में उनकी निरंतर फॉर्म को देखते हुए इस बार वह प्रबल दावेदारों में शुमार होंगे।

मलेशिया मास्टर्स में जीत दर्ज करने वाले और आस्ट्रेलियाई ओपन के फाइनल में पहुंचने वाले प्रणय अपना अभियान फिनलैंड के कोले कोलजोनेन के खिलाफ शुरू करेंगे जिनकी विश्व रैंकिंग 56 है। नौवीं वरीयता प्राप्त इस भारतीय के इसके बाद इंडोनेशिया के चिको ओरा ड्वी वार्डोयो से भिड़ने की उम्मीद है। सेन का सामना दुनिया के 110वें नंबर के खिलाड़ी जार्जेस जुलियन पॉल (मॉरीशस) से होगा और उनके इसके बाद कोरिया के जियोन हियोन से भिड़ने की संभावना है। इसके बाद वह तीसरे दौर में तीसरे वरीय कुनलावुत वितिदसर्ण के सामने हो सकते हैं।

श्रीकांत इस सत्र में इतना अच्छा नहीं कर पाये हैं और महत्वपूर्ण मौकों पर उनका खेल बिखर जाता है लेकिन वह ओलंपिक पूर्व सत्र में तेजी से चीजों का रुख बदलना चाहेंगे क्योंकि पेरिस क्वालीफिकेशन भी दांव पर लगा होगा। गुंटूर के इस 30 साल के खिलाड़ी का सामना कड़े प्रतिद्वंद्वी जापान के 15वीं रैंकिंग पर काबिज केंटा निशिमोटो से होगा। भारतीय खिलाड़ी का विपक्षी पर जीत का रिकॉर्ड 6-3 है जिससे उनका मनोबल बढ़ेगा ही। इंडोनेशिया के एंथोनी जिनटिंग (विश्व रैंकिंग में दूसरे स्थान पर) टूर्नामेंट से हट गए हैं जिससे श्रीकांत के लिये ड्रा में थोड़ी मुश्किल कम होगी। अगर यह भारतीय अपनी काबिलियत के अनुरूप खेलने में सफल रहता है तो दुनिया के इस 20वें नंबर के खिलाड़ी के कम से कम क्वार्टर फाइनल तक पहुंचने की उम्मीद है। विश्व चैम्पियनशिप के 2017 और 2018 चरण की रजत पदक विजेता और 2013 और 2014 में कांस्य पदक जीतने वाली सिंधू को बाई मिली है और वह जापान की नोजोमी ओकुहारा और वियतनाम की थुये लिन्ह एनगुएन के बीच होने वाले मुकाबले की विजेता से भिड़ेंगी। लेकिन उम्मीदों का बोझ सात्विक और चिराग के कंधों पर होगा जो शानदार फॉर्म में हैं और उन्होंने 2023 में इंडोनेशिया ओपन, एशिया चैम्पियनशिप, स्विस ओपन और कोरिया ओपन में खिताब अपने नाम किये हैं।

दूसरी वरीयता प्राप्त इस जोड़ी को पहले दौर में बाई मिली है और अगर वे इस सत्र के दबदबे के अनुरूप आगे बढ़ते हैं तो उनके ड्रा में काफी आगे तक पहुंचने की उम्मीद है। त्रिसा जॉली और गायत्री गोपीचंद की जोड़ी को भी बाई मिली है। यह जोड़ी आल इंग्लैंड चैम्पियनशिप में दो बार सेमीफाइनल में पहुंची हैं। अन्य भारतीयों में अश्विनी भट्ट के और शिखा गौतम, रोहन कपूर और एन सिक्की रेड्डी तथा वेंकट प्रसाद और जूही देवांगन भी शामिल हैं। कोपनहेगन पांचवीं बार विश्व चैम्पियनशिप का आयोजन कर रहा है जो सभी मेजबानों में सबसे ज्यादा है। डेनमार्क की राजधानी ने इससे पहले 1983, 1991, 1999 और 2014 में इसकी मेजबानी की थी।

## भारत की अनाहत सिंह को एशियाई जूनियर स्क्वाश में स्वर्ण पदक

**डेलियान (चीन) (एजेंसी)।** भारत की अनाहत सिंह ने यहां 16 से 20 अगस्त तक हुई एशियाई जूनियर स्क्वाश व्यक्तिगत चैंपियनशिप के अंडर-17 वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। पंद्रह साल ही अनाहत ने रविवार को हुए फाइनल में हांगकांग की एना क्रोंग को 3-1 से हराकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया।

अनाहत ने क्वार्टर फाइनल और सेमीफाइनल में मलेशियाई खिलाड़ियों क्रमश-डॉयस ली और विटनी इसाबेल को हराया था। पिछले साल थाईलैंड में दिल्ली की अनाहत ने इस प्रतियोगिता का अपना पहला स्वर्ण पदक जीता था। अनाहत ने 2019 में मकाऊ में अंडर-13 वर्ग में भी कांस्य पदक जीता था। अनाहत बर्मिंघम 2022 राष्ट्रमंडल खेलों में भी भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। वह 14 साल की उम्र में इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाली सबसे युवा भारतीय खिलाड़ी थीं।

### आईपीएल 2024

## लसिथ मलिंगा की मुंबई इंडियन में वापसी

**मुंबई (एजेंसी)।** श्रीलंका के पूर्व तेज गेंदबाज लसिथ मलिंगा 2024 के लिए 5 बार की चैंपियन मुंबई इंडियंस में वापसी करने के लिए तैयार हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार वह शेन बॉन्ड की जगह टीम के तेज गेंदबाजी कोच होंगे। न्यूजीलैंड के पूर्व तेज गेंदबाज पिछले 9 सत्र से टीम के मुख्य कोच है।

आईपीएल के एक सूत्र का कहना है कि बॉन्ड का मुंबई के साथ अनुबंध अब भी समीक्षा के अधीन है। हालांकि उनका करार अभी खत्म नहीं हुआ है। यह भी स्पष्ट नहीं है कि वह आईएलटी20 (इंटरनेशनल लीग टी20, यूएई) में एमआई एमिरेट्स के मुख्य कोच के रूप में बने रहेंगे या नहीं। टीम इस लीग की शुरुआत सत्र में तीसरे स्थान पर रही थी।

वहीं, मलिंगा का मुंबई इंडियंस के साथ करियर काफी सफल रहा। उनके रहते टीम ने पांच खिताब जीते। इसमें चार आईपीएल (2013, 2015, 2017, 2019) खिताब के अलावा 2011 में चैंपियंस लीग टी20 जीतना शामिल है। मलिंगा ने मुंबई के लिए 139 मैच खेले और 7.12 की इकॉनमी रेट से 195 विकेट लिए। इनमें से 170 विकेट आईपीएल में आए। वह इस लीग में संयुक्त रूप से छठा सबसे अधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज है।

मलिंगा ने इससे पहले 2018 में टीम में मेटोरिंग की भूमिका निभाई थी। इसके एक साल बाद उन्होंने खेल में वापसी करते हुए जसप्रीत बुमराह के साथ टीम के की गेंदबाजी आक्रमण की अगुवाई की और टीम को चैम्पियन बनाने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने 2021 में संन्यास के बाद 2022 में राजस्थान रॉयल्स के तेज गेंदबाजी कोच की भूमिका निभाई थी।

## अमेरिका में मेसी का जादू बरकरार, इंटर मियामी को चैंपियन बनाकर रचा इतिहास

### रोनाल्डो आसपास भी नहीं

**अमेरिका (एजेंसी)।** अर्जेंटीना के दिग्गज फुटबॉलर जब से अमेरिका आए हैं तब से उन्होंने तहलका मचाया है। मेसी ने बीते दिनों अमेरिकन क्लब इंटर मियामी के लिए साइन किया था। वह जब से यहां आए हैं उन्होंने हर मैच में गोल दागा है। वहीं अब लीग्स कप के फाइनल में भी उनका जादू बरकरार रहा।लियोनेल मेसी की कप्तानी में इंटर मियामी ने आज यानी 20 अगस्त को खेले गए लीग्स कप के फाइनल में नैशविले को पेनल्टी शूट आउट में हरा दिया। 90 मिनट तक खेल 1-1 की बराबरी पर रहा। इसके बाद अतिरिक्त समय में भी कोई गोल नहीं हुआ। अंत में मैच पेनल्टी शूट आउट में गया और इंटर मियामी ने 10-9 से पेनल्टी जीत ली। इस तरह उन्होंने लीग्स कप अपने नाम कर लिया।

**लियोनेल मेसी ने रचा इतिहास** - आपको बता दें कि इंटर मियामी के साथ लीग्स कप जीतने के बाद लियोनेल मेसी ने इतिहास रच दिया है। वह फुटबॉल के इतिहास में सबसे ज्यादा ट्रॉफी जीतने वाले खिलाड़ी बन गए हैं। मेसी के पास अब 44 ट्रॉफी हैं।

- **मेसी ने अब तक मियामी के लिए हर मैच में दागा गोल** - स्टार फुटबॉलर लियोनेल मेसी ने अब तक इंटर मियामी के लिए हर मैच में गोल दागा है। उन्होंने लीग्स कप के फाइनल को मिलाकर अब तक कुल 7 मैच खेले हैं, जिसमें उन्होंने 10 गोल किए हैं।
- **फाइनल में डी बॉक्स के बाहर से मारा रॉकेट गोल** - नैशविले के खिलाफ फाइनल में डी बॉक्स के बाहर से मेसी ने एक अविश्वसनीय गोल दागा है। कीपर ने गजब डाइव लगाई थी। लेकिन इसके बावजूद वह गेंद को गोल में जाने से नहीं रोक पाए। मेसी के शॉट में पावर के साथ-साथ गजब का टर्न भी था। मेसी ने 23वें मिनट में यह गोल दागा था। हालांकि यह जीतने के लिए काफी नहीं था। क्योंकि नैशविले के फाफा ने 57वें मिनट पर गोल करके खेल 1-1 से बराबर कर दिया था। बहरहाल, इसके बाद पेनल्टी शूट आउट में इंटर मियामी ने नैशविले को हराया।

## मेहुली घोष ने 10 मीटर एयर राइफल में कांस्य पदक जीता, मिला पेरिस ओलंपिक कोटा

**बाकू (अजरबेजान) (एजेंसी)।** युवा निशानेबाज मेहुली घोष ने शनिवार को यहां विश्व चैम्पियनशिप की महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर अगले साल होने वाले पेरिस ओलंपिक में भारत के लिए एक कोटा स्थान हासिल किया। कोलकाता की 22 साल की निशानेबाज ने तिलोतमा सेन और रमिता के साथ मिलकर 1895.9 के कुल स्कोर से 10 मीटर एयर राइफल टीम स्पर्धा भी जीती। चीन ने 1893.7 अंक के कुल स्कोर से रजत और जर्मनी ने कांस्य पदक जीता। ओलंपिक कोटे का प्रावधान सिर्फ व्यक्तिगत स्पर्धा तक ही सीमित है।

मेहुली ने फाइनल में 229.8 का स्कोर बनाकर पोडियम स्थान सुनिश्चित किया जिसमें वह चीन की जियाऊ हान (251.4) और झिलिन वांग (250.2) से पीछे रहीं। एयर राइफल स्पर्धा में शीर्ष तीन निशानेबाजों का ओलंपिक कोटा स्थान सुनिश्चित है। भारत ने मेहुली से पहले पेरिस ओलंपिक के लिए तीन कोटे हासिल कर लिए थे। रूद्रांक पाटिल ने पुरुष 10 मीटर एयर राइफल, स्वप्निल कुसाले ने 50 मीटर राइफल थ्री पाजीशंस और भोवनीश मेंदिरत्ता ने ट्रैप पुरुष ने कोटा प्राप्त किया था।मेहुली ने क्वालीफिकेशन राउंड में शानदार प्रदर्शन दिखाया, जिसमें वह 140 निशानेबाजों में 634.5 अंक से पहले स्थान पर रही थीं। स्वर्ण पदक जीतने वाली हान क्वालीफिकेशन में तीसरे और रजत पदक विजेता वांग आठवें स्थान पर रही थीं। फाइनल के बाद खुश मेहुली ने कहा- मैं कांस्य पदक और ओलंपिक कोटा हासिल कर काफी खुश हूं।

## आईपीएल 2024 में भाग नहीं ले पाएंगे गौतम गंभीर

**लखनऊ (एजेंसी)।** लखनऊ सुपर जाइंट्स के मेंटर गौतम गंभीर देश में लोकसभा चुनाव के कारण इंडियन प्रीमियर लीग के 2024 संस्करण में भाग नहीं ले पाएंगे। विशेष रूप से 41 वर्षीय खिलाड़ी पूर्वी दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र से सांसद हैं और इसलिए आईपीएल के दौरान उनका कार्यक्रम काफी व्यस्त रहेगा। हालांकि रिपोर्ट्स के मुताबिक पूर्व क्रिकेटर फ्रेंचाइजी से अलग नहीं होंगे बल्कि अपने राजनीतिक दायित्वों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए ब्रेक लेंगे।

इस बीच जस्टिन लैंगर की फ्रेंचाइजी के मुख्य कोच के रूप में नियुक्ति के बाद गंभीर के कोलकाता नाइट राइडर्स में शामिल होने के लिए फ्रेंचाइजी छोड़ने की खबरें थीं। हालांकि एक सूत्र ने हाल ही में स्थिति स्पष्ट की और बताया कि गंभीर ने अगले साल के आईपीएल से बाहर होने का फैसला क्यों किया। एक रिपोर्ट में सूत्र के हवाले से कहा गया, च्हां, गौतम गंभीर राजनीतिक प्रतिबद्धताओं के कारण अगले आईपीएल से छुट्टी ले सकते हैं। वह किसी अलग टीम में नहीं जा रहे हैं या फ्रेंचाइजी नहीं छोड़ रहे हैं। लोकसभा चुनाव की तैयारी में बहुत सारा राजनीतिक काम शामिल होगा, इसलिए वह अपनी सारी ऊर्जा उसी पर केंद्रित करना चाहते हैं।

विशेष रूप से गंभीर आईपीएल के 2022 संस्करण से पहले लखनऊ में शामिल हुए और उन्होंने सराहनीय काम किया है। उनके मार्गदर्शन में फ्रेंचाइजी ने दोनों मौकों पर प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई किया लेकिन फाइनल खेलने में असफल रही। एलएसजी ने हाल ही में पूर्व मुख्य कोच एंडी फ्लावर से नाता तोड़ लिया और उनकी जगह जस्टिन लैंगर को नियुक्त किया। उन्होंने नए रणनीतिक सलाहकार के रूप में एमएसके प्रसाद को भी शामिल किया है। दूसरी ओर चुनावों के कारण आईपीएल 2024 का पूरा संस्करण देश के बाहर हो सकता है। 2009 में यह दक्षिण अफ्रीका में स्थानांतरित हो गया जबकि 2014 में पहला हाफ संयुक्त अरब अमीरात में खेला गया। हालांकि 2019 में पूरे टूर्नामेंट को इस तरह से डिजाइन किया गया था कि चुनाव प्रक्रिया बाधित न हो। अगले साल भी यही दोहराया जा सकता है लेकिन अभी तक कुछ भी तय नहीं है।

## 2 दिसंबर से होगा पीकेएल सीजन 10 का आगाज

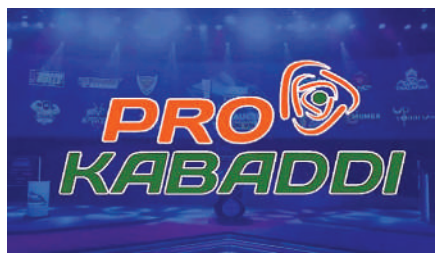


**नई दिल्ली (एजेंसी)।** प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) सीजन 10 दो दिसंबर से कैरावन फॉर्मेट में देश के 12 शहरों में खेली जाएगी। प्रो कबड्डी लीग के आयोजक 'मशाल स्पोर्ट्स' के अनुसार इस बार प्रो कबड्डी लीग 2023-24 की मेजबानी करने वाले शहरों की सूची अभी साफ नहीं की गई है। प्रो कबड्डी लीग सीजन 10 की नीलामी 8 और 9 सितंबर को मुंबई में आयोजित होगी। लीग कमिश्नर, प्रो कबड्डी लीग अनुपम गोस्वामी ने कहा कि हमने देखा है कि पीकेएल पूरे भारत में काफी सफल रहा है और लोग इसे देखना और खेलना पसंद करते हैं। पिछले नौ सफल सीजन के बाद अब पीकेएल अपने ऐतिहासिक 10वें संस्करण में पहुंच गया है और हम खेल को विकसित करने के साथ ही एक ऐसा मंच तैयार करने को लेकर उत्साहित हैं, जिसने कबड्डी के भविष्य को आकार देने के लिए दुनिया भर से प्रतिभाओं को उभरते देखा है। इसमें कोई संदेह नहीं है, हमने एक नई विरासत बनाई है और हम इस अविश्वसनीय यात्रा का हिस्सा बनने के लिए अपने एथलीटों और प्रशंसकों के प्रति भी समान रूप से आभारी हैं।गौरतलब है कि जयपुर पिंक पैंथर्स पिछले दो बार की प्रो कबड्डी चैंपियन है, जबकि पटना पाइरेट्स ने सर्वाधिक तीन बार ट्रॉफी अपने नाम की है। यूपी योद्धा के लिए खेलने वाले परदीप नरवाल प्रतियोगिता में सर्वाधिक 1542 रेड अंक के साथ सबसे सफल रेडर हैं।

### विश्व कप 2023

## श्रीलंका-पाकिस्तान मैच पर संकट, हैदराबाद क्रिकेट एसोसिएशन ने खड़े किए हाथ!

**हैदराबाद (एजेंसी)।** हैदराबाद क्रिकेट एसोसिएशन ने बीसीसीआई को सूचित किया है कि उन्हें लगातार दिनों में विश्व कप मैचों की मेजबानी करना मुश्किल हो सकता है और उन्होंने कार्यक्रम में बदलाव के लिए कहा है। हैदराबाद का राजीव गांधी स्टेडियम 9 अक्टूबर को न्यूजीलैंड और नीदरलैंड के बीच मैच की मेजबानी करेगा और अगले ही दिन उसी स्थान पर श्रीलंका का

सामना पाकिस्तान से होगा। यह मैच पहले 12 अक्टूबर के लिए निर्धारित था लेकिन अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में भारत-पाकिस्तान के बीच होने वाले मुकाबले को 14 अक्टूबर के लिए पुनर्निर्धारित किया गया। जून में जारी किए गए विश्व कप के शेड्यूल में पहले से ही कई बदलाव देखे जा चुके हैं। नवरात्रि उत्सव की शुरुआत के कारण कट्टर प्रतिद्वंद्वियों भारत-पाक के बीच खेल को फिर से निर्धारित किया गया था। बड़े मुकाबले के अलावा अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने यह भी घोषणा की है कि टूर्नामेंट में 8 अन्य मैचों को भी पुनर्निर्धारित किया गया है। जैसा कि पता चला पाकिस्तान के कम से कम तीन मैचों को पुनर्निर्धारित किया गया है जबकि नीदरलैंड के खिलाफ उनके आखिरी लीग गेम सहित भारत के दो मैचों को भी पुनर्निर्धारित किया गया है।

### सीडब्ल्यूसी 2023 में पुनर्निर्धारित कार्यक्रम

- इंग्लैंड बनाम बांग्लादेश - 10 अक्टूबर, सुबह 10.30 बजे
- पाकिस्तान बनाम श्रीलंका - 10 अक्टूबर, दोपहर 2 बजे
- ऑस्ट्रेलिया बनाम दक्षिण अफ्रीका - गुरुवार, 12 अक्टूबर - दोपहर 2 बजे
- न्यूजीलैंड बनाम बांग्लादेश - शुक्रवार, 13 अक्टूबर - दोपहर 2 बजे
- भारत बनाम पाकिस्तान - शनिवार, 14 अक्टूबर - दोपहर 2 बजे
- इंग्लैंड बनाम अफगानिस्तान - रविवार, 15 अक्टूबर - दोपहर 2 बजे
- ऑस्ट्रेलिया बनाम बांग्लादेश - शनिवार, 11 नवंबर - सुबह 10-30 बजे
- इंग्लैंड बनाम पाकिस्तान - शनिवार, 11 नवंबर - दोपहर 2 बजे
- भारत बनाम नीदरलैंड - रविवार, 12 नवंबर - दोपहर 2 बजे

## भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम मेजबान जर्मनी से हारी

**डसेलडोर्फ (एजेंसी)।** सुदीप चिरमाको ने दो गोल दागे लेकिन चार देशों के टूर्नामेंट में यह भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम को जर्मनी के खिलाफ जीत दिलाने के लिए काफी नहीं था। मेजबान जर्मनी ने मिशेल स्ट्रूथॉफ (41 वां मिनट), बेन हस्बैक (53वां मिनट), और फ्लोरियन स्पर्लिंग (55वां) के गोल के दम पर इस मुकाबले को 3-2 से जीत लिया। चिरमाको ने सातवें और 60वें मिनट में भारत के लिए गोल किए। स्पेन पर 6-2 की जीत के बाद भारतीय टीम इस मुकाबले में बढ़े हुए हौसले से उतरी थी। टीम ने सातवें मिनट में चिरमाको के गोल की मदद से शुरुआती बढ़त हासिल कर ली। जर्मनी के बराबरी करने की पूरी कोशिश की लेकिन भारत पहले क्वार्टर में अपनी बढ़त बनाए रखने में सफल रहा। जर्मनी ने दूसरे क्वार्टर में अपनी खेल की गति बढ़ाई और भारतीय रक्षापंक्ति ने उसे माकूल जवाब दिया। इस बीच भारतीय टीम ने भी जवाबी हमले किये लेकिन प्रतिद्वंद्वी टीम का भी रक्षण शानदार रहा। मध्यांतर के समय तक भारतीय टीम अपनी बढ़त को बरकरार रखने में सफल रही।

## दूसरे टी20 में यूएई की न्यूजीलैंड पर ऐतिहासिक जीत, सीरीज 1-1 से बराबर

**दुबई (यूएई) (एजेंसी)।** कप्तान मुहम्मद वसीम विस्फोटक अर्धशतक से यूएई ने दुबई में दूसरे टी20 इंटरनेशनल मैच में न्यूजीलैंड पर 7 विकेट से ऐतिहासिक जीत दर्ज कर सीरीज में 1-1 से बराबरी कर ली है। पहले ओवर में अर्याश शर्मा को शून्य पर आउट करने के बाद वसीम ने सतर्क शुरुआत की और 13 गेंदों में 16 रन बनाकर आक्रामक हो गए। सलामी बल्लेबाज ने 4 चौके और तीन छक्के लगाए और सिर्फ 27 गेंदों पर अपना अर्धशतक पूरा किया जिससे यूएई ने 143 रनों का पीछा करते हुए मजबूत शुरुआत की।

पावरप्ले के अंत में वृत्या अरविंद की 21 गेंदों में 25 रनों की बदौलत यूएई का स्कोर 44/2 था, लेकिन वसीम को उस समय तक कमान संभालनी बाकी थी। पावरप्ले के बाद पहले ओवर में वसीम ने अधिक इरादे दिखाना शुरू कर दिया, मिशेल सेंटनर को मैदान पर चौका लगाया और फिर अगले ओवर में काइल जैमीसन की गेंद पर छक्का लगाया। उन्होंने कोल मैककोन्ची को चौका और एक छक्का लगाया और फिर सेंटनर को छक्का जड़कर 27 गेंदों पर अपना अर्धशतक पूरा किया।

वसीम अपने अर्धशतक के तुरंत बाद आउट हो गए, लेकिन यूएई की पारी को जरूरी प्रोत्साहन देने से पहले नहीं। वसीम का विकेट गिरने से मेजबान टीम का स्कोर 11 ओवर में 96/3 हो गया। आसिफ खान (29 गेंदों में पांच चौकों और एक छक्के की मदद से 48* रन) ने बासिल हमीद (12 गेंदों में 12*) के साथ परिपक्व भूमिका निभाई। दोनों ने ऐसा रुख अपनाया जिससे कीवीज और निराश हो

गए। यूएई अभी भी जीत की ओर नहीं बढ़ रहा था लेकिन 15वें ओवर में स्थिति बदल गई जब आसिफ खान ने जेम्स नीशम को दो चौके मारे।

इसके बाद उन्होंने अगले ओवर की पहली गेंद पर टिम साउदी की गेंद पर छक्का जड़कर यूएई को यादगार जीत की दहलीज पर पहुंचा दिया। दो और चौकों के बाद यूएई ने एक उल्लेखनीय जीत का जश्न मनाया। आयरलैंड और अफगानिस्तान के अलावा किसी अन्य टेस्ट खेलने वाले देश पर उनकी पहली टी20आई जीत थी। कीवी टीम के लिए सैंटनर, जैमीसन और साउथी को एक-एक विकेट मिला।

इससे पहले न्यूजीलैंड ने एक बार फिर शुरुआती विकेट खो दिए क्योंकि तीसरे ओवर में टिम सीफर्ट (7) का विकेट गिर गया और अयान खान ने मिशेल सैंटनर (1) का विकेट लिया, जो नंबर 3 पर प्रमोट हुए। मार्क चैपमैन डटे रहे जबकि यूएई के गेंदबाज दूसरे छोर पर टिके रहे। चैपमैन ने 46 गेंदों में 63 रन (तीन चौके और तीन छक्के) बनाए और अंतिम ओवर में आउट हुए, लेकिन नीशम की 17 गेंदों में 21 रन की पारी के अलावा, उन्हें शायद ही कोई समर्थन मिला। 142 का कुल योग, किसी गैर के मुकाबले उनका सबसे कम स्कोर रहा जो उत्साही यूएई टीम को मात देने के लिए पर्याप्त नहीं था। अयान अफजल खान (3/20) और मुहम्मद जवादुल्लाह (2/16) यूएई के लिए चुने गए गेंदबाज थे। अयान को उनके गेम-चेंजिंग स्पैल के लिए प्लेयर ऑफ द मैच मिला।

## पुलिस स्टेशन में एक आदिवासी महिला के साथ दुर्व्यवहार और हमला

**हैदराबाद, एजेंसी।** हैदराबाद के एक पुलिस स्टेशन में एक आदिवासी महिला के साथ कथित दुर्व्यवहार और हमला करने का मामला सामने आया है। इसको लेकर अब राजनीति पार्टियां एक-दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगा रहे है। विपक्षी भाजपा और कांग्रेस ने शनिवार (19 अगस्त) को लेकर बीआरएस सरकार पर निशाना साधा है। साथ ही सरकार से पीड़िता को जल्द से जल्द से मदद प्रदान की जाने की मांग की गई है। घटना पर अब तक कथित तौर पर बीआरएस सरकार की तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। इस पर आलोचना करते हुए भाजपा विधायक एटाला राजेंदर ने मांग की कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत मामला दर्ज करने के बाद जिम्मेदार लोगों को गिरफ्तार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि घटना की जांच होनी चाहिए और इसमें शामिल लोगों को सेवा से हटाया जाना चाहिए। पूर्व कांग्रेस सांसद मधु याशकी गौड़ ने भी मांग की है कि सरकार महिला को चिकित्सा सहायता और मुआवजा प्रदान करे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस इस मुद्दे को राज्य मानवाधिकार आयोग के समक्ष भी उठाएगी। तेलंगाना की राज्यपाल तमिलिसाई साउंडराजन ने 18 अगस्त को महिला पर कथित हमले के संबंध में वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों से रिपोर्ट मांगी है।

## पत्नी से बदला लेने के लिए बेटी को सुलाया मौत की नींद, हैदराबाद पुलिस ने हैवान पिता को किया गिरफ्तार

**हैदराबाद, एजेंसी।** हैदराबाद में एक सनसनीखेज मामला सामने आया है। यहां एक व्यक्ति ने अपनी आठ वर्षीय बेटी की धारदार चाकू से गला काटकर हत्या कर दी। पुलिस ने बताया कि शुक्रवार देर रात उन्हें घटना के बारे में जानकारी मिली थी कि एक व्यक्ति, जो खून से सने कपड़ों में है और उसकी कार में एक मृत लड़की की लाश पड़ी है, जिसके बाद पुलिस ने आरोपी शख्स को आउटर रिंग रोड से हिरासत में लिया। आरोपी शख्स ने पुलिस पूछताछ में बताया कि उसने अपनी पत्नी से बदला लेने के लिए आठ साल की बेटी की हत्या कर दी। आरोपी के अनुसार, उसकी शादी 2011 में हुई थी और उसकी पत्नी एक कंपनी में कार्यरत है। दोनों के बीच आए दिन झगड़े होने लगे। बता दें कि आरोपी बेरोजगार है और उसकी पत्नी आठ महीने पहले ही उसे छोड़कर अपने माता-पिता के घर पर रहने के लिए चली गई थी। तब से उसकी पत्नी अपने पति से बात नहीं करती थी। आरोपी ने बताया कि महिला उसकी बेटी को भी उससे बात नहीं करने देती थी। आरोपी अपनी बेटी से मिलने उसके स्कूल जाता था और उसके लिए चीजें भी खरीदता था। हालांकि, उसकी पत्नी और परिवार के सदस्यों ने उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। शख्स को यह अहसास हुआ कि उसकी पत्नी अपनी बेटी के साथ खुशी से रह रही है, जबकि उसे आर्थिक दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था। पुलिस पूछताछ में उसने बताया कि उसने अपनी पत्नी से बदला लेने के लिए बेटी को मारने की योजना बनाई। वह शुक्रवार दोपहर अपनी बेटी को स्कूल से अपनी कार में ले गया। जिसके बाद आरोपी ने चाकू से अपनी बेटी का गला काट दिया। वहीं, घटना के बाद आरोपी आउटर रिंग रोड की ओर निकल पड़ा और उसने लड़की के शव को हैदराबाद के बाहरी इलाके में फेंकने की योजना बनाई। हालांकि, उसकी कार डिवाइडर से टकरा गई और टायर फट गया। तभी वहां से गुजर रहे एक शख्स ने व्यक्ति ने देखा और इसकी जानकारी पुलिस को दी। फिलहाल पुलिस ने आरोपी शख्स को गिरफ्तार कर लिया है।

## वेलकम इलाके में एक ही रात तीन जगहों पर चाकूबाजी कर लूटपाट, 1 की मौत, 2 गंभीर रूप से घायल

**नईदिल्ली, एजेंसी।** यमुनापार के वेलकम में शुक्रवार रात नशे में धुत तीन बदमाशों ने एक के बाद एक तीन जगह चाकूबाजी कर लूटपाट को अंजाम दिया। हमले में एक की मौत हो गई, जबकि दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने मामला दर्ज कर कपिल चौधरी और सोहेल को गिरफ्तार किया है। डीसीपी डॉ.जॉय टिर्की ने बताया कि मारे गए युवक की पहचान 32 वर्षीय गुफरान के रूप में हुई है। जबकि शेर मोहम्मद और शारिक घायल हैं। जीटीबी अस्पताल में इनका इलाज चल रहा है। आरोपियों ने बताया कि वह पास के पार्क में बैठकर शराब पी रहे थे। इस बीच इन्होंने लूटपाट करने का प्लान बनाया। पुलिस को तीसरे आरोपी समीर उर्फ उला की तलाश है। इन पर पहले से मामले दर्ज हैं। इलाके में रात करीब सवा 12 बजे बदमाशों ने गुफरान की कमर में चाकू मारकर लूटपाट की। जख्मी हालत में उसे अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उसकी मौत हो गई। गुफरान गांधी नगर की फैक्टरी में काम करता था। देर रात वह काम से घर लौट रहा था, तभी बदमाशों ने उसका मोबाइल लूटने के दौरान उस पर चाकू से हमला कर दिया। पुलिस को पहले जनता कॉलोनी निवासी शेर मोहम्मद घायल हालत में मिला। बदमाशों ने उसके पेट में चाकू मारा था। उसने बताया कि वह किसी काम से बाहर निकला था। तीनों ने उसे रोका और लूटपाट करने लगे। विरोध करने पर उन्होंने पेट में चाकू मार दिया। जख्मी हालत में वह किसी तरह वहां से भागकर एक घर में छिप गया। तीसरी वारदात करीब एक बजे की है। बदमाशों ने शारिक को चाकू मारकर उससे लूटपाट की कोशिश की। हालांकि उसने किसी तरह भागकर अपनी जान बचाई। उसे भी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बहरहाल तीनों मामलों में पुलिस ने कुछ देर बाद ही आरोपी कपिल चौधरी और सोहेल को दबोच लिया। इनका तीसरा आरोपी फरार है। एक के बाद एक ताबड़तोड़ चाकूबाजी से स्थानीय लोग गुस्से में हैं। लोगों का आरोप है कि नशे में धुत बदमाश चाकू मारकर लूटपाट करते रहे, लेकिन पुलिस का रवैया बेहद सुस्त रहा। अगर पुलिस चाकू मारने की पहली घटना के बाद ही आरोपियों को दबोच लेती तो शायद गुफरान की जान बच जाती।

## 23 अगस्त से अस्थायी रूप से निलंबित रहेगी अमरनाथ यात्रा

**जम्मू, एजेंसी।** । दक्षिण कश्मीर हिमालय क्षेत्र में स्थित अमरनाथ गुफा मंदिर की वार्षिक तीर्थयात्रा श्रद्धालुओं की कम संख्या और रास्ते की मरम्मत के कार्यों को देखते हुए 23 अगस्त से अस्थायी रूप से निलंबित रहेगी। इस संबंध में एक आधिकारिक प्रवक्ता ने बताया कि भगवान शिव के पवित्र दंड 'छड़ी मुबारक' को पारंपरिक पहलगाम मार्ग से ले जाया जाएगा और इसके साथ ही 31 अगस्त को यह तीर्थयात्रा संपन्न हो जाएगी। गत एक जुलाई को शुरू हुई अमरनाथ यात्रा में अब तक 4.4 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने अनंतनाग जिले में 48 किलोमीटर लंबे पारंपरिक पहलगाम मार्ग और गांदरबल जिले में 14 किलोमीटर लंबे बालटाल मार्ग के जरिए बाबा बर्फानी के दर्शन किए हैं। प्रवक्ता ने श्राइन बोर्ड प्राधिकारियों के हवाले से कहा, ''तीर्थयात्रियों की संख्या में भारी गिरावट आने और सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) द्वारा संवदेनशील मार्गों पर किए जा रहे मरम्मत एवं देखरेख के काम को देखते हुए श्रद्धालुओं को पवित्र गुफा तक जाने वाले दोनों मार्गों पर आवाजाही न करने की सलाह दी गई है।'' उन्होंने कहा, ''अत-यात्रा 23 अगस्त से दोनों मार्गों से अस्थायी रूप से निलंबित रहेगी।

## दोस्त की नाबालिग बेटी से दुष्कर्म, महिला एवं बाल विकास विभाग के डिप्टी डायरेक्टर पर मुकदमा दर्ज

**नई दिल्ली, एजेंसी।** दिल्ली सरकार के महिला एवं बाल विकास विभाग में कार्यरत डिप्टी डायरेक्टर पर दोस्त की नाबालिग बेटी से महीनों तक दुष्कर्म करने का केस दर्ज हुआ है। एफआईआर में पीड़िता ने आरोपी उप निदेशक की पत्नी पर भी साजिश रचने और पति का साथ देने का आरोप लगाया है। मानसिक हालत ठीक नहीं होने की वजह से पीड़िता अस्पताल में भर्ती है। पुलिस के अनुसार, गोकलपुरी निवासी पीड़िता के माता-पिता सरकारी स्कूल में प्रधानाचार्य थे। वह सिविल लाइंस स्थित स्कूल में कक्षा 12वीं की छात्रा है। पीड़िता ने बताया कि वह परिवार सहित बुराड़ी के चर्च में जाती थी। वहां आरोपी उपनिदेशक परिवार सहित आता था। चूंकि दोनों परिवार एक ही प्रदेश से हैं, इसलिए घनिष्ठता बढ़ गई थी। एक अक्तूबर 2020 को पिता की मौत होने से वह परेशान रहने लगी। इस पर डिप्टी डायरेक्टर 14 वर्षीय पीड़िता को अपने घर लेकर आ गए। आरोपी ने नवंबर 2020 से जनवरी 2021 के बीच कई बार नाबालिग से दुष्कर्म किया। इस बीच पीड़िता गर्भवती हो गई और उसने आरोपी की पत्नी को इस बारे में बताया। आरोपी की पत्नी ने चुप रहने की सलाह देते हुए बेटे से गर्भपात की दवा मंगाई और पीड़िता को खिला दी।

पीड़िता के अनुसार, 16 जनवरी को जन्मदिन पर जब मां मिलने आई तो वह उनके साथ अपने घर चली गई। इसके बाद भी आरोपी उससे संपर्क करने की कोशिश करता था। चर्च जाने के दौरान अक्सर उसके साथ अश्लील हरकत करता था। इसलिए उसने इस साल जुलाई से चर्च जाना भी छोड़ दिया। पीड़िता को सात अगस्त को अचानक एंजाइटी अटैक आ गया। मां ने उसे सेंट स्टीफंस अस्पताल में भर्ती कराया। मनोचिकित्सक की निगरानी में उसे रखा गया। काउंसलिंग के दौरान पीड़िता ने अपने साथ हुई पूरी घटना के बारे में बताया। इसके बाद अस्पताल की तरफ से बुराड़ी पुलिस को जानकारी दी गई। 11 अगस्त को एफआईआर दर्ज की गई।

## रेनो वेस्ट में सोसाइटी परिसर से धार्मिक स्थल हटाने पर हंगामा, पुलिस ने समझाकर शांत कराया मामला

**नोएडा एजेंसी।** ग्रेनो वेस्ट की गौर सिटी सोसाइटी के 14 एवेन्यू में धार्मिक स्थल हटाने को लेकर शनिवार सुबह हंगामा हुआ। निवासियों का आरोप है कि बिल्डर ने रातोंरात धार्मिक स्थल को हटाकर पार्किंग बना दी। वहां पर लगी भगवान की मूर्ति को भी हटा दिया। इससे निवासियों की भावनाओं को ठेस पहुंची। प्राधिकरण के आश्वासन पर लोग शांत हुए।

सोसाइटी निवासियों ने बताया कि उन्होंने अपने एवेन्यू में एक खाली जगह पर अस्थायी मंदिर बनाकर मूर्ति रख ली थी। यहां नियमित पूजा अर्चना की जा रही थी, लेकिन शुक्रवार रात बिल्डर ने अस्थायी मंदिर को हटाकर मूर्ति को गायब कर दिया। शनिवार सुबह लोग सो कर उठे तो अस्थायी मंदिर से मूर्ति गायब देखकर भड़क गए। निवासियों ने यहां इकट्ठे होकर जमकर नारेबाजी की। सोसाइटी के लोगों ने अस्थायी मंदिर में वापस मूर्ति लगवाने की मांग की। हंगामे की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और लोगों को शांत कराने का प्रयास किया, लेकिन लोग शांत नहीं हुए। इसके बाद प्राधिकरण की टीम मौके पर पहुंची। प्राधिकरण के अधिकारियों ने लोगों को आश्वासन दिया कि धार्मिक स्थल के लिए ऐसी जगह चिह्नित की जाएगी, जहां धार्मिक स्थल बनाया जा सकेगा। प्राधिकरण के आश्वासन पर लोग शांत हुए।

सोसाइटी में जिस जगह को लेकर हंगामा हुआ, उसे बिल्डर और पुलिस ने पार्किंग की जगह बताया है। जिस महिला निवासी को यह पार्किंग अलॉट की गई है, उसका एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। महिला ने कहा है कि जिस स्थान पर उसे पार्किंग दी गई है, वहां पहले से स्थायी मंदिर बना था। बाद में उन्हें पार्किंग दी गई। इसके चलते वह वहां पर अपनी गाड़ी खड़ी नहीं कर सकती हैं। बिल्डर उन्हें किसी दूसरी जगह पार्किंग अलॉट करे। महिला ने भगवान के प्रति आस्था जताते हुए अस्थायी मंदिर से मूर्ति हटाने का विरोध किया। सोसाइटी में रहने वाले एसके सक्सेना ने बताया कि इस मामले में प्रबंधन की लापरवाही है। इसके चलते लोगों ने अपनी मांग को लेकर हंगामा किया। बिल्डर प्रतिनिधित ने बताया कि 14 एवेन्यू में हर निवासी को पार्किंग देना हमारी जिम्मेदारी है। किसी की भी पार्किंग में मंदिर बनाया जाना गलत है। यह प्राधिकरण के नियमों के भी खिलाफ है। भविष्य में भी अगर सोसाइटी के लोग मंदिर बनाना चाहते हैं तो अथॉरिटी से स्वीकृति लेकर ही मंदिर बनाया जा सकता है।

## हल्की सी बारिश से गुरुग्राम के कई इलाकों में जलभराव, दिल्ली जयपुर हाईवे पर रेंगती रहीं गाड़ियां

**गुरुग्राम एजेंसी।** मिलेनियम सिटी में शनिवार अल सुबह हुई डेढ़ घंटे की मूसलाधार बारिश ने एक बार फिर प्रशासनिक अधिकारियों की तरफ से निकासी को लेकर किए गए इंतजामों के दावों की पोल खोल दी। 62 एमएम बारिश से शहर में बाढ़ जैसे हालात हो गए।

दिल्ली-जयपुर हाईवे पर नरसिंहपुर गांव में करोड़ों खर्च के बाद भी फिर से हाईवे पानी में डूब गया। शनिवार सुबह करीब पांच बजे बादलों की गरज के साथ मूसलाधार बारिश शुरू हुई। इसके बाद करीब साढे छह बजे तक लगातार बारिश होती रही। हालांकि नए शहर की तरफ बारिश तेज नहीं हुई। पुराने गुरुग्राम के कई इलाकों में तेज बारिश के कारण जलभराव हो गया। निकासी के अधूरे इंतजाम होने के कारण पूरे शहर में बाढ़ जैसे हालात हो गए। सुबह 11 बजे तक पानी की निकासी नहीं हुई। इस कारण स्कूल व नौकरीपेशा को जाने वाले लोगों को जाम से जलभराव से जूझना पड़ा।

चार फीट की दीवार भी नहीं रोक पाई जलभराव तेज बारिश के कारण नरसिंहपुर में फिर से जलभराव हो गया। हालांकि नरसिंहपुर का पानी हाईवे तक नहीं पहुंचे इसके लिए एनएचएआई की तरफ से हाईवे पर चार फीट ऊंची दीवार तक बनाई, लेकिन यह दीवार भी हाईवे को जलभराव होने से नहीं रोक सकी। हालांकि हाईवे के साथ नाले की जानकारी जलभराव जरूर दीवार के कारण मिल गई। यहां सर्विस लेन में पानी भरने से कई कारें पानी में डूबने से बीच में ही बंद हो गई। एक ट्रक और सवारियों से भरी निजी बस में पानी में डूब कर बंद हो गई। पानी में बंद हुए लोगों ने आरोप लगाया कि उन्हें प्रशासन की तरफ से कोई मदद नहीं मिल रही है। हाईवे पर जलभराव से तीन घंटे तक वाहन चालक रेंग-रेंगकर जयपुर की तरफ निकलते रहे। नरसिंहपुर में लगभग तीन फुट तक जलभराव हुआ। यहां की जलनिकासी सिर्फ पंपों के भरोसे है। इसके लिए कोई स्थायी इंतजाम नहीं किया गया है। दिल्ली-जयपुर हाईवे पर राजीव चौक के समीप भी वर्षा का पानी भर गया। खेड़कीदौला टोल प्लाजा से आगे मानेसर की तरफ वाटिका चौक फ्लाईओवर के समीप और रामपुरा फ्लाईओवर की सर्विस लेन पर वर्षा का पानी भर गया। मानेसर में आईएमटी चौक पर जलभराव होने से ट्रैफिक जाम लगने से लोग परेशान हुए। इसके अलावा नए और पुराने गुरुग्राम के कई क्षेत्रों में जलभराव होने से आफत आ गई।

शहर में बसई रोड, सेक्टर नौ, नौ ए, सेक्टर-10 और दस ए सहित पुराने और नए गुरुग्राम की सड़कों पर जलभराव होने से वाहन ट्रैफिक जाम में रेंगते रहे। बसई में हालात सबसे ज्यादा खराब रहे। यहां फ्लाईओवर और द्वारका एक्सप्रेसवे के समीप सड़क पानी में डूब गई।

## पर्यटन मंत्रालय ने भारत को पसंदीदा विवाह स्थल बनाने के लिए शुरू किया अभियान, मुंबई से मिशन की हुई शुरुआत

**नई दिल्ली, एजेंसी।** पर्यटन मंत्रालय ने भारत को विश्व स्तर पर एक पसंदीदा विवाह स्थल बनाने के लिए शनिवार को एक महत्वाकांक्षी अभियान शुरू किया। अधिकारियों ने कहा कि विवाह पर्यटन अभियान का उद्देश्य भारत के व्यापक विवाह उद्योग की क्षमता को उजागर करना भी है।

एक आधिकारिक बयान के अनुसार पर्यटन को मिशन मोड में विकसित करने के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए, मंत्रालय ने ''वैश्विक मंच पर भारत को एक प्रमुख एवं पसंदीदा विवाह स्थल के रूप में प्रदर्शित करने के उद्देश्य से एक महत्वाकांक्षी अभियान'' शुरू किया।

मंत्रालय ने बयान में कहा कि इस अभियान के तहत भारत में पर्यटन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए अपार संभावनाओं को भी तलाशा जायेगा। विशेष अभियान की शुरुआत करते हुए, केंद्रीय पर्यटन मंत्री जी किशन रेड्डी ने कहा, ''आज एक उल्लेखनीय यात्रा की शुरुआत हुई है। भारत को दुनियाभर में विवाह स्थलों के प्रतीक के रूप में स्थापित करने का एक मिशन।'' मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि अभियान मुंबई में शुरू किया गया। ईईएमए (इवेंट एंड एंटरटेनमेंट मैनेजमेंट एसोसिएशन) के अध्यक्ष, समित गर्ग ने कहा, ''इस विचार को साकार होते देखना वास्तव में अद्भुत है।'' उन्होंने कहा कि पर्यटन मंत्रालय ने प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण को साकार करते हुए ''विवाह पर्यटन अभियान को जीवंत बनाया है।''

## भारत निर्माण: सात वर्षों बाद सबसे ज्यादा निवेश वर्ष 22-23 में; 982 परियोजनाओं पर शुरू हुआ काम

**नई दिल्ली, एजेंसी।** पिछले वर्ष मई के महीने में जब आरबीआइ ने बढ़ते महंगाई को थामने के लिए ब्याज दरों को महंगा करने का दौर शुरू हुआ तो कई अर्थविदों ने कहा कि यह देश में निवेश माहौल पर बहुत ही बड़ा कुठाराघात होगा। महंगे कर्ज की वजह से कारपोरेट सेक्टर निवेश करने से पीछे हट जाएगा। सबसे बेहतर दौर से गुजर रहा निवेश माहौल एक वर्ष से ज्यादा समय बीत गये और ताजे आंकड़ें बता रहे हैं कि निवेश माहौल पिछले सात-आठ वर्षों के सबसे बेहतर दौर से गुजर रहा है। वर्ष 2022-23 में देश में कुल 982 परियोजनाओं के लिए कुल 3,52,624 करोड़ रुपये का तमाम स्त्रोतों से किया गया है। आरबीआइ के आकलन के मुताबिक, वर्ष 2014-15 के बाद यह किसी भी एक वर्ष में निवेश योजनाओं को आगे बढ़ाने का सबसे बड़ा मामला है। यह वर्ष 2021-22 में नई परियोजनाओं में जितना निवेश (791 प्रोजेक्ट- निवेश की राशि 1,96,445 करोड़ रुपये) किया गया उससे 79.5 फीसद ज्यादा है। किसी भी एक वर्ष में निवेश परियोजनाओं में इतनी बड़ी वृद्धि पिछले दो दशकों में नहीं देखने को मिली है। कुल 982 परियोजनाओं में 547 परियोजनाओं के लिए फंड घरेलू स्तर पर ही बैंकों व वित्तीय संस्थानों ने उपलब्ध कराये हैं, जबकि 393 परियोजनाओं के लिए फंड का इंतजाम बाहरी स्त्रोतों से किया गया है। शेष 42 परियोजनाओं के लिए पब्लिक आफर से पैसे जुटाए गए हैं। निवेश गतिविधियों के बढ़ने का यह रिकार्ड चालू वित्त वर्ष के दौरान टूट सकता है। इस बात का संकेत आरबीआइ के आकंलन रिपोर्ट में है जिसे पिछले गुरूवार को प्रकाशित किया गया है। यह कहता है कि भारतीय कंपनियों की क्षमता का इस्तेमाल, कर्ज की मांग में लगातार वृद्धि और कारोबारी समुदाय का बढ़ता भरोसा कुछ ऐसे कारण है जो संकेत देते हैं कि आने वाले समय में भी निवेश की रफ्तार बनी रहेगी।

## मालाबार युद्धाभ्यास की निगरानी में जुटीं 300 चीनी सैटेलाइट्स

### तीन हजार विमान भी भेजे; ड्रिल में भारत के साथ क्वाड के देश शामिल

**सिडनी/बीजिंग, एजेंसी।** क्वाड देशों के मेंबर भारत, जापान, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका के बीच इस वक्त मालाबार मिलिट्री एक्सरसाइज चल रही है। इस युद्धाभ्यास से चीन घबराया हुआ है। ऐसे में चीन ने अपनी सैकड़ों लोअर ऑर्बिट सैटेलाइट्स को ऑस्ट्रेलिया के ऊपर मालाबार एक्सरसाइज की निगरानी करने के लिए तैनात कर दिया है। कमर्शियल स्पेस डेटा के हवाले से बताया कि 22 जुलाई से 4 अगस्त तक चली टैलिस्मैन सेबर एक्सरसाइज और अब मालाबार एक्सरसाइज के दौरान लगातार ऑस्ट्रेलिया के पास लगातार निगरानी की। इस दौरान पूरा फोकस सिडनी पोर्ट के पास युद्धपोतों पर रखा गया। श्वह्रस् स्पेस सिस्टम

डिफेंस कंपनी के जेम्स बेनेट ने बताया कि ग्राउंड बेस्ड एक्टीविटी के लिए 300 सैटेलाइट और 3 हजार फ्लाइट्स के जरिए मालाबार एक्सरसाइज का सर्वे किया। इस दौरान ऑस्ट्रेलिया का डिफेंस डिपार्टमेंट चीन की निगरानी के दौरान अपने और बाकी देशों के वॉरशिप्स की जानकारी बचाने के लिए जरूरी कदम उठा रहा है। साथ ही चीन की सैटेलाइट्स पर भी लगातार नजर रखी जा रही है। चीन इससे पहले भी मालाबार एक्सरसाइज की निगरानी कर चुका है। 2007 में उसने हिन्द महासागर में युद्धाभ्यास पर नजर रखने के लिए एक स्पाई शिप भेजी थी। इसके बाद 2014 में भी बंगाल की खाड़ी में ऐसा ही एक जहाज भेजा गया था। इस साल मालाबार एक्सरसाइज में भारत की तरफ से आईएनएस कोलकाता और सह्याद्री को भेजा गया है। मालाबार युद्धाभ्यास 11 अगस्त से शुरू हुआ है, जो 21 अगस्त तक चलने वाला है। यह एक्सरसाइज दो फेज में हो रही है।

## रिटेन में बच्चों की कातिल नर्स के खिलाफ भारतवंशी गवाह

**लंदन, एजेंसी।** ब्रिटेन में भारतीय मूल के डॉक्टर ने दावा किया है कि जब उसने नवजात बच्चों को जान से मारने वाली नर्स लूसी लेटबी के बारे में जानकारी दी तो अस्पताल ने उससे माफी मंगवाई थी। द्धञ्जङ्क न्यूज की रिपोर्ट के मुताबिक डॉ. रवि जयराम काउंटेस के चेस्टर अस्पताल में काम करते थे। जहां से एक नर्स के सात नवजात बच्चों को मारने का मामला सामने आया है।

डॉक्टर जयराम उन लोगों में शामिल हैं जिनकी मदद से ब्रिटिश अदालत ने शुक्रवार को एक नर्स को सात नवजात बच्चों की हत्या का दोषी ठहराया। सोमवार को उसे सजा सुनाई जाएगी। जयराम ने फैसले के बाद आईटीवी न्यूज से एक इंटरव्यू में कहा- मैं मानता हूं कि समय पर कार्रवाई की गई होती तो चार या पांच बच्चे आज जिंदा होते और स्कूल जा रहे होते। अस्पताल के एडमिनिस्ट्रेशन के साथ हुई एक बैठक का हवाला देते हुए द्धञ्जङ्क ने बताया है कि डॉक्टर्स को लूसी से माफी मंगवाई गई। अस्पताल के चीफ एग्जीक्यूटिव टोनी चेंबर्स ने 2017 में कहा था- अगर इस मामले में किसी ने उनकी बातें नहीं मानीं तो नतीजा भुगतना होगा।

वहीं जब डॉक्टर्स ने पूरे मामले की जानकारी पुलिस को देने को कहा तो उन्हें ऐसा करने से रोक दिया गया।

पुलिस को पहला बच्चा मरने के 2 साल बाद इसकी जानकारी दी गई। शुक्रवार को ब्रिटेन की एक नर्स को 7 नवजात बच्चों की हत्या करने और 6 बच्चों की हत्या करने की कोशिश करने का दोषी पाया गया है। क्राउन प्रॉसिक्यूशन सर्विस ने शुक्रवार को कहा कि नर्स को सोमवार (21 अगस्त) को मैनचेस्टर क्राउन कोर्ट में सजा सुनाई जाएगी। दोषी पाई गई नर्स लूसी लेटबी 33 साल की है। उस पर पिछले साल अक्टूबर से मुकदमा चल रहा है।

## राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे के आने के बाद महंगाई में राहत

**कोलंबो, एजेंसी।** श्रीलंका में सबसे बड़े आर्थिक संकट के बाद जनता ने बीते साल विद्रोह कर राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे को सत्ता से हटने को मजबूर कर दिया। सत्ता से हटने वाली महिंदा राजपक्षे की पार्टी श्रीलंका पोदुजना पेरामुना (एसएलपीपी) के समर्थन से रानिल विक्रमसिंघे राष्ट्रपति बने।

उन्होंने देश की उम्मीदें पूरी करने की दिशा में काम भी किया। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के साथ एक समझौता किया, महंगाई घटाई, भारत और अमेरिका के साथ श्रीलंका के रिश्ते को सामान्य बनाया। भारत के साथ संबंधों में सुधार हुआ। देश में लोकप्रिय बने विक्रमसिंघे

इसका दूसरा पहलू यह है कि श्रीलंका में चीन का दखल कम हुआ है। इससे ड्रैगन काफी परेशान है। इन घटनाक्रमों ने विक्रमसिंघे को देश में बड़े वर्ग के बीच लोकप्रिय बना दिया है। वहीं, राजपक्षे की विक्रमसिंघे पर वैसी पकड़ कमजोर हो गई, जैसा वह इस सरकार को रिमोट से चलाना चाहते थे।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि अगर विक्रमसिंघे सचेत रहकर सरकार नहीं चलाते हैं तो राजपक्षे बंधु बदले की सियासत के साथ वापसी कर सकते हैं। अटॉर्नी-एट-लॉ और संघर्ष समाधान में विशेषज्ञ इंडिका परेरा ने कहा, 'पिछले वर्ष से राजपक्षे परिवार और उनके प्रति वफादार अपनी जमीन फिर हासिल करने में लगे हुए हैं।

राजपक्षे के समर्थक भी बढ़ रहे

हाल के हफ्तों में राजपक्षे और उनका समर्थन करने वालों की संख्या बढ़ी है।' राजपक्षे श्रीलंका में सिंहली-बौद्ध राष्ट्रवादी प्रवृत्ति का नेतृत्व करते हैं। अगर राष्ट्रपति रानिल सचेत नहीं रहे, तो राजपक्षे अगले संसदीय चुनाव तक फिर खड़े हो सकते हैं। वह रानिल भारतीयों के काफी करीब आ गए हैं। इससे न केवल सिंहली बौद्ध, बल्कि चीन भी परेशान है।

भारत के साथ विक्रमसिंघे के बढ़ते संबंधों से चीन खुश नहीं है। वैसे भी ड्रैगन विक्रमसिंघे और राजपक्षे के गठबंधन से खफा है। ऐसा इसलिए क्योंकि इसमें ऐतिहासिक समानताएं हैं। 2015 में श्रीलंका के मतदाताओं ने राष्ट्रपति और आम चुनावों के दौरान राजपक्षे को दो बार खारिज कर दिया।

राष्ट्रपति मैत्रीपाला सिरिसेना की सरकार के अव्यवस्थित शासन और रानिल विक्रमसिंघे, जो 2015-19 सरकार के प्रधानमंत्री थे, उनके कुछ अति-उदारवादी रुख और सिंहली-बौद्धों के राजपक्षे के समर्थन में उतरने से बाजी पलट गई। उन्होंने कहा, 2005 में सत्ता में आने के बाद, खासतौर पर 2009 में लिट्टे के खिलाफ युद्ध जीतने के बाद महिंदा राजपक्षे सिंहली-बौद्धों के प्रतिनिधि बनने में सफल रहे। हालांकि महिंदा की लोकप्रियता श्रीलंकाई राजनेताओं के बीच अद्वितीय है। राजपक्षे परिवार के अन्य सदस्य न तो महिंदा जैसे करिश्माई हैं और न ही लोकप्रिय। परेरा ने कहा कि यूएनपी श्रीलंका में उदार-पूंजीवादी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। वह अक्सर सिंहली-बौद्ध बहुल समुदाय की चिंताओं को नजरअंदाज करती है, क्योंकि वे जातीय अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व करने वाले राजनीतिक दलों की मदद पर निर्भर हैं। भारत के भी करीबी रहे हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129